पुस्तकों के आरम्भ की कहानियाँ

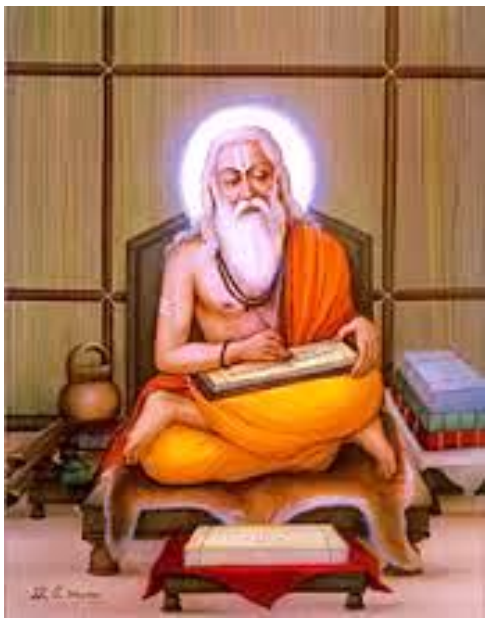

चयन सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Pustkon Ke Aarambh Ki Kahaniyan (Beginnings of Books)
Cover Page picture : Maharshi Ved Vyaas Jee
Publoshed Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

इतिहास सीरीज़ 5

पुस्तकों के आरम्भ की कहानियॉ 7

1 रामायण 9

2 महाभारत 27

3 गीता 39

4 श्री मद्भागवत पुराण 48

5 बृहत् कथा 51

6 भतृहरि के तीन शतक 61

7 सूर्य शतक चंडी शतक और भक्तिमार स्तोत्र 66

लोक कथाओं की पुस्तकों की मध्यकालीन शैली 75

8 पंचतन्त्र 77

9 कथा सरित् सागर 81

10 विक्रम बेताल की कथाऐं 83

11 अरेबियन नाइट्स 107

12 शुक सप्तति 117

13 चहार दरवेश 125

14 इल डैकामिरोन 148

15 स्ट्रापरोला की रातें 149

16 इल पैन्टामिरोन 159

इतिहास सीरीज़

प्रारम्भ में हमने एक सीरीज़ प्रारम्भ की थी "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिसके अन्दर हमने संसार के कई देशों की लोक कथाऐं और दंत कथाऐं प्रकाशित की थीं। ऐसा करते समय देखा गया कि एक तरह की कहानी कई देशों में कही जा रही है तो एक और सीरीज़ बनायी गयी "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कहानियॉ शामिल की गयी थीं जिनकी तरह की कहानियॉ और दूसरे देशों में भी उपलब्ध थीं। इस सीरीज़ में **20** से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। इसके बाद लोक कथाओं की कुछ क्लासिक पुस्तकों का भी अनुवाद किया गया। इनकी संख्या भी **30** से ऊपर पहुॅच गयी।

अब यह एक नयी सीरीज़ प्रारम्भ की जा रही है "इतिहास" नाम की सीरीज़। यह बहुत ही मजेदार सीरीज़ है। इस पुस्तक में दी गयी कहानियॉ लोक कथाऐं नहीं हैं और न ही कहानियॉ हैं बल्कि सच्ची घटनाऐं हैं। इतिहास हमारे उस आधुनिक जीवन शैली की नींव डालता है जिस पर आज हम खड़े हुए हैं और जिस पर हमारा भविष्य बनता है। इतिहास हमारी पृथ्वी का भूगोल बनाता है। इतिहास हमारा समाज बनाता है। इतिहास हमारी भाषा बनाता है। इतिहास हमारी सभ्यता और संस्कृति बनाता है।

पर यह पुस्तकें इतिहास की भी नहीं है क्योंकि इसमें ऐसी एतिहासिक घटनाऐं भी नहीं दी गयीं हैं जो आपको इतिहास की पुस्तकों में मिलें। यहॉ केवल वही विषय सामग्री दी गयी है जो इधर उधर मिलनी कठिन है या नहीं भी मिल सकती है।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब पुस्तकें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो इसलिये ये कहानियॉ यहॉ सरल बोलचाल की हिन्दी भाषा में लिखी गयी है। कहीं कहीं विदेशी विषय सामग्री भी है तो उनमें उनके चरित्रों और स्थानों के नाम सही उच्चारण जानने के लिये अंग्रेजी में फुतनोट्स में दिये गये हैं। इसके अलावा भी बहुत सारे शब्द भारतीयों के लिये नये होंगे वे भी चित्रों द्वारा समझाये गये हैं।

ये सब पुस्तकें "इतिहास सीरीज़ं" के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में आप सबके ज्ञान के घेरे को बढ़ायेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा। इनको यहॉ इनके प्रकाशित होने के समय के अनुसार दिया जा रहा है।

सुषमा गुप्ता
2022

पुस्तकों के आरम्भ की कहानियॉ

हमने "इतिहास सीरीज़" नाम की एक सीरीज़ आरम्भ की है जिसमें हम भिन्न भिन्न प्रकार के इतिहासों का वर्णन दे रहे हैं। यह ऐतिहासिक सूचना तुमको कहीं किसी एक इतिहास की पुस्तक में नहीं मिलेगी। इन्हें ढूँढ ढूँढ कर एकत्रित कर के एक स्थान पर रखा गया है। इसकी पहली पुस्तक[1] में हमने एक "तेरह महीनों के अकेले देश" इथियोपिया के बारे में लिखा था। इसकी दूसरी पुस्तक[2] में हमने कुछ देश विदेश के राजा और कुछ और बड़े लोगों के जीवन की ऐसी व्यक्तिगत घटनाओं के बारे में लिखा था जो आम लोगों को मालूम नहीं हैं और जिन्होंने उन्होंने बड़ा ।

और अब यह है इस कड़ी की अगली पुस्तक। इस पुस्तक में हम कुछ बहुत लोकप्रिय पुस्तकों के आरम्भ का इतिहास दे रहे है कि वे कैसे आरम्भ हुईं। यहॉ हम उनके लिखने की बात नहीं करेंगे कि "वे क्यों लिखी गयीं" क्योंकि लिखना तो एक ऐसी प्रकिया है जिसके द्वारा किसी विषय सामग्री को सुरक्षित किया जाता है। यहॉ केवल उनकी रचना की बात हो रही है कि वे रची ही क्यों गयीं। उनके रचने का कारण ही क्या था।

पिछली पुस्तकों की तरह से क्योंकि यह पुस्तक भी इतिहास की नहीं है इसलिये इसमें भी ऐतिहासिक घटनाऐं नहीं दी गयीं हैं बल्कि कुछ ऐसी घटनाऐं दी गयी हैं जिन्होंने इन बड़ी बड़ी पुस्तकों को जन्म दिया या फिर उन घटनाओं को जन्म दिया जिनकी वजह से वे रची गयीं। और जिन घटनाओं को शायद बहुत सारे लोग नहीं जानते।

इस प्रकार इस पुस्तक में दी गयी कहानियॉ न तो लोक कथाऐं हीं हैं और न ही संसार के देशों में कही गयी कहानियॉ हैं बल्कि कुछ पुस्तकों के आरम्भ होने का इतिहास है। ये कुछ ऐसी ऐतिहासिक कथाऐं हैं जो बच्चों के ज्ञान की सीमा को बढ़ायेंगी। इसमें केवल एक पुस्तक गीता को छोड़ कर शेष सामान्यतया सब पुस्तकों में कहानियों का जाल बिछा हुआ है। इन सब पुस्तकों में केवल एक गीता ही कहानियों की पुस्तक नहीं हैं पर उसके लिखने की वजह जरूर है। इसी लिये उसको यहॉ शामिल कर लिया गया है और उसकी वजह भी यहॉ बतायी गयी है कि वह क्यों कही गयी या क्यों लिखी गयी।

हॉ रामायण, महाभारत और भागवत पुराण में सब धार्मिक और भारत के बहुत पुराने इतिहास की कहानियॉ हैं। कहते हैं कि जो कहानी महाभारत में नहीं है वह कहानी कहीं नहीं है।

हमें पूरा विश्वास है कि ऐतिहासिक कहानियों की यह पुस्तक तुम सबका मनोरंजन तो करेगी है साथ में नयी जानकारी के साथ साथ तुम सबके ज्ञान को भी बढ़ायेगी। यह तुम्हें उन पुस्तकों का इतिहास बतायेगी जिनको तुम लोग अक्सर पढ़ते तो हो पर यह नहीं जानते कि वे क्यों लिखी गयीं।

इन्हें पढ़ो और अपना ज्ञान बढ़ाने के साथ साथ इनसे अपना मनोरंजन भी करो।

---

[1] "Lone Country of Thirteen Months" was about a country of Africa – Ethiopia. They are of over 22 people.

[2] "Our Great People" was about the lessknown incidents of some great people.

1 रामायण[3]

ऐतिहासिक कहानियों की इस पुस्तक का आरम्भ हम भारत के आदि कवि द्वारा लिखे गये आदि काव्य से करते हैं। आदि कवि माने पहले कवि और आदि काव्य माने पहली कविता या पद्य।

भारत के आदि कवि हैं महर्षि वाल्मीकि जी और आदि काव्य है उनका लिखा हुआ श्री वाल्मीकि रामायण। हालॉकि रामायण तो बहुत सारी हैं और कई भाषाओं में हैं पर इनकी अपनी रामायण भारत की मूल भाषा संस्कृत में है।

बच्चो तुमने श्रीराम का नाम तो सुना ही होगा। बहुत सारे हिन्दू लोग राम नाम का जाप करते हैं। कुछ लोग जब एक दूसरे से मिलते हैं तो "जय श्रीराम" या "जय राम जी की" बोलते हैं। उन्हीं श्रीराम की कहानी इस रामायण में लिखी है।

क्या तुमने रामायण सुनी है या पढ़ी है? अगर पढ़ी है तो बहुत अच्छा है और अगर नहीं पढ़ी है तो जरूर पढ़ना। यह एक बहुत ही अच्छी पुस्तक है और उत्तर प्रदेश के घर घर में तो अक्सर ही पढ़ी जाती है। कुछ लोग इसका रोज पाठ भी करते हैं।

यह हमको इस दुनियॉ में रहना सिखाती है। हमको हमारे जीवन के मूल्य बनाना सिखाती है और परिवार और समाज में मित्रता और

[3] Raamaayan – written by Maharshi Vaalmeeki Ji; and Raam Charit Maanas – written by Tulsidas Jee

सामंजस्य का भाव बना कर रखना सिखाती है। एक दूसरे के लिये हमारे क्या कर्तव्य हैं यह सिखाती है।

तुम लोग सोच रहे होगे ऐसी उपयोगी धार्मिक किताब के आरम्भ की भी कोई कहानी हो सकती है क्या? पर हॉ है इसके आरम्भ की भी कहानी है और एक नहीं कई कहानियॉ हैं।

रामायण सबसे पहले महर्षि वाल्मीकि जी ने संस्कृत में लिखी थी। इससे यह साबित होता है कि यह ग्रन्थ संस्कृत की श्लोक शैली में ही सबसे पहले लिखा गया था।

इसके बाद श्रीराम के बारे में कई रामायण भारत की ही नहीं बल्कि दूसरे देशों की कई भाषाओं में भी लिखी गयीं। उत्तर प्रदेश में श्री तुलसीदास जी की अवधी भाषा में लिखी हुई श्री रामचरित मानस बहुत लोकप्रिय है और यही घर घर में पढ़ी और सुनी जाती है। रामायण क्यों हुई इसकी कहानी हमने तुलसीदास जी की लिखी हुई इसी श्री रामचरित मानस से ली है।

रामायण में दो मुख्य चरित्र हैं एक तो भगवान श्रीराम का और दूसरा राक्षसराज रावण का। दोनों का जन्म ही क्यों हुआ यही रामायण की आरम्भ की वजह है।

इस बारे में दोनों की अलग अलग कहानियॉ हैं। उन दोनों की कहानियॉ तो कई हैं पर हम यहॉ पर तुम्हारे लिये उन दोनों की सबसे ज़्यादा लोकप्रिय एक एक कहानी दे रहे हैं।

रावण और कुम्भकर्ण कौन थे?

रावण और कुम्भकर्ण कौन थे? तुम कहोगे कि वे तो राक्षस थे। तुमने ठीक कहा कि वे राक्षस थे पर वे सचमुच में कौन थे।

तो इसका आरम्भ बताने के लिये हम तुम्हें दुनियॉ के जन्म के समय तक ले चलते हैं। भगवान विष्णु की नाभि से ब्रह्मा जी का जन्म हुआ। जन्म लेते ही ब्रह्मा जी ने इधर उधर देखा तो उनको दो अक्षर सुनायी पड़े "त" और "प"। उन्होंने उन दोनों अक्षरों को मिला कर "तप" शब्द बनाया और तप करने में लग गये।

इस तप के फलस्वरूप उनके सबसे पहले चार मानस पुत्र[4] हुए जिनके नाम थे सनक, सनन्दन, सनत्कुमार और सनातन। ये सब सनकादि मुनि के नाम से जाने जाते हैं। इनको पैदा करने के बाद ब्रह्मा जी ने इनसे कहा कि वे संसार में जायें और सन्तानें पैदा करें ताकि उनका संसार बढ़े।

सनकादि मुनि ने कहा कि क्योंकि हम आपके तप से पैदा हुए हैं इसलिये हम केवल तप ही करेंगे और वे बजाय संसार में जाने के तप करने चले गये। अब वे तप करते थे और सब जगह घूमते थे।

उनकी उम्र **12** साल की थी और वे हमेशा **12** साल के बालक ही लगते थे। उनकी सूरत देख कर कोई उनकी उम्र नहीं बता सकता था।

[4] Maanas Putra means "Brain Children" – means born just by imagination

विष्णु जी अपने वैकुंठ लोक में रहते थे। उनके दो द्वारपाल थे जिनका नाम था जय और विजय।

एक बार सनकादि मुनि भगवान विष्णु से मिलने वैकुंठ लोक गये और वहॉ जा कर उनके द्वारपालों से कहा कि उनको भगवान विष्णु से मिलना है।

उनके द्वार पर खड़े दोनों द्वारपालों ने देखा कि **10–12** साल के चार बच्चे वैकुंठ के द्वार पर खड़े हैं और भगवान से मिलने की आज्ञा चाहते हैं। उन्होंने उनको पहचाना नहीं और उनको भगवान से मिलवाने से मना कर दिया।

यह सुन कर सनकादि मुनि को गुस्सा आ गया और उनकी उनसे कुछ कहा सुनी हो गयी। इस कहा सुनी की आवाज भगवान विष्णु के कानों में पड़ी तो वह यह देखने के लिये बाहर आये कि मामला क्या है।

उस समय तक सनकादि मुनि ने उन दोनों को हमेशा के लिये राक्षस बनने का शाप दे दिया था और वे आगे कुछ और कहने ही जा रहे थे कि भगवान विष्णु को आते देख कर वे रुक गये।

भगवान विष्णु ने उनसे बड़ी नम्रता से पूछा — "हे मुनि, क्या बात है। आप इतने गुस्सा क्यों हैं। क्या मुझसे कोई अपराध हो गया है?"

तब सनकादि मुनि ने उनको सब हाल बताया और बोले "अब इनको क्या दंड दिया जाये यह आप ही निश्चित करें।" और यह कह कर वे वहॉ से चले गये।

मुनियों के जाते ही दोनों द्वारपाल भगवान विष्णु के चरणों पर गिर पड़े और अपने किये की क्षमा मॉगने लगे।

भगवान विष्णु ने उनसे कहा कि मुनियों का वचन झूठा तो नहीं हो सकता इसलिये तुम दोनों को राक्षस योनि में जन्म तो लेना ही पड़ेगा। पर हॉ मैं उसको तुम लोगों के लिये थोड़ा सरल बना सकता हूॅ।

पहली बात जैसा कि मुनि ने कहा है कि तुम लोग हमेशा के लिये राक्षस हो जाओ तो तुम हमेशा हमेशा के लिये राक्षस नहीं बनोगे। इसके लिये मैं तुमको दो विकल्प देता हूॅ।

एक तो यह कि तुम सात जन्म तक साधारण राक्षस बनो और फिर सात जन्म राक्षस योनि में बिता कर अपने इस पुराने रूप को प्राप्त करो।

या फिर तुम तीन जन्म तक राक्षस योनि में जन्म लो और बहुत कठोर राक्षस बनो। फिर तीन जन्म राक्षस योनि में जन्म लेने पर उन तीनों जन्मों में मेरे हाथ से मारे जाने पर इस शाप से मुक्ति पा जाओ। पर इन तीनों जन्मों में तुम लोगों को बहुत ही भयानक राक्षस बनना पड़ेगा।"

दोनों द्वारपाल तुरन्त बोले — "भगवन हम बहुत समय तक आपसे दूर नहीं रह सकते इस लिये हम सात जन्म तक राक्षस योनि में जन्म लेने की बजाय तीन जन्म तक राक्षस योनि में जन्म लेना और फिर आपके हाथ से मरना अधिक पसन्द करेंगे।"

वे आगे बोले — "पर भगवन हमारी एक प्रार्थना और है।"

"वह क्या।"

"राक्षस योनि तो बहुत खराब योनि है। उसमें जन्म ले कर तो हम अपना सारा विवेक और ज्ञान भूल जायेंगे। हम अपने उन जन्मों में भी उस ज्ञान को याद रखना चाहेंगे।"

भगवान विष्णु ने कहा — "ठीक है ऐसा ही होगा।"

इसके बाद वे दोनों द्वारपाल तीन जन्मों तक राक्षस योनि में पैदा हुए। पहली बार वे दोनों सत युग में दो भाइयों हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप के रूप में जन्मे जिनमें वे दोनों इतने भयानक राक्षस बने कि भगवान को उनको मारने के लिये दो अवतार लेने पड़े। वे दोनों भगवान के वराह अवतार और नृसिंह अवतार द्वारा मारे गये।

दूसरी बार वे त्रेता युग में दो भाइयों रावण और कुम्भकर्ण के रूप में पैदा हुए और भगवान के श्रीराम अवतार के द्वारा मारे गये। इनका यह जन्म ही रामायण का आधार है।

तीसरी बार वे द्वापर युग में शिशुपाल और दंतवक्र[5] के रूप में पैदा हुए और भगवान के श्रीकृष्ण अवतार के द्वारा मारे गये।

हर बार इनके राक्षस होने की भयंकरता इनके पहले जन्म से कम होती गयी। इसका सबूत यह है कि इनके पहले जन्म में इनको मारने के लिये भगवान विष्णु को दो अलग अलग अवतार लेने पड़े।

इनके दूसरे जन्म में भगवान विष्णु ने केवल श्रीराम का अवतार ले कर ही इनको मार दिया था। पर इनके तीसरे जन्म में ये इतने महत्वपूर्ण नहीं थे कि भगवान विष्णु को केवल इन्हीं के लिये अवतार लेना पड़े। श्रीकृष्ण ने अपने जीवनकाल में और भी कितने ही बड़े बड़े काम किये।

उन्होंने तो किसी और काम के लिये अवतार लिया था बस साथ में इन दोनों को भी मार दिया था। बहुत से लोग तो यह जानते भी नहीं कि वे राक्षस थे भी या नहीं और अगर राक्षस थे भी तो कौन थे। तो यह था रावण और कुम्भकरण के जन्म का कारण।

[5] Shishupaal was the son of Damghosh (King of Chedi lineage) and Shrutshravaa (Vasudev's sister). Krishna killed him by His Chakra in the Raajsooya Yagya of Yudhishthir. Dantavakra was also born in Chedi lineage and was the King of Karoosh country. He was also killed by Krishn in a dual Gadaa fight. He was the son of Vriddhasharmaa and Shrutadevaa (Vasudev's sister).

श्रीराम जन्म का कारण

श्रीराम जन्म का एक कारण तो यही था कि भगवान विष्णु को अपने दोनों द्वारपालों को राक्षस योनि से मुक्ति दिलानी थी पर इनके जन्म का एक कारण और भी है।

यह कहानी हमें यह भी बताती ही कि श्रीराम का जीवन ऐसा क्यों बीता जैसा कि उन्होंने बिताया। वह तो एक राजकुमार थे और वह राजकुमार बने रह कर भी रावण और कुम्भकर्ण को मार सकते थे फिर उनको ऐसा जीवन क्यों बिताना पड़ा जैसा उन्होंने बिताया – सन्यासी की तरह, वन में चौदह साल तक।

यह एक बहुत ही मजेदार कहानी है तो लो पढ़ो यह मजेदार कहानी यहॉ...

जब ब्रह्मा जी के पहले चारों पुत्र यानी सनकादि मुनि तप करने चले गये तो उन्होंने दस मानस पुत्र और पैदा किये – मरीचि, भृगु, अंगिरा, पुलह, पुलस्त्य, वशिष्ठ, अत्रि, कतु, दक्ष और नारद।

नारद जी उनके इन दसों पुत्रों में सबसे छोटे थे। जब ब्रह्मा जी ने इन सबसे इस संसार को आगे चलाने के लिये सन्तान पैदा करने लिये कहा तो इनके ये सब पुत्र इस संसार को बढ़ाने में लग गये।

पर इनमें से ब्रह्मा जी के दसवें पुत्र नारद जी न तो तप करने गये और न ही उन्होंने खुद कोई सन्तान पैदा की बल्कि दूसरे लोगों के बच्चों को भी उनके इस रास्ते से भटका कर तप करने के लिये भेज दिया।

इससे गुस्सा हो कर उन बच्चों के पिता ने इनको शाप दे दिया कि ये कभी अपना घर नहीं बसा पायेंगे और घर न होने की वजह से ये कहीं एक जगह टिक कर भी नहीं बैठ पायेंगे।

सो न तो उनका घर ही बसा और न ही वह एक किसी जगह टिक कर ही बैठ पाते हैं। बस वह तो सब लोकों में घूमते ही रहते हैं।

एक बार नारद जी इधर उधर घूम रहे थे कि एक सुन्दर सी जगह देख कर उनको भगवान का ध्यान करने का मन किया। बस वह वहीं समाधि लगा कर बैठ गये और भगवान के ध्यान में मग्न हो गये।

देवताओं के राजा इन्द्र ने देखा कि नारद जी तो ध्यान में मग्न हैं तो उनको लगा कि वह शायद वह उनका इन्द्र लोक लेने के लिये यह तपस्या कर रहे हैं। उन्होंने तुरन्त ही काम देव को उनकी तपस्या भंग करने के लिये भेजा पर वह उनकी तपस्या भंग न कर सका और वापस लौट आया।

जब नारद जी अपनी तपस्या से जागे तो उनको यह देख कर बहुत खुशी हुई कि काम देव उनका कुछ नहीं बिगाड़ सका। उनको यह देख कर बहुत घमंड हो गया कि मैंने तो काम देव को जीत लिया।

तपस्या ख़त्म कर के पहले तो नारद जी इन्द्र के दरबार में पहुँचे और वहाँ जा कर अपनी शान बघारी। उनकी बात सुन कर वहाँ बैठे सारे देवताओं ने उनकी बहुत बड़ाई की।

वहाँ से फिर वह कैलाश पर्वत चले गये और वहाँ जा कर शिव जी को यह घटना बतायी। शिव जी यह सुन कर मुस्कुराये और उनसे कहा — "यह घटना तुमने मुझे बतायी तो बतायी कोई बात नहीं पर किसी और को मत बताना और ख़ास कर के विष्णु को।"

"ठीक है" कह कर नारद जी वहाँ से चल कर ब्रह्मा जी के दरबार में आये और शिव जी की चेतावनी के बाद भी उन्होंने यह घटना उनकी सभा में बतायी। ब्रह्मा जी ने भी उनकी बहुत तारीफ की और उनको वही सलाह दी जो शिव जी ने उनको दी थी।

पर नारद जी का घमंड इतना ज़्यादा था कि शिव जी और ब्रह्मा जी के मना करने पर भी वह उस घटना को बताने के लिये अब विष्णु जी के पास चल दिये।

विष्णु जी ने भी उनकी यह घटना सुन कर उनकी बहुत तारीफ की पर सोचा कि मेरा भक्त तो घमंड में फँस गया है। यह ठीक नहीं है। मुझको अपने भक्त की सहायता करनी चाहिये।

सो घटना सुनाने के बाद जब नारद जी विष्णु जी के पास से चले गये तो उन्होंने नारद जी का घमंड दूर करने के लिये अपनी माया फैलायी।

जिस रास्ते से नारद जी अपने घमंड में फूले चले जा रहे थे उसी रास्ते पर उनको एक बहुत बड़ा शहर दिखायी दिया। उसके देख कर उन्होंने सोचा "यह शहर तो यहाँ मैंने पहले कभी देखा नहीं यह शहर कहाँ से आ गया। चलो चल कर देखता हूँ।" और वह उस शहर में अन्दर चले गये।

अन्दर जा कर उन्होंने देखा तो देखा कि वह तो सारा शहर बहुत सुन्दर सुन्दर लोगों से भरा हुआ है और वहाँ तो बहुत चहल पहल हो रही है। सारे बाजारों में लोग बड़े सज धज कर घूम रहे हैं। पूछने पर पता चला कि इस शहर के राजा की बेटी का स्वयंवर[6] है।

वह वहाँ के राजा के पास गये। उस शहर के राजा का नाम था शीलनिधि। जब वह राजा के पास गये तो राजा ने उनको देवर्षि नारद जाना और उनका बड़े प्रेम और आदर से स्वागत किया।

बड़े ऋषि जान कर राजा ने अपनी बेटी को बुलाया और उसको ऋषि के चरणों में डाल कर कहा — "देवर्षि यह मेरी बेटी है। आप इसके भविष्य के बारे में मुझे कुछ बताने की कृपा करें कि इसको कैसा पति मिलेगा।"

[6] Swayamvar – Swayam means "Self" and Var means "Husband". Thus Swayamvar means "to choose a husband herself". In olden days kings used to organize Swayamvar for their daughters to marry them to their desired husbands. On a special day all invited and uninvited kings and princes came there and the princess was introduced to them formally carrying a garland. The princess put the garland in anyone's neck to whom she wanted to be her husband.

नारद जी ने उस कन्या को देखा तो वह तो उसको देख कर अपनी सुधबुध खो बैठे। जब वे थोड़े होश में आये तब उन्होंने उसका हाथ देखा। उसका हाथ देख कर तो वे और भी ज़्यादा परेशान हो गये।

उसके हाथ में तो एक ऐसे पति की लकीर पड़ी थी जो तीनों लोकों का राजा था। पर क्योंकि नारद जी अब खुद उससे शादी करना चाहते थे सो वह सच को छिपा कर राजा से बोले — "हे राजन। तुम्हारी कन्या बहुत भाग्यवान है। इसको बहुत अच्छा पति मिलेगा। तुम बिल्कुल चिन्ता न करो।"

और यह कह कर वह उस कन्या का ध्यान करते हुए वहॉ से चल दिये। रास्ते में वह यही सोचते चले आ रहे थे कि वह ऐसा क्या करें ताकि उस राजकुमारी की शादी उनसे हो जाये।

तभी उनको ध्यान आया कि विष्णु जी ही तो उनके सबसे बड़े मित्र हैं इस समय उनको अपनी सहायता के लिये उन्हीं के पास जाना चाहिये। वही एक हैं जो इस समय उनके काम आ सकते हैं सो वह फिर से विष्णु जी के पास चल दिये।

वहॉ पहुॅच कर वह उनसे बोले — "प्रभु आज मैं आपसे कुछ मॉगने आया हूॅ।"

विष्णु जी नारद जी पर अपनी माया का प्रभाव देख कर बहुत प्रसन्न हुए। वे बोले — "क्या नारद जी। बताइये आप क्या मॉगना चाहते हैं?"

नारद जी बोले — "भगवन मुझे आप अपने जैसा रूप दे दीजिये।"

विष्णु जी बोले — "नारद जी यह तो मुझे नहीं मालूम कि आप मेरे जैसे रूप का क्या करेंगे पर जब आपने माँगा है तो बस मैंने आपको दिया।"

नारद जी यह सुन कर बहुत खुश हुए और भगवान से उन जैसा रूप पा कर राजकुमारी के स्वयंवर की तरफ चल दिये। इस रूप को पाने के बाद अब नारद जी को पूरा विश्वास था कि राजकुमारी अपनी जयमाला अब उन्हीं के गले में डालेगी।

राजकुमारी के स्वयंवर में बहुत सारे राजा और राजकुमार आये हुए थे। नारद जी भी वहाँ एक ऐसी जगह जा कर बैठ गये जहाँ से जब राजकुमारी अपनी जयमाला ले कर आती तो वह जल्दी ही उनको देख लेती।

कुछ देर में विष्णु जी भी लक्ष्मी जी के साथ वहाँ आये और आ कर अपने अपने आसन पर आ कर बैठ गये।

और फिर कुछ देर में राजकुमारी भी जयमाला लिये हुए स्वयंवर सभा में आयी। वह अपनी जयमाला लिये हुए राजाओं और राजकुमारों को देखती हुई चली आ रही थी।

नारद जी बहुत बेचैन थे। वह सोच रहे थे कि विष्णु जी तो बहुत सुन्दर हैं और उन्होंने मुझे अपना रूप दिया है तो मैं भी उन्हीं

के जैसा सुन्दर हूँ तो अब तो राजकुमारी को मेरे गले में माला डालनी ही चाहिये।

यह सोच सोच कर नारद जी बार बार अपना मुँह उठा उठा कर राजकुमारी की तरफ देखे जा रहे थे पर राजकुमारी तो उनकी तरफ देख ही नहीं रही थी।

चलते चलते वह उधर आयी भी पर नारद जी की तरफ बिना देखे ही आगे बढ़ गयी। आगे जा कर उसने विष्णु जी के गले में अपनी जयमाला डाल दी तो यह देख कर नारद जी को बड़ी निराशा हुई।

विष्णु जी की और उस राजकुमारी की शादी हो गयी और विष्णु जी उसको ले कर वहाँ से चल दिये। नारद जी बहुत गुस्सा थे।

उस स्वयंवर सभा में शिव जी के दो गण[7] भी बैठे हुए थे। वे नारद जी को तभी से बड़ी बारीकी से देख रहे थे जबसे वे वहाँ आये थे। जब विष्णु जी राजकुमारी को साथ ले कर वहाँ से चले गये तो उन्होंने देखा कि नारद जी तो बहुत गुस्सा हैं।

वे उनकी हँसी उड़ाते हुए उनसे हँस कर बोले — "ज़रा अपनी शक्ल तो जा कर देखिये ऋषिवर। क्या आप इस बन्दर जैसी शक्ल से राजकुमारी से शादी करने आये थे?"

[7] Shiv's Gan – Shiv's servants are known as "Gan". He has many Gan.

यह कहते ही उनको लगा कि उन्होंने नारद जी से यह कह कर बहुत बड़ी गलती कर दी। ऐसा न हो कि नारद जी उनको शाप दे दें सो वे जल्दी से वहॉ से भाग गये।

नारद जी ने उनको पहचान लिया कि वे शिव जी के गण थे। उस समय में शीशा तो होता नहीं था जो वह शीशे में अपना चेहरा देख लेते सो उन्होंने पानी में अपना चेहरा देखने का निश्चय किया।

जो कुछ उन गणों ने उनसे कहा उसकी सच्चाई को परखने के लिये वह एक तालाब के पास पहुॅचे और उसके पानी में अपने चेहरे की परछाईं देखी। तो उनका चेहरा तो सचमुच में ही बन्दर का था।

यह देख कर उन्होंने शिव जी के दोनों गणों को शाप दिया कि "तुमने एक ब्राह्मण की हॅसी उड़ायी है इसलिये तुम पृथ्वी पर जा कर राक्षस हो जाओ।" ये ही दोनों गण धरती पर रावण और कुम्भकर्ण के रूप में जन्मे।

इसके बाद नारद जी ने अपने दॉत किटकिटाये और फिर विष्णु जी के पास वैकुंठ लोक चल दिये। जब वह वैकुंठ लोक जा रहे थे तो रास्ते में ही उनको विष्णु जी मिल गये। उनके साथ लक्ष्मी जी और वह राजकुमारी जिसे वह अभी अभी शादी कर के लाये थे दोनों थीं।

बस नारद जी ने आव देखा न ताव और बरस पड़े विष्णु जी पर। नारद जी बोले — "तुमने मेरा चेहरा बन्दर का क्यों बनाया?

क्योंकि तुम्हारे सिर पर बड़ा कोई नहीं है इसलिये तुम जो चाहते हो वही करते फिरते हो।

समुद्र मन्थन के समय तुमने जहर शिव जी को पिला दिया और लक्ष्मी जी खुद ले लीं। पर आज तुम्हारा पाला किसी ठीक आदमी से पड़ा है। मैं तुम्हें बताता हूँ कि किसी के साथ ऐसा बर्ताव करने से क्या होता है।"

काफी बुरा भला कहने के बाद भी जब नारद जी को सन्तोष नहीं हुआ तो उन्होंने विष्णु जी को तीन शाप दिये — "मैं तुमको शाप देता हूँ कि तुम धरती पर मनुष्य के रूप में जन्म लो।

दूसरे तुम भी अपनी पत्नी के विरह में ऐसे ही तड़पो जैसे इस समय मैं राजकुमारी के विरह में तड़प रहा हूँ। तीसरे क्योंकि तुमने मुझे बन्दर का रूप दिया है इसलिये तुम्हारी पत्नी को ढूँढने में बन्दर ही तुम्हारी सहायता करेंगे।"

विष्णु जी ने सिर झुका कर नारद जी के तीनों शाप स्वीकार किये और फिर अपनी माया समेट ली। जैसे ही उन्होंने अपनी माया समेटी तो न तो वहाँ लक्ष्मी जी थीं न वहाँ वह राजकुमारी थी। बस विष्णु जी और नारद जी ही खड़े थे।

नारद जी अपने पुराने रूप में आ गये थे और उनके दिमाग पर पड़ा परदा भी हट गया था। वह विष्णु जी के पैरों पर गिर पड़े और उनसे क्षमा माँगने लगे —

"भगवन मुझे क्षमा करें। यह मैंने क्या किया कि मैंने आपको इतने सारे शाप दे दिये। यह मेरी कितनी बड़ी भूल थी। मुझसे कितना बड़ा पाप हो गया। मेरे इस पाप का पायश्चित बताइये प्रभु।"

विष्णु जी बोले — "नारद तुम बिल्कुल चिन्ता न करो। यह सब तुमसे मैंने ही कराया है तुम्हारी इसमें कोई गलती नहीं है। तुम आनन्द करो।"

नारद जी बोले — "भगवन यह गलती तो मेरी ही है। मुझे इसका प्रायश्चित बतायें उसके बिना मेरे मन को शान्ति नहीं मिलेगी।"

विष्णु जी बोले — "अगर ऐसा है और तुम प्रायश्चित करना ही चाहते हो तो मेरे परम भक्त शिव के नाम का जप करो।"

यह कह कर विष्णु जी वैकुंठ लोक चले गये और नारद जी शिव जी के नाम का जप करने चले गये।

सो नारद जी के इन्हीं तीन शापों के कारण भगवान विष्णु को मनुष्य योनि में धरती पर जन्म लेना पड़ा। एक साल अपनी पत्नी सीता जी के विरह में परेशान होना पड़ा और फिर उनको ढूँढने में बन्दरों ने उनकी सहायता की।

इसी लिये उनको अपना जीवन उस तरह से जीना पड़ा जैसे कि उन्होंने जिया।

इस तरह यह रामायण इसी की कहानी है कि रावण और कुम्भकर्ण कौन थे। उनको मारने के लिये भगवान को क्यों आना पड़ा। भगवान श्रीराम बन कर आये भी तो उनको अपना जीवन इस तरह से क्यों बिताना पड़ा।

रामायण में भी बीच बीच में बहुत सारी कहानियॉ आती हैं पर इसकी मुख्य कहानी भगवान श्रीराम और राक्षसराज रावण की ही है।

2 महाभारत[8]

भारत का महाभारत एक दूसरा ऐसा महाकाव्य है जो केवल भारत का ही नहीं बल्कि संसार भर का सबसे बड़ा महाकाव्य है। पश्चिमी दुनियॉ में महाकवि होमर के दो महाकाव्य इलियड और ओडिसी[9] को मिला देने के बाद भी यह उससे दस गुना बड़ा महाकाव्य है।

यह भी बहुत पुराना लिखा हुआ है हालॉकि इसकी कोई एक तारीख नहीं है। इसकी आरम्भ की कहानी पढ़ने से पहले इसके बारे में कुछ जान लेना ज़्यादा ठीक रहेगा।

इसको महर्षि वेद व्यास जी ने रचा और गणेश जी ने अपने दॉत से लिखा। इसकी यह कहानी बहुत ही मशहूर और मजेदार है। हालॉकि यह कहानी इस सन्दर्भ में तो नहीं आती पर बहुत मजेदार है इसलिये पढ़ो।

जब व्यास जी इस महाकाव्य को लिखने लगे तो उन्होंने देखा कि उनकी यह रचना तो बहुत बड़ी है और इसे वह खुद अकेले नहीं लिख सकते तो वह ब्रह्मा जी के पास गये और उनको अपनी उलझन बतायी कि उनको कोई लिखने वाला चाहिये जो उनके इस ग्रन्थ को लिख सके।

---

[8] Mahabharat – an epic of the history of an Indian family of five generations lived in Dwaaapar Yug. The longest version of this epic goes up to 100,000 Shlok – about 1.8 million words in total. One Shlok is a two-line verse. It is roughly 10 times longer than Homer's Iliad and Odyssey combined.

[9] In Western world there are two epics – Iliad and Odyssey – both written by the great poet Homer of Greece (supposed to be sold there as a slave). He was blind.

ब्रह्मा जी कुछ सोच कर बोले — "मैं और किसी को तो जानता नहीं हॉ अगर गणेश जी इसे लिखने के लिये तैयार हो जायें तो... । तुम उनसे बात कर लो।"

सो व्यास जी गणेश जी के पास गये और उनसे अपना यह महाकाव्य लिखने की प्रार्थना की। गणेश जी ने कहा कि मैं आपका यह काव्य लिख तो दूँगा पर मेरी एक शर्त है।

व्यास जी ने पूछा "वह क्या?"

इस पर गणेश जी बोले — "एक बार जब मैं शुरू हो गया तो लिखते समय मैं रुकूँगा नहीं। अगर आप बीच में रुक गये तो मैं इसे बीच में छोड़ कर चला जाऊँगा।"

इस पर व्यास जी बोले कि "तो फिर मेरी भी एक शर्त है।"

"वह क्या?"

व्यास जी बोले — "आप बिना सोचे समझे कुछ नहीं लिखेंगे।"

और इन शर्तों पर महाभारत लिखने का काम शुरू हुआ। सरस्वती जी ने उन्हें कलम और न खत्म होने वाली स्याही की दवात दी। भू देवी ने उन्हें कागज दिया।

कहते हैं कि व्यास जी के श्लोक इतने कठिन होते थे कि जितनी देर में गणेश जी उनको समझ कर लिखते थे व्यास जी कई और नये श्लोकों की रचना कर लेते थे।

यह भी कहते हैं कि एक बार बीच में गणेश जी की कलम टूट गयी तो लिखने की जल्दी में उन्होंने अपना एक दाँत तोड़ा और जल्दी में उसी से लिखना शुरू कर दिया था। तभी से गणेश जी एकदंत हो गये थे।

खैर यह तो रही इस महाकाव्य के रचयिता और लेखक के बीच की बात। अब हम शुरू करते हैं इस महाकाव्य की आरम्भ की कहानी कि यह महाभारत हुई ही क्यों जिसे व्यास जी ने रचा और गणेश जी ने लिखा।

महाभारत एक परिवार की पाँच पीढ़ियों की कहानी है। राजा शान्तनु की – उनके दो बेटे चित्रांगद और विचित्रवीर्य की – विचित्रवीर्य के दो बेटे धृतराष्ट्र और पांडु की – धृतराष्ट्र और पांडु के पुत्रों **100** कौरवों और पाँच पांडवों की – और फिर पांडवों के वंशज परीक्षित की।

सो महाभारात की आरम्भ कैसे हुई?

बहुत पुराने समय में एक राजा थे जिनका नाम था महाभिष।[10] वह बहुत ही प्रतापी और तेजस्वी राजा थे। पहले जो राजा बहुत प्रतापी और तेजस्वी होते थे उनकी पहुँच स्वर्ग तक होती थी और देवता भी उनकी सहायता लिया करते थे। महाभिष ऐसे ही राजाओं में से एक थे।

[10] King Mahaabhish

एक बार राजा महाभिष इन्द्र लोक गये और वहॉ देव सभा में बैठे हुए अप्सराओं का नाच देख रहे थे। उसी समय ब्रह्मा जी भी अपनी बेटी गंगा के साथ वहॉ आये।

सब बैठे हुए अप्सराओं के नाच का आनन्द ले रहे थे कि पवन देव ने शरारत से गंगा का ऑचल उड़ा दिया। यह देख कर सब देवताओं ने अपनी अपनी ऑखें झुका लीं पर राजा महाभिष गंगा की ओर एकटक देखते ही रह गये और देखते ही रहे। गंगा भी उनकी तरफ देखती रहीं और देखती ही रह गयीं।

ब्रह्मा जी ने यह देखा तो यह उनको राजा महाभिष और अपनी बेटी गंगा दोनों की ढिठाई लगी। वह बहुत गुस्सा हुए और उन्होंने उन दोनों को शाप दिया कि वे दोनों ही धरती पर मनुष्य रूप में जन्म लें।

अब ब्रह्मा जी का शाप तो टाले नहीं टल सकता था सो दोनों ने धरती पर मनुष्य रूप में जन्म लिया राजा महाभिष ने राजा शान्तनु के रूप में और गंगा ने गंगा के रूप में।

महाभारत होने का कारण यहीं खत्म नहीं हो जाता। कुछ देर इन्द्र सभा में बैठने के बाद सब देवता अपने अपने लोकों को चले गये। ब्रह्मा जी भी अपनी बेटी गंगा को ले कर अपने लोक को चले गये। रास्ते में गंगा को आठ वसु[11] मिले। वे सब उदास उदास जा रहे थे।

[11] There are 33 gods in Hindu pantheon – 12 Aaditya, 11 Rudra, 8 Vasu and 2 Ashwinee Kumaar.

उनको उदास जाते देख कर गंगा ने उनसे पूछा कि वे इस तरह उदास क्यों थे। क्या वह उनकी कुछ सहायता कर सकती थी।

उनमें से एक वसु बोले — "मॉ हम सब वसुओं को महर्षि वशिष्ठ जी[12] ने धरती पर जन्म लेने का शाप दिया है। हम सब लोग इसी लिये दुखी और उदास हैं।

क्योंकि बात केवल धरती पर जन्म लेने की ही नहीं है बल्कि इसकी भी है कि हम वसु हैं। हम किससे जन्म लें और किसके घर में जन्म लें यह भी एक सोचने का विषय है।"

गंगा बोली — "मेरे पिता ने भी राजा महाभिष को और मुझे दोनों को धरती पर जन्म लेने का शाप दिया है। तो अगर आप लोगों को ऐतराज न हो तो मैं आप सब वसुओं की मॉ बन सकती हूॅ और आप सबको इस शाप से मुक्ति दिला सकती हूॅ।"

आठों वसु यह सुन कर बहुत खुश हुए और यह तय हो गया कि गंगा उन सब वसुओं की मॉ बनेगी और उनको इस शाप से मुक्ति दिलायेगी।

गंगा ने फिर पूछा — "पर आप सब लोगों को एक साथ शाप मिला ही क्यों।

इस पर वसुओं ने अपने शाप की कथा गंगा को कुछ इस तरह सुनायी। एक बार आठों वसु अपनी अपनी पत्नियों के साथ महर्षि

[12] Maharshi Vashishth Jee was one of the Maanas Putra (brain child) of Brahmaa Jee

वशिष्ठ जी के आश्रम[13] में गये। वशिष्ठ जी के पास कामधेनु[14] थी जो उनके आश्रम का रोज का काम करने में उनकी सहायता करती थी।

आठों वसुओं में से आठवें प्रभास नाम के वसु की पत्नी को वह गाय बहुत अच्छी लगी सो उसने अपने पति से कहा कि वह उस गाय को चुरा ले। अपनी पत्नी के कहने पर दूसरे वसुओं की सहायता से प्रभास वसु ने वह गाय चुरा ली।

जब वशिष्ठ जी को यह पता चला कि उनकी गाय वसुओं ने चुरायी है तो उन्होंने आठों वसुओं को धरती पर मनुष्य योनि में जन्म लेने का शाप दे दिया।

वसुओं ने अपनी गलती की क्षमा मॉगी तो वशिष्ठ जी ने कहा कि उनका शाप वापस तो नहीं हो सकता हॉ कुछ कम जरूर हो सकता है।

उन्होंने कहा — "जिन वसुओं ने प्रभास को मेरी गाय चुराने में सहायता की है उनको धरती पर मनुष्य योनि में जन्म तो लेना पड़ेगा पर उनकी वहॉ रहने की कोई पाबन्दी नहीं है। उनको केवल जन्म ले कर मरना है।

[13] Translated for the word "Hermitage"

[14] Kaam Dhenu was a cow who fulfilled all the wishes. She came out at the time of Saagar Manthan (Churning of Ksheer Saagar) process. In fact six such cows came out of the Ocean. Vashishth Jee had one such cow. Kaam means desire and Dhenu means cow, so Kaam Dhenu means the cow which can fulfill the wishes.

पर हॉ प्रभास जिसने मेरी गाय चुरायी है उसको तो वहॉ रहना ही पड़गा। पर उसका शाप भी मैं कुछ इस तरह से आसान कर सकता हूँ कि वह अपने समय का बहुत ही मशहूर आदमी होगा।"

सो यह प्रभास वसु ही पितामह भीष्म के रूप में जन्मे। इस तरह राजा महाभिष धरती पर शान्तनु के रूप में जन्मे और उन्होंने गंगा से विवाह किया। और प्रभास वसु उनके घर में उनका बेटा बन कर जन्मे जिसका नाम था देवव्रत।

लेकिन गंगा का काम केवल भीष्म की ही मॉ बनना तो था नहीं उनको तो दूसरे सात वसुओं को भी उनके शाप से मुक्ति दिलानी थी।

सो जब उन्होंने शान्तनु से शादी की तो उन्होंने उनसे इस शर्त पर विवाह किया कि वह जो कुछ करेंगी शान्तनु उनसे यह नहीं पूछेंगे कि वह वैसा क्यों कर रही हैं और जिस दिन भी उन्होंने ऐसा कोई सवाल किया तो उस सवाल का जवाब दे कर वे उनको छोड़ कर चली जायेंगी।

राजा शान्तनु गंगा के प्रेम में इतना पागल थे कि वे उनकी सब शर्तें मान गये। और उनके प्यार के इसी पागलपन का फायदा उठा कर गंगा ने अपने पहले सात बेटों को जन्मते ही गंगा नदी में डुबो दिया जिससे वे सब अपने शाप से मुक्त हो गये।

शान्तनु यह सब केवल देखते ही रहे और अपनी शर्त के अनुसार उनसे कुछ पूछ भी न सके कि वह ऐसा क्यों कर रही थीं नहीं तो गंगा उनको छोड़ कर चली जातीं।

बात यहॉ भी खत्म हो सकती थी पर यह बात अभी भी यहॉ खत्म नहीं हुई। अगर तुमने महाभारत पढ़ी है या उसका टीवी सीरियल देखा है तो तुम सोच रहे होगे कि जन्म तो प्रभास वसु ने ले लिया पर उन्होंने ऐसी ज़िन्दगी क्यों बितायी जैसी कि उन्होंने बितायी।[15]

उनका जन्म तो एक राज परिवार में हुआ था। वह एक राजकुमार थे और वह भी सबसे बड़े तो उन्होंने दूसरे राजाओं जैसी ज़िन्दगी क्यों नहीं बितायी। इसकी भी एक वजह थी।

वशिष्ठ जी ने उनको कह रखा था कि क्योंकि एक तो वह वहॉ शाप की वजह से जा रहे थे आनन्द के लिये नहीं सो वह वहॉ गृहस्थ की ज़िन्दगी नहीं बितायेंगे और वहॉ अपनी कोई वंश रेखा नहीं छोड़ेंगे।

इसी लिये समय आने पर उन्होंने शादी न करने की और अपनी वंश रेखा धरती पर न छोड़ने की कसम खायी। इन दोनों कसमों को खाने के बाद से इनका नाम भीष्म पड़ गया। भीष्म का अर्थ होता है कोई बहुत ही नामुमकिन काम करने वाला जैसा कि उन्होंने किया।

[15] As you might have read about Shree Raam also that why He had to spend His life like that as He spent it.

वह राज्य के उत्तराधिकारी भी नहीं बने उन्होंने शादी भी नहीं की उन्होंने अपनी कोई वंश रेखा भी नहीं छोड़ी। वशिष्ठ जी ने उनसे एक बात और कही कि अगर वह चाहते हैं कि इस जन्म के बाद उनकी मुक्ति हो जाये तो उनको उत्तरायण[16] में प्राण छोड़ने चाहिये।

इसी लिये वह महाभारत की लड़ाई खत्म होने के बाद मरण समान होने के बावजूद शर शय्या[17] पर उत्तरायण का इन्तजार करते रहे ताकि वह इस मनुष्य जीवन से मुक्त हो जायें।

इसी लिये भीष्म जी को उनके पिता शान्तनु से इच्छा मृत्यु का वरदान भी दिलवाया गया था ताकि इसी वरदान के असर से वह अपने प्राण उत्तरायण तक बचा सकें और अपने इच्छित समय पर अपने प्राण छोड़ सके।

इस मूल कहानी की समस्या यही है कि यह कहीं खत्म ही होने पर ही नहीं आती। देवव्रत के कुँआरे रहने की कसम खाने के बाद इत्तफाक से राजा शान्तनु अपने दो बेटों चित्रांगद और विचित्रवीर्य को छोटा ही छोड़ कर मर जाते है। बाद में चित्रांगद भी एक लड़ाई में मारा जाता है।

---

[16] Uttaraayan is the positon of the Sun when the Sun starts coming back from the Line of Capricorn towards Equator and then towards the Line of Cancer. This is a very important and auspicious time. It starts from Makar Sankraanti, 13th or 14th January, every year. In Hindu religion whoever dies between 14th January and 14th July goes to go Swarg via gods' path.

[17] Translated for the words "Bed of Arrows". Shar means arrows and Shayyaa means Bed. Thus Shar Shayyaa means the Bed of Arrows.

विचित्रवीर्य की दो पत्नियॉ थी पर वह भी उनसे बिना किसी सन्तान को पैदा किये मर जाता है। इस तरह राजा शान्तनु का परिवार बिना किसी वारिस के रह गया।

तब विचित्रवीर्य की मॉ सत्यवती भीष्म जी से प्रार्थना करती है कि वह विचित्रवीर्य की विधवाओं से सन्तान पैदा कर के वंश आगे बढ़ाये पर भीष्म जी ने तो कसम खा रखी थी वह न तो कभी शादी करेंगे और न अपनी वंश रेखा ही छोड़ेंगे सो वह अपनी कसम नहीं तोड़ सकते थे।

तब सत्यवती अपने पहले बेटे वेद व्यास जी को बुलाती है और वह विचित्रवीर्य की दो विधवाओं से दो बेटे पैदा करते हैं – एक अन्धा धृतराष्ट्र और दूसरा बीमार पांडु।

बड़ा बेटा होने के नाते धृतराष्ट्र को राजा हो जाना चाहिये था पर उनको अन्धा होने की वजह से राजा नहीं बनाया गया और पांडु राजा बन गये।

बात फिर यही खत्म नहीं हुई। धृतराष्ट्र अपने अन्धे होने के कारण राजा न बन पाने से से बहुत दुखी थे पर कर कुछ नहीं सकते थे।

धृतराष्ट्र की शादी पहले हुई तो धृतराष्ट्र ने सोचा कि अगर उनकी सन्तान पांडु की सन्तान से बड़ी हुई तो उनको उनका खोया हुआ राज्य वापस मिल जायेगा। धृतराष्ट्र के **100** बेटे हुए और पांडु के पॉच बेटे हुए।

पर बदकिस्मती से धृतराष्ट्र को कोई बेटा पांडु के सबसे बड़े बेटे से बड़ा नहीं था। पांडु के दो बेटे धृतराष्ट्र के सबसे बड़े बेटे से बड़े थे। यही नहीं पांडु के सभी बेटे धृतराष्ट्र के सभी बेटों से ज़्यादा गुणी भी थे। इस बीच पांडु की मृत्यु हो गयी और धृतराष्ट्र उनकी जगह राजा का काम करने लगे।

धृतराष्ट्र ने अपने बड़े बेटे दुर्योधन को इस इच्छा के साथ बड़ा किया था कि जब वह बड़ा हो जायेगा तो वही राजा बनेगा। वह इच्छा दुर्योधन की इतनी प्रबल थी कि वह पांडु के पॉचों बेटों में से किसी को भी सहन नहीं कर सकता था।

उसने उनको मारने की भी बहुत कोशिश की पर अपनी कोशिशों में कामयाब न हो सका। यहॉ तक कि उसने महाभारत की लड़ाई भी लड़ी पर उसमें भी वह उनको न मार सका। उलटे वह खुद अपने सारे भाइयों के साथ उसमें मारा गया।

इन्हीं सब घटनाओं ने मिल कर महाभारत को जन्म दिया।

अगर महाभिष और गंगा को धरती पर जन्म लेने का शाप न मिला होता तो राजा शान्तनु और गंगा का जन्म न होता। और अगर आठों वसुओं को धरती पर जन्म लेने का शाप न मिला होता तो भीष्म का जन्म न होता। अगर सात वसुओं का शाप कम न होता तो शायद आठों वसु ज़िन्दा रहते।

अगर प्रभास वसु के ऊपर बन्दिशें न लगतीं तो शायद भीष्म जी अपनी कसमें न खाते और साधारण रूप से शान्तनु के सबसे बड़े बेटे

होने के नाते राजा बन जाते और फिर शायद धृतराष्ट्र और पांडु का जन्म ही न हुआ होता।

अगर विचित्रवीर्य निसन्तान न मर गया होता तो वेद व्यास जी को उसकी विधवाओं से सन्तान न पैदा करनी होती। अगर वेद व्यास जी को देख कर अम्बिका और अम्बालिका न डर गयी होतीं तो धृतराष्ट और पांडु जैसे पुत्रों का जन्म ही न हुआ होता।

अगर धृतराष्ट्र अन्धे न पैदा हुए होते तो उनकी राजा बनने की इच्छा पूरी हो गयी होती और उनका बेटा भी राजा बन गया होता।

अगर प्रभास वसु को इच्छा मृत्यु का वरदान न मिला होता तो...

इस तरह बहुत सारे "अगर..." और बहुत सारे "तो..." हैं। इसके बारे में तो बस यही कहा जा सकता है कि "अगर ऐसा न हुआ होता तो यह हो जाता।" और इस परिवार का ही नहीं बल्कि अपने भारत का भविष्य कुछ और ही होता।

तो यह है महाभारत की आरम्भकी कहानी।

3 गीता[18]

गीता दूसरी पुस्तकों की तरह से कोई अलग पुस्तक नहीं है यह महाभारत का ही एक हिस्सा है। इसके अलावा इसमें कोई कहानी भी नहीं है। यह तो भारतीय दर्शन का एक उपदेश है।

पर क्योंकि इसकी रचना की अपनी एक वजह है जिसकी एक कहानी है इसी लिये हमने इसको इस पुस्तक में शामिल कर लिया है।

यह तो तुम्हें मालूम ही है कि महाभारत की लड़ाई दो सौतेले भाइयों के परिवारों के बच्चों की लड़ाई है – धृतराष्ट्र और पांडु के बच्चों की।

जब गंगा ने राजा शान्तनु के सात बेटे बिना किसी कारण के गंगा नदी में डुबो दिये और राजा शान्तनु अपनी शर्त के अनुसार उनसे कुछ न पूछ सके तो वह बहुत दुखी हुए।

जब गंगा ने आठवें पुत्र को जन्म दिया और वह उसको भी गंगा नदी में डुबोने चलीं तो राजा शान्तनु से न रहा गया और उन्होंने उनसे पूछ ही लिया कि वह उनके पुत्रों के साथ ऐसा क्यों कर रही थीं।

[18] Shree Mad-Bhagvad Geetaa is a part of Mahaabhaarat epic.

अपनी शर्त के अनुसार उन्होंने राजा को अपने और वसुओं के शाप की कहानी सुनायी और देवव्रत को ले कर धरती छोड़ कर चली गयीं।

जब देवव्रत जवान हो गये और पढ़ लिख गये तो वह उनको राजा के पास छोड़ गयीं। राजा ने तुरन्त ही उनको युवराज घोषित कर दिया।

एक दिन राजा शान्तनु ने सत्यवती को देखा तो उनका मन उससे शादी करने को करने लगा। सत्यवती के पिता से शादी की बात करने पर उसके पिता ने कहा कि वह उनसे उसकी शादी करने में बहुत प्रसन्नता का अनुभव करेगा पर एक ज्योतिषी के अनुसार सत्यवती का पुत्र राज सिंहासन पर बैठेगा।

और जब उन्होंने भीष्म को युवराज घोषित कर दिया हे तो सत्यवती का पुत्र राजगद्दी पर कैसे बैठेगा।

वह सत्यवती से शादी करना तो चाहते थे पर वे अपने और गंगा के बड़े बेटे देवव्रत के युवराज के अधिकार को भी छीनना नहीं चाहते थे इसलिये वे दुखी रहने लगे। देवव्रत ने इसके लिये राज्य का त्याग किया और शादी न करने की कसम खायी और सत्यवती को अपनी मॉ के रूप में घर ले आये।

सत्यवती के दो बेटे हुए चित्रांगद और विचित्रवीर्य। चित्रांगद छोटी उम्र में ही एक लड़ाई में मारे गये सो विचित्रवीर्य को राजा बना दिया गया। विचित्रवीर्य की दो पत्नियॉ थीं अम्बिका और

अम्बालिका। उन दोनों के एक एक बेटा था। अम्बिका के अन्धे धृतराष्ट्र और अम्बालिका के बीमार पांडु।

धृतराष्ट्र को उनके अन्धे होने की वजह से राजा नहीं बनाया गया तो बचे पांडु। उनको ही राजा बना दिया गया पर वह भी जल्दी ही अपने पॉच बेटों को छोड़ कर मर गये।

उनके मरने की भी एक वजह थी। पांडु बहुत अच्छा शब्दवेधी बाण चलाते थे। एक बार उनके शब्दवेधी बाण से उनसे एक ऋषि की हत्या हो गयी।

मरते समय उस ऋषि ने उनको शाप दिया कि क्योंकि पांडु ने उनको उस दशा में मारा था जब वह अपनी पत्नी के साथ थे तो वह भी तभी मरेंगे जब कभी वह अपनी पत्नी के साथ होंगे।

पांडु ने कहा कि इस पाप का प्रायश्चित तो उनको करना ही पड़ेगा। भीष्म जी विदुर जी और दूसरे कई पंडितों ने उनको समझाने की बहुत कोशिश की कि यह तो एक दुर्घटना थी और तुम राजा हो तो इसके प्रायश्चित की तुमको कोई जरूरत नहीं है पर वह नहीं माने और धृतराष्ट्र को अपने राज्य की देखभाल सौंप कर वन चले गये।

वहॉ देवताओं द्वारा उनके पॉच बेटे हुए जो पांडु के बेटे होने की वजह से पांडव कहलाये। देवताओं के बेटे होने की वजह से वे सब अपने अपने धर्म का पालन करने वाले थे।

कुन्ती तो इस बात का बहुत ध्यान रखती थी कि वह राजा पांडु के साथ अकेली न रहे पर एक बार पांडु अपनी दूसरी पत्नी माद्री के साथ थे तो उस ऋषि के शाप की वजह से वह वहीं मर गये।

उधर धृतराष्ट्र के **100** बेटे थे जो कौरव कहलाये और एक बेटी थी जिसका नाम था दुशला। उनका सबसे बड़ा बेटा दुर्योधन था जो बहुत घमंडी और अत्याचारी था।

अब कहानी यहॉ से आगे शुरू होती है। धृतराष्ट्र क्योंकि बड़े थे और राजा उन्हीं को बनना चाहिये था पर क्योंकि उनको उनके अन्धे होने की वजह से राजा नहीं बनाया गया इसलिये वह अपना राजा बनने के मौके को खोने का जिम्मेदार अपने अन्धे होने को ठहराते थे। यह तो हो नहीं सका।

दूसरे वह बड़े थे उनकी शादी भी पहले हुई थी सो वह सोचते थे कि अगर उनका बेटा पांडु के बेटे से बड़ा हो तो कम से कम उनका बेटा ही राजा बन जायेगा और इस तरह से वह अपना खोया हुआ राज्य वापस पा लेंगे। पर ऐसा भी न हो सका।

उधर पांडु के एक भी नहीं बल्कि दो दो बेटे धृतराष्ट्र के सबसे बड़े बेटे दुर्योधन से बड़े थे। इसके अलावा विचित्रवीर्य के बाद भी तो पांडु ही राजा बने थे।

पर धृतराष्ट्र का कहना था कि क्योंकि पांडु ने वह राज्य उनको दे दिया था इसलिये अब राजा वह थे और उनके बाद उनके बेटे को ही राजा होना चाहिये।

सो दो समूह थे एक तो धृतराष्ट्र और उनके बेटे दुर्योधन का जो यह समझता था कि राजा के सबसे बड़े बेटे को ही राजा होना चाहिये। और दूसरा समूह था भीष्म और विदुर जी का जो यह समझता था कि किसी लायक बेटे को ही राजा होना चाहिये अत्याचारी को नहीं।

इस पशोपेश में धृतराष्ट्र का बड़ा बेटा दुर्योधन पांडु के बेटों से बहुत जलता था क्योंकि वह यह समझता था कि कुरु वंश के बड़े बेटे का बड़ा बेटा होने के नाते राजा उसी को बनना चाहिये।

उसने पांडवों को मारने की भी कई बार कोशिश की पर नहीं मार पाया बल्कि उन घटनाओं के बाद से पांडव और ज़्यादा ताकतवर हो गये।

इससे दुर्योधन बहुत गुस्सा हुआ और अपने मामा शकुनि के साथ मिल कर उसने उनके साथ जुआ खेला जिसमें उसने उनको दो बार हरा दिया।

जुए में पहली बार हराने के बाद तो उसने पांडवों की पत्नी द्रौपदी का वस्त्र हरण भी किया। उस समय भीम ने कसम खायी कि वह धृतराष्ट्र के सभी बेटों को मार देगा दुशासन की छाती के लहू से द्रौपदी के केश धोयेगा जिन्हें पकड़ कर वह उसे सभा में लाया था और अपनी गदा से दुर्योधन की जॉघ तोड़ देगा जिस पर दुर्योधन ने द्रौपदी को बैठने के लिये कहा था।

दूसरे बार के जुए की शर्तों के अनुसार पांडवों को बारह साल वन में रहना था और एक साल छिप कर रहना था[19] कि कोई उनको पहचाने नहीं।

यह वनवास पूरा होने पर वह उनको उनका राज्य वापस कर देगा। पर अगर इस एक साल के बीच वे पहचान लिये गये तो उनको फिर से तेरह साल के वनवास के लिये जाना पड़ेगा।

पर जब पांडवों का तेरह साल का वनवास पूरा हो गया तब भी दुर्योधन ने उनका राज्य उनको वापस नहीं किया बल्कि उनको लड़ाई के लिये ललकारा।

श्रीकृष्ण और पांडव जानते थे कि वनवास पूरा होने के बाद भी दुर्योधन उनको उनका राज्य नहीं देगा सो इस तेरह साल के वनवास के बीच उन्होंने उस लड़ाई के लिये अर्जुन को तैयार किया। वह स्वर्ग जा कर दैवीय अस्त्र शस्त्र ले कर आया।

जैसा उन लोगों ने सोचा था वैसा ही हुआ। वनवास खत्म होने के बाद भी दुर्योधन ने पांडवों को उनका राज्य नहीं दिया और लड़ाई तय हो गयी।

पर जब दोनों सेनाऐं लड़ाई के मैदान में इकट्ठा हुईं और अर्जुन ने अपने दुश्मन की सेना को देखा तो उसको मोह हो गया और वह अपना धनुष रथ में नीचे डाल कर यह कह कर बैठ गया कि मैं यह लड़ाई नहीं लड़ूँगा।

[19] Translated for the word “Incognito”. In Hindi it is called as “Agyaatvaas”.

श्रीकृष्ण उसके सारथी थे। उसके ऐसा कहने पर श्रीकृष्ण ने उसको गीता का उपदेश दिया जिसमें उसको उसका कर्तव्य बताया।

सो अगर अर्जुन ने युद्धभूमि में अपने हथियार न डाले होते तो श्रीकृष्ण को उसे गीता का उपदेश देने की कोई जरूरत ही नहीं पड़ती और हम लोग बहुत सी उपयोगी बातों को जानने से रह जाते।

आज यही गीता संसार के बहुत देशों में पढ़ी जाती है। लोग इसको हिन्दू धर्म की किताब नहीं मानते बल्कि जीवन का दर्शन मानते हैं। इसी लिये **150** से भी ज़्यादा भाषाओं में इसका अनुवाद भी किया जा चुका है।

यह श्री मद्भग्वद गीता के नाम से मशहूर है। भग्वद माने भगवान का और गीता माने गीत। क्योंकि यह भगवान के खुद के मुँह से निकली है इसलिये इसको "भगवान का गति"[20] भी कहते हैं।

तो गीता इसलिये कही गयी। लड़ाई के मैदान में अगर अर्जुन को मोह नहीं होता और वह हथियार फेंक कर नहीं बैठ जाता तो गीता का शायद जन्म ही नहीं होता।

इस सबको पढ़ कर क्या तुम यह बता सकते हो कि इसको कहा सुना किसने? तुम कहोगे यह तो साफ है कि इसे श्रीकृष्ण ने कहा और अर्जुन ने सुना।

[20] Translated for the words "God's Song"

तुमने ठीक कहा। पर ऐसा नहीं है। इसे केवल अर्जुन ने ही नहीं सुना। तो तुम पूछोगे "तो फिर वहॉ और कौन था इसे सुनने के लिये?"

धृतराष्ट्र अन्धे थे इसलिये वह इस लड़ाई को देख नहीं सकते थे। लड़ाई शुरू होने से पहले महर्षि वेद व्यास जी उनके पास आये और उनसे पूछा कि क्या वह यह लड़ाई देखने के लिये दिव्य दृष्टि लेना चाहते हैं पर धृतराष्ट्र ने मना कर दिया।

फिर भी व्यास जी जानते थे कि वह जरूर उस लड़ाई के बारे में जानने की कोशिश करेंगे सो वह उनके सारथी संजय को वह दृष्टि दे कर चले गये।

फिर भी धृतराष्ट्र ने दस दिन तक वहॉ का हाल जानने की इच्छा प्रगट नहीं की। उसे विश्वास था कि इस युद्ध में उसका पुत्र दुर्योधन ही जीतेगा।

क्यों? क्योंकि धृतराष्ट्र को मालूम था कि जब तक भीष्म ज़िन्दा हैं न तो कोई उसके बेटों को हरा सकता है और न कोई उनको मार सकता है।

पर जब दसवें दिन लड़ाई के मैदान से यह समाचार आया कि भीष्म जी घायल हो गये तब धृतराष्ट्र के सब्र का बॉध टूट गया और उन्होंने संजय से वहॉ का हाल बताने के लिये कहा। इसलिये संजय ने यह गीता सुनी। तो दूसरा आदमी संजय था जिसने यह गीता सुनी।

एक बार दूसरे नम्बर के पांडव भीम को रास्ते में हनुमान जी मिल गये थे तो भीम के बड़े भाई होने के नाते उन्होंने भीम से कोई वर मॉगने के लिये कहा तो भीम ने कहा कि हमारी एक लड़ाई होने वाली है आप उस लड़ाई में हमारा साथ दें।

हनुमान जी ने कहा जब श्रीकृष्ण तुम्हारे साथ हैं तो तुमको किसी दूसरे के साथ की कोई जरूरत ही नहीं है पर फिर भी जब तुमने मुझसे मेरी सहायता मॉगी है तो मैं तुम लोगों के साथ जरूर रहूँगा।

मैं अर्जुन के रथ के झंडे पर बैठूँगा और उसके रथ का झंडा युद्ध के मैदान में सबसे ऊँचा रखूँगा ताकि सब लोग उसे देख सकें और उसके रथ को युद्ध के मैदान में बिना किसी रोक टोक के इधर उधर जाने में सहायता करूँगा।"

इस तरह जब भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से गीता कही तब हनुमान जी उनके रथ के झंडे पर बैठे हुए थे सो उन्होंने भी गीता सुनी। इस तरह हनुमान जी तीसरे आदमी थे जिन्होंने गीता सुनी।

यह गीता महर्षि वेद व्यास जी ने भी सुनी और सुन कर महाभारत में लिखी।

इस तरह केवल चार लोगों ने गीता सुनी – अर्जुन ने, संजय ने, हनुमान जी ने और वेद व्यास जी ने।

और इसलिये गीता लिखी गयी।

4 श्री मद्भागवत पुराण[21]

ऐसी चौथी पुस्तक हमने चुनी है श्रीमद्भागवत पुराण। यह हिन्दुओं के अठारह महापुराणों में से एक मुख्य पुराण है। वैसे तो अठारहों पुराण महर्षि वेद व्यास जी के लिखे हुए माने जाते हैं पर फिर भी इस पुराण का अपना कुछ अलग ही महत्व है। इसी लिये इसको "सुख सागर" भी कहते हैं।

और यह महत्व शायद इसलिये भी है क्योंकि वेद व्यास जी ने यह पुराण बड़े खास हालात में लिखा था। आज हम तुम्हें यह बतायेंगे कि वे खास हालात क्या थे जिनमें उन्होंने इसे लिखा।

जब व्यास जी ने महाभारत लिख दिया तो वह इस परिवार के दुख और बरबादी से बहुत दुखी हो गये। वह जा कर गंगा नदी के किनारे बैठ गये। वह वहॉ बहुत देर तक बहुत दुखी बैठे रहे कि नारद जी वहॉ आये और उनसे पूछा कि वे इतने उदास और दुखी क्यों बैठे हैं।

व्यास जी ने उनको बताया कि हालॉकि उन्होंने इतना बड़ा ग्रन्थ लिखा पर उनके मन को शान्ति नहीं है। वह इस परिवार की बर्बादी से कुछ ज़्यादा ही दुखी हो गये हैं क्योंकि इस ग्रन्थ में केवल उस परिवार की ही बर्बादी ही नहीं थी बल्कि भारत के एक बहुत बड़े हिस्से की बर्बादी भी थी।"

[21] Shree Mad-bhaagvat Puraan – one of the 18 Mahaa Puraan written by Maharshi Ved Vyaas Jee.

तब नारद जी बोले — "महर्षि मेरा अपना विचार यह है कि जब तक मनुष्य भगवान की कहानी नहीं कहता उस परम पिता की प्रशंसा नहीं करता उसके मन को शान्ति नहीं मिलती।

सो अगर आप मेरी बात मानें तो भगवान की कहानी लिखें। मुझे विश्वास है कि उसको लिखने के बाद आपके मन को शान्ति अवश्य ही मिलेगी।"

तब व्यास जी ने भागवत लिखने के बारे में सोचा जिसमें उन्होंने विष्णु के बारे में लिखने का विचार किया। अब उनका जीवन क्या था। उनके जीवन के बारे में लिखने का अर्थ था उनके अवतारों के बारे में लिखना।

क्योंकि उस समय तक श्रीकृष्ण विष्णु के मानव रूप में आखिरी अवतार थे इसलिये उन्होंने इस पुराण में उनके इसी अवतार का बहुत विस्तृत रूप में वर्णन करने का विचार किया।

कहते हैं कि यह भागवत पुराण लिखने के बाद ही उनके मन को शान्ति मिली। इसी लिये लोग इसको सुख सागर भी कहते हैं क्योंकि इसको पढ़ने के बाद सुख की अनुभूति होती है।

इसमें बारह स्कन्ध[22] हैं जो कई अध्यायों में बॅटे हुए हैं। इसका दसवॉ स्कन्ध सबसे बड़ा है जो दो भागों में बॅटा है। उसी में श्रीकृष्ण के जीवन की सब घटनाओं का वर्णन है। इस पुराण को लोग

[22] Used for "Sections"

श्रीकृष्ण के जीवन की घटनाओं को जानने के लिये मूल स्रोत के रूप में इस्तेमाल करते हैं।

इसी लिये इसको लिखने का एक मुख्य उद्देश्य यह भी था कि इसको लिखने के बाद ही महर्षि वेद व्यास जी को महाभारत लिखने के बाद पैदा हुई जो अशान्ति हो रही थी उससे मुक्ति मिल पायी।

इसमें भारत का पूरा इतिहास भी दिया हुआ हैं।

5 बृहत् कथा[23]

बृहत् कथा लोक कथाओं का एक और संग्रह है। इसे मूल रूप में गुणाध्य ने "पैशाची" भाषा में लिखा था। इसकी कहानियों का मूल रूप तो नहीं मिलता और इसके लिखने का ठीक समय भी ज्ञात नहीं है पर ये कहानियॉ बाद में लिखी हुई मिलती हैं।

प्रसिद्ध संस्कृत के महाकवि दण्डिन सुबन्धु और बाण भट्ट के अनुसार बृहत्कथा छठी शताब्दी एडी में मौजूद थी। पर अगर भास की लिखी हुई राजा उदयन की कहानी को बृहत्कथा से प्रेरित मान लिया जाये तब तो यह तीसरी शताब्दी बीसी में भी मौजूद थी। इसक आरम्भ हिन्दू धर्म के पुराणों से हुआ है।

तो लो पढ़ो इस संग्रह की आरम्भ की कहानी।

एक बार पार्वती जी ने अपनी सेवाओं से शिव जी को प्रसन्न किया तो शिव जी ने उनसे कोई वर मॉगने के लिये कहा। पार्वती जी ने कहा कि वह उन्हीं के मुँह से कोई ऐसी कहानी सुनना चाहती हैं जो पहले कभी किसी ने न तो उनसे और न ही किसी और से कही हो।

शिव जी बोले "ठीक है" सो उन्होंने अपने सब नौकरों को वहॉ से चले जाने के लिये कहा। वह पार्वती जी को देवताओं की खुशी,

[23] Brihatkathaa has a mythological origin. This writeup has been taken from the Web Sites : http://www.worldlibrary.org/articles/eng/brihatkatha and https://en.wikipedia.org/wiki/Gunadhyay

मनुष्यों के दुख और धरती और स्वर्ग की आत्माओं की हालतों के बारे में बताना चाहते थे। उस समय उन्होंने पार्वती जी को विद्याधरों के सात बादशाहों की कहानियॉ सुनायीं।

इतने में शिव जी का पुष्पदंत[24] नाम का एक गण शिव जी से मिलने आया तो शिव जी के द्वारपाल ने उसको अन्दर जाने से रोक दिया।

पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था सो उसको उत्सुकता हुई कि आज ऐसा क्यों हुआ कि उसको शिव जी से मिलने से मना कर दिया गया सो वह अपने आपको अदृश्य कर के शिव जी के महल में घुस गया।

वहॉ उसने अदृश्य रह कर जो कुछ शिव जी ने पार्वती जी से कहा वह सब सुना और फिर अदृश्य रह कर ही वह वहॉ से बाहर निकल आया।

वहॉ से वह अपने घर आया और अपनी पत्नी जया को वह सब बताया जो शिव जी ने पार्वती जी से कहा था। जया पार्वती जी की बहुत अच्छी दोस्त थी। जया इस बात को छिपा न सकी और उसने यह सब जा कर पार्वती जी को बताया।

पार्वती जी इस बात पर बहुत नाराज हुईं और उन्होंने पुष्पदंत को धरती पर आदमी के रूप में पैदा होने का शाप दे दिया।

[24] Pushpadant – name of one Gan of Shiv Jee

पुष्पदंत का एक दोस्त था माल्यवान। जब उसने पुष्पदंत की सहायता करनी चाही तो उन्होंने उसको भी धरती पर आदमी के रूप में पैदा होने का शाप दे दिया।

पुष्पदंत कौशाम्बी में वररुचि[25] बन कर पैदा हुआ। कुछ समय बाद एक पिशाच उसके सामने प्रगट हुआ और उसने उसको उसके पहले जन्म की याद दिलायी और उसके सामने शिव जी की सुनायी हुई सात कहानियॉ कहीं जिनमें हर एक में **700** हजार श्लोक थे।

पुष्पदंत शिव जी का बहुत बड़ा भक्त था सो उसने उन सब कहानियों को लिख लिया। इस काम में उसको बहुत साल लग गये पर वह सब उसको इतना अच्छा लगा कि वह शिव जी के मन्दिर में जा कर उनको शिव जी को सुनाने चला गया।

पर शिव जी उसके इस काम से बहुत नाखुश थे सो उन्होंने उसको उस काम को नन्दी जी के मुँह में फेंक देने के लिये कहा। पुष्पदंत को यह अच्छा नहीं लगा पर उसे शिव जी की बात तो माननी ही थी।

पर आश्चर्य। जब वह अपने उस काम को नन्दी जी के मुँह में फेंकने गया तो उसने देखा कि उसका हर श्लोक तो नन्दी के दॉत पर लिखा हुआ है। तब शिव जी ने उसको बताया कि वे श्लोक तो

[25] Vararuchi is the name of Pushpdant after he was born in Kaushaambee, or Kaatyaayan the Minister of the King Nand. Vararuchi was supposed to tell these Shiv's stories to humanbeings.

बहुत पहले से लिखे हुए थे वह तो उन्हें कहने लिखने का केवल एक साधन था।

तब पुष्पदंत यानी वररुचि को उस कहानी को एक पिशाच कणभूति[26] को एक जंगल में सुनाने को कहा गया कि उसके बाद ही कहीं जा कर उसको अपने शाप से छुटकारा मिलेगा।

इस बीच माल्यवान को भी शाप से तभी छूटना था जब वह वह कहानी उस पिशाच कणभूति से सुन लेता और उस कहानी को संसार को सुना देता। सो माल्यवान प्रतिष्ठान पुरी में रह रही एक कुँआरी ब्राह्मण लड़की से जन्म लेता है और वहाँ उसका नाम गुणाढ्य होता है।[27]

इस प्रकार पुष्पदंत ने वररुचि बन कर जन्म लिया और माल्यवान ने गुणाढ्य बन कर जन्म लिया।

बड़ा होने पर गुणाध्य प्रतिष्ठान पुरी के राजा शालिवाहन या सातवाहन का एक मन्त्री[28] बन जाता है। वह विन्ध्याचल के जंगलों में कणभूति पिशाच से कहानी लेने के लिये जाता है। वहाँ कणभूति

---

[26] Kanabhooti is the name of a Pishaach to whom Pushpdant had to tell the story he had heard while Shiv Jee was telling them to Paarvatee Jee. Kanabhooti was a Yaksh named Suprteaek who was cursed by his master Kuber independently and lived in Vindhyaachal forests. He tells the story in Paishaachi language.

[27] Maalyavaan is reborn as Gunaadhya to a maiden Braahman girl in Supratishthit. Gunaadhya is the Sanskrit name of the 6th century Indian author of Brihatkathaa – a large collection of tales.

[28] Gunaadhya is appointed as Minister to the King Saatvaahan of Pratishthaan Puree (modern day Paithaan in Mahaaraashtra). Saatvaahan Dynasty is dated in India's Deccan region from 271 BC to 71 BC. Saatvaahans were the Kings during 1st century BC to 3rd century AD.

Gunaadhya has described the valor of King Vikramaaditya whose qualities have been described by a Saatvaahan King Haalvaahan in his "Gathaa Satsai". Both Gunaadhya and Shaalvaahan lived around Vikramaaditya times.

पिशाच वे कहानियॉ उसे पैशाची भाषा में गुणाध्य को सुनाता है और गुणाढ्य उनको पैशाची भाषा में ही अपने खून से लिखता है।[29]

पर जब वह उस कहानी को ले कर राजा सातवाहन के पास जाता है तो राजा उस कहानी को मानने से इनकार कर देता है क्योंकि वह पैशाची भाषा में लिखी हुई थी सो वह फिर से जंगल लौट जाता है और वहॉ जा कर उन पन्नों को आग में जलाने का प्लान बनाता है।

कथा सरित् सागर के एक रूप[30] में लिखा है कि जब गुणाढ्य उन पन्नों को जलाने के लिये आग जलाता है तो वह अपने लिखे हुए उन पन्नों को पहले तो पढ़ना शुरू करता है और फिर एक एक कर के उनको आग में जलाता रहता है तो वहॉ रह रहे जानवर उस कहानी को सुन कर उससे इतने आकर्षित हो जाते हैं कि वे गुणाढ्य के पास आ कर बैठ जाते हैं और चुपचाप उसकी कहानियों को सुनते रहते हैं।

अब क्योंकि जंगल के सारे जानवर गुणाढ्य की कहानी सुनते रहते हैं तो राजा सातवाहन के रसोइये को राजा की रसोई के लिये अच्छा मॉस नहीं मिलता। राजा सातवाहन इसका कारण खोजने के लिये खुद जंगल शिकार के लिये जाता है।

[29] Perhaps that is why this book is found written in Paishaachee languge

[30] Translated for the word “Version”

इत्तफाक से राजा सातवाहन भी उस समय शिकार के लिये उसी जंगल में जाता है जहॉ गुणाढ्य कहानियॉ पढ़ पढ़ कर उमके पन्ने आग में जला रहा है।

पर वहॉ राजा को शिकार के लिये कोई जानवर ही नहीं मिलता क्योंकि सारे जानवर तो गुणाढ्य के पास बैठे हुए उसकी कहानी सुन रहे होते हैं। पर वह खुद एक मीठी सी आवाज सुन कर उसकी तरफ आकर्षित हो जाता है।

जब वह उस आवाज तक पहुॅचता है तो क्या देखता है कि वहॉ तो जंगल के बहुत सारे जानवर गुणाढ्य के चारों तरफ बैठे हैं और गुणाढ्य अपने खून से लिखी हुई उसी कहानी का एक एक पन्ना कर के पढ़ रहा है और पढ़ा हुआ पन्ना आग में डालता जा रहा है जिसको वह उसके पास लाया था।

जब तक सातवाहन वहॉ पहुॅचता है गुणाढ्य छह कहानियॉ तो खत्म कर लेता है और उनको जला भी देता है पर अभी उसकी सातवीं कहानी बच जाती है।

किसी तरह से वह गुणाढ्य को उस पुस्तक की सातवीं कहानी आग में डालने से रोक लेता है पर उससे पहले की छह कहानियॉ तो पहले ही जल चुकी थीं।

इस प्रकार केवल यह सातवीं कहानी ही बच पाती है और वह सातवीं कहानी बृहत् कथा थी जिससे सारी और कहानियॉ, जैसे कथा सरित् सागर, ली गयीं हैं। ये आखिरी **700** हजार श्लोक

लिखे **100** हजार पन्ने थे जो सातवाहन ने बचाये। ऐसा कथा सरित् सागर में लिखा हुआ है।

तो यह है बृहत् कथा के जन्म की कहानी।

विकीपीडिया से[31]

बृहत् कथा में दो राज्य हैं उज्जयिनी और कौशाम्बी

उज्जयिनी के राजा रानी हैं प्रद्योत महासेन और अंगारवती
कौशाम्बी के राजा रानी हैं शतानीक और मृगावती
प्रद्योत और अंगारवती के दो बेटे गोपाल और पालक और एक बेटी वासवदत्ता
शतानीक और मृगावती का एक बेटा उदयन
उदयन की दो पत्नियॉ वासवदत्ता और पद्मावती
उदयन और वासवदत्ता का एक बेटा नरवाहनदत्ता
उदयन के **4** मन्त्री – रुमनवान, यौगन्धरायन, ऋषभ और वसन्तक
नरवाहनदत्ता के **4** मन्त्री – हरिशिखा, मारुभूतिका, गोमुख और तपन्तक

गुणाढ्य की वृहत् कथा **200–500** एडी में पैशाची भाषा में गद्य में लिखी गयी
गुणाढ्य इसे अपने राजा सातवाहन के पास ले जाता है
पर वह उसको पैशाची भाषा के कारण स्वीकार नहीं करता
सो वह उसको जंगल ले जाता है और वहॉ उसका एक एक पन्ना पढ़ कर जलाता रहता है
जंगल के जानवर उन कहानियों को सुनते रहते हैं
उसी समय सातवाहन शिकार के लिये जाता है पर उसको कोई शिकार नहीं मिलता
क्योंकि सारे जानवर तो गुणाढ्य की कही कहानियॉ सुन रहे हैं

जब तक सातवाहन गुणाढ्य के पास पहुँचता है
गुणाढ्य बृहत् कथा के छह कहानियॉ पढ़ कर जला चुकता होता है

[31] Brihat Katha – From https://en.wikipedia.org/wiki/Brihatkatha

किसी तरह सातवाहन उसकी सातवीं कहानी जलने से रोक लेता है

सो बाकी सब कहानियॉ बृहत् कथा के सातवीं कहानी से निकली हैं
क्षेमेन्द्र की बृहत् कथा मंजरी **1037** एडी काश्मीर संस्कृत में लिखी पूरी है
सोमदेव का कथा सरित् सागर **1070** एडी काश्मीर संस्कृत में लिखा पूरा है

गुणाध्य की कहानी कथा सरित् सागर में —

शिव पार्वती जी को सात कहानी सुनाते हैं
जिनको पुष्पदंत नाम का गण चुपके से सुन लेता है
पुष्पदंत उन्हें अपनी पत्नी जया को सुनाता है जया जा कर पार्वती को बताती है

पार्वती जी पुष्पदंत को धरती पर पैदा होने का शाप देती हैं
पुष्पदंत का मित्र माल्यवान उसे बचाने की कोशिश करता है
पर पार्वती उसको भी धरती पर जन्म लेने का शाप देती हैं
कुबेर सुप्रतीक को अलग से धरती पर पिशाच रूप में जन्म लेने का शाप देते हैं

पुष्पदंत वररुचि या कात्यायन बन कर पैदा होता है और
राजा नन्द का मन्त्री बन कर वे कहानियॉ आदमियों को सुनाता है

सुप्रतीक एक कणभूति पिशाच बन कर पैदा होता है
माल्यवान प्रतिष्ठानपुरी में गुणाढ्य बन कर पैदा होता है
वह प्रतिष्ठानपुरी के राजा सातवाहन की सेवा करता है

एक दिन कणभूति पिशाच पैशाची भाषा में गुणाढ्य को कहानी सुनाता है
गुणाढ्य सुप्रतीक पिशाच से सुनी कहानी को पैशाची भाषा में अपने खून से लिखता है
ये कहानियॉ वह राजा सातवाहन को देता है पर वह उनको स्वीकार नहीं करता
तो वह जंगल में जानवरों को उसे सुनाते हुए उन सात अध्यायों में से छह अध्याय जला देता है
पर तभी राजा सातवाहन वहॉ आ जाता है और सातवीं और आखिरी कहानी बचा लेता है

यही सातवीं और आखिरी कहानी बृहत् कथा बन जाती है
जिसमें 700 हजार श्लोक 100 हजार पन्नों पर लिखे हुए थे

गुणाढ्य ने बृहत् कथा पैशाची भाषा में क्यों लिखी? कहते हैं कि एक समय गुणाढ्य किसी से एक शर्त हार जाता है तो उसे संस्कृत और प्राकृत भाषाऐं पढ़नी लिखनी छोड़नी पड़ती हैं और पैशाची भाषा सीखनी पड़ती है। यह न तो संस्कृत है न प्राकृत सो यह पैशाची भाषा इस शर्त को पूरा करती है।

गुणाढ्य कणभूति पिशाच से पैशाची भाषा में कहानी सुनता है और उसी भाषा में उसको लिख भी लेता है।

इन कहानियों के 700 हजार श्लोकों को वह अपने खून से इसलिये लिखता है क्योंकि उसके पास स्याही नहीं है। अपने इस काम को वह राजा सातवाहन के पास भेजता है पर वह इसको मना कर देता है क्योंकि ये श्लोक पैशाची भाषा में लिखे हुए हैं।

निराश हो कर गुणाढ्य इन कहानियों को जानवरों को सुनाता है और पढ़ने के बाद हर पन्ने को जला देता है। वहॉ बैठे जानवर खाना पीना भूल जाते हैं और वहीं बैठे बैठे गुणाढ्य की कहानियॉ सुनते रहते हैं।

जंगल में जानवर न मिलने की वजह से राजा सातवाहन को महल में बहुत ही खराब मॉस खाने को मिलता है।

राजा सातवाहन इसकी जॉच के लिये जंगल आता है तो उसको एक भी जानवर दिखायी नहीं देता पर उसको गुणाढ्य के पढ़ने की आवाज आती है सो वह उधर ही खिंचा चला जाता है। वहॉ वह गुणाढ्य को कहानी पढ़ते और उसके पन्ने जलाते देखता है तो उसका हाथ रोक लेता है।

लेकिन तब तक गुणाढ्य छह कहानियॉ जला चुकता है केवल सातवीं कहानी यानी आखीर के **700** हजार श्लोक बच जाते हैं जो नरवाहनदत्ता की कहानी का आरम्भ बनते है।

फिर सातवाहन खुद गुणाढ्य की कहानी लिखता है जो उसकी बृहत् कथा की सातवीं कहानी "नरवाहनदत्ता की कहानी" का परिचय बन जाती है।

इस तरह इसकी छह कहानियॉ जल जाती हैं। सातवीं कहानी नरवाहनदत्ता की कहानी बृहत् कथा बन जाती है और सातवाहन गुणाढ्य की जो कहानी लिखता है तो वह नरवाहनदत्ता की कहानी का परिचय बन जाती है।

6 भतृहरि के तीन शतक[32]

तीन शतक पुस्तकें इतनी ज़्यादा मशहूर पुस्तकें नहीं हैं जितनी इस पुस्तक में दी गयी और पुस्तकें मशहूर हैं पर क्योंकि इन तीनों शतकों के लिखने की अपनी एक वजह है जो बहुत ही मजेदार है इसलिये इनको इस पुस्तक में शामिल कर लिया गया है।

शतक का मतलब होता है सौ। असल में इन तीनों शतकों में संस्कृत में चार चार लाइनों में लिखे सौ सौ पद हैं इसी लिये ये शतक कहलाते हैं। इनका नाम है "नीति शतक" "श्रंगार शतक" और "वैराग्य शतक"। ये तीनों शतक राजा भतृहरि ने लिखे हैं।

अब हम तुम्हें यह बताते हैं कि राजा भतृहरि ने ये तीनों शतक अपनी किन तीन मनःस्थिति में लिखे।

राजा भर्तृहरि उज्जयिनी नगरी के राजा गन्धर्वसेन के बड़े बेटे थे। इनका एक छोटा भाई भी था जिसका नाम था विक्रमादित्य जिनकी "विक्रम बेताल" की कहानियॉ बहुत मशहूर हैं।

गन्धर्वसेन के मरने के बाद भर्तृहरि राजा बने। अभी इनके बाबा ज़िन्दा थे सो उन्होंने भर्तृहरि और विक्रम दोनों को राजनीति की शिक्षा दी कि जब वे राजा बनें तब उनको किस तरह बर्तना चाहिये। इस शिक्षा को उन्होंने "नीति शतक" नाम की पुस्तक में लिखा।

[32] Three Shataks of the King Bhartrahari

एक बार राजा भर्तृहरि को पता चला कि उनको राज्य में चोर डाकू और जंगली जानवरों का कुछ ज़रा ज़्यादा ही बोल बाला हो गया है सो वह खुद इसकी जॉच पड़ताल के लिये जंगलों की तरफ निकल गये।

जब वह जंगलों से वापस आ रहे थे तो रास्ते में उनको एक बहुत सुन्दर लड़की मिली। भर्तृहरि उसकी ओर आकर्षित हो गये और उसको अपने महल ले आये और अपनी रानी बना लिया। उसका नाम पिंगला था। यह उनकी सबसे छोटी रानी थी।

उनकी यह रानी बहुत सुन्दर थी। भर्तृहरि उसकी सुन्दरता का गुलाम बन कर रह गये थे। वह उस समय अपनी सबसे छोटी रानी पिंगला के प्यार में गले तक डूबे हुए थे। वह उनके प्यार में इतने डूबे हुए थे कि उसी समय उन्होंने अपना दूसरा शतक लिखा "श्रंगार शतक"।

उसके प्यार के लिये समय निकालने के लिये उन्होंने लड़ाई की देखभाल करने के लिये अपना एक आदमी तैनात किया हुआ था। उसका नाम था महीपाल। भर्तृहरि का प्यार पिंगला के लिये एक बन्धन बन गया था सो पिंगला महीपाल की तरफ आकर्षित हो गयी। तीनों खुश थे कि एक दिन...

उज्जयिनी में राजमहल के पास ही एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। वे अपने दिन बहुत ही गरीबी में गुजार रहे थे कि एक दिन उस ब्राह्मण को कल्प वृक्ष का एक फल[33] मिल गया।

ब्राह्मण ने सोचा कि वह उस फल को राजा को दे कर कुछ धन ले लेगा जिससे उसकी गरीबी दूर हो जायेगी सो वह उस फल को राजा भर्तृहरि के पास ले गया और उसके गुण बता कर उसको दे दिया।

राजा भतृहरि ने उससे वह फल ले लिया और उसको उस फल के बदले में जितना सोना वह ब्राह्मण ले जा सकता था उसको दे दिया। राजा भर्तृहरि ने वह फल अपनी सबसे प्रिय रानी पिंगला को दे दिया ताकि वह हमेशा सुन्दर और जवान बनी रहे।

रानी ने एक बार कहा भी कि या तो इसे तुम खा लो या फिर हम दोनों मिल कर इसको खाते हैं पर राजा भर्तृहरि बोले कि वह फल केवल एक आदमी लिये ही था इसलिये उसको वही खा ले।

राजा भर्तृहरि के जाने के बाद पिंगला ने महीपाल को बुलाया और वह फल उसको दे दिया ताकि उसका प्रेमी हमेशा जवान रह सके।

[33] Kalp Vriksh (Kalp tree) came out from Saagar Manthan. Whoever eats the fruit of this tree remains ever young.

महीपाल एक लखा नाम की वेश्या के पास जाया करता था सो उस फल के गुण उसको बता कर उसने वह फल उसको दे दिया ताकि वह हमेशा सुन्दर और जवान रहे।

लखा ने सोचा कि यह फल तो राजा के खाने के काबिल है मैं इसको खा कर क्या करूँगी। मैं तो वेश्या हूँ मेरी तो ज़िन्दगी ही बेकार है सो वह फल उसने राजा भर्तृहरि को दे दिया।

जैसे ही राजा ने फल की तरफ देखा तो उसकी ऑखों में ऑसू आ गये। उसको धन और प्रेम दोनों ही बेकार लगे। उसने दुनियॉ छोड़ने का विचार कर लिया पर जाने से पहले रानी से एक बार मिलना ठीक समझा।

उसने रानी से पूछा तुमने उस फल का क्या किया जो मैंने तुम्हें खाने को दिया था। रानी को किसी बात का कुछ पता नहीं था सो वह बोली "मैंने तो वह फल खा लिया।"

इस पर उसने रानी को वह फल दिखा कर कहा "पर यह तो मेरे पास है।" यह सुन कर रानी के मुँह से तो एक शब्द भी नहीं निकला। राजा भर्तृहरि ने उसी समय रानी को मरवा दिया और वह फल धो कर खा लिया।

उसके बाद बिना किसी से बात किये वह योगी बन गये। इस स्थिति में लिखा उन्होंने "वैराग्य शतक"। ऐसी मनःस्थितियों में लिखे गये उनके ये तीनों ही शतक अपने अपने मूल्यों में अद्वितीय हैं और संस्कृत साहित्य की अमूल्य रचनाऐं हैं।

जब तक कोई आदमी उन भावों को अपने दिल में महसूस न करे वह ऐसी रचना नहीं कर सकता। और ऐसे भाव जब कोई उस परिस्थिति से खुद गुजरता है तभी महसूस कर सकता है।

कुछ का कहना है कि वह अभी भी योगी बने घूम रहे हैं और कुछ का कहना है कि भगवान ने उन्हें अपने अन्दर समा लिया है।

7 सूर्य शतक चंडी शतक और भक्तिमार स्तोत्र[34]

इससे पहले तुम लोगों ने भतृहरि के लिखे हुए तीन शतकों के विषय में पढ़ा। इसी तरह की तीन पुस्तकें और हैं जो आपस में एक दूसरे से सम्बन्धित हैं और संस्कृत भाषा के साहित्य में बहुत महत्वपूर्ण और लोकप्रिय हैं। इनके लिखने वाले कवि भी बहुत महान हैं।

क्योंकि ये तीनों पुस्तकें एक दूसरे सम्बन्धित हैं इसलिये हम इन तीनों के जन्म के कारण एक साथ ही दे रहे हैं। इन तीनों के लिखने वाले क्रमशः मयूरभट्ट, बाणभट्ट और एक जैन लेखक मानतुन्गा सूरी हैं।

तुमने इन तीनों पुस्तकों के नाम तो नहीं सुने होंगे और न तुम इन तीनों कवियों को जानते होगे पर जैसा कि मैंने कहा कि इन तीनों की रचना की एक बड़ी मजेदार कहानी है इसलिये इन्हें यहाँ शामिल किया गया है। इन्हें तुम्हें पढ़ना भी जरूरी नहीं है बस यह उनके लिखने की आरम्भकी कहानी ही पढ़ लो वही तुम्हारे लिये बहुत मजेदार है।

बाणभट्ट **570–630** एडी के एक बहुत बड़े कवि हो गये हैं। इनके जीवन का कुछ हाल मानतुन्गा सूरी के "भक्तिमार सूत्र" की दो

[34] Baanbhatt. 570-630 AD. Taken from Indian Antiquary. Vol I. 1872. p 112-. https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.44339/page/n122/mode/1up

जैन टीकाओं से मिलता है। बाणभट्ट की लिखी हुई दो पुस्तकें बहुत प्रसिद्ध हैं – कादम्बरी और हर्षचरित।

ये मयूर भट्ट के समकालीन थे। मयूर भट्ट इनके ससुर थे। मयूरभट्ट की बेटी का विवाह बाणभट्ट से हुआ था। मयूरभट्ट भी उस समय के बहुत बड़े कवि थे उनका लिखा हुआ सूर्य शतक बहुत प्रसिद्ध है।

इन तीनों पुस्तकों का एक के बाद एक लिखा जाना एक संयोग और एक प्रतियोगिता है। यह एक बड़ी मजेदार घटना है। पहले दोनों कवियों ने अपने अपने इष्टदेव के लिये एक एक शतक[35] लिखा और अपनी अपनी बुराइयों से छुटकारा पाया।

दूसरी ओर मानतुन्गा सूरी एक जैन लेखक थे उन्होंने केवल चौवालीस पद लिख कर उससे अपनी परेशानी दूर कर के दिखायी।

एक बार मयूरभट्ट को अचानक कोढ़ हो गया तो भगवान सूर्य की पूजा करने से उनका यह रोग ठीक हो गया। भगवान सूर्य को प्रसन्न करने के लिये उन्होंने सूर्य शतक लिखा था।

बाणभट्ट को इस बात से बहुत जलन हुई और इस जलन की वजह से मयूर भट्ट ने अपने हाथ और पैर दोनों काट डाले और फिर अपनी इष्ट देवी चंडिका की प्रशंसा में "चंडी शतक" लिखा जिससे उनके हाथ पैर दोनों वापस आ गये।

[35] Hundred verses make a "Shatak" – Shatak means hundred.

इन दोनों पुस्तकों के बारे में यहॉ लिखना हमारा उद्देश्य नहीं है इसलिये इन पुस्तकों के बारे में हम यहॉ नहीं लिखेंगे। ये तो अपने आप में ही साहित्य की उच्चतम कृतियों में गिनी जाती हैं।

हम यहॉ उस कथा के बारे में लिखेंगे जिसकी वजह से ये दोनों शतक और यह भक्तामार स्तोत्र लिखा गया और जितना हिस्सा उसके लिखने का बाणभट्ट और मयूरभट्ट से सम्बन्धित है। और यह कथा एक जैन टीका से ली गयी है।[36]

यह बहुत पुरानी बात है कि अमरावती उज्जयिनी में मयूर नाम के एक पंडित रहा करते थे। उन्होंने शास्त्रों का बहुत अच्छा अध्ययन कर के अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था। उन्होंने राजा भोज से सम्मान भी पाया। उनके एक बेटी थी जिसकी शादी उन्होंने एक सुयोग्य वर बाणभट्ट से कर दी थी।

दोनों ही राजा भोज के दरबारी कवि थे। इतना घनिष्ट सम्बन्ध होते हुए भी दोनों एक दूसरे से जलते बहुत थे। क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि "गधे बैल घोड़े जुआरी पंडित और दुष्ट एक साथ बैठ भी नहीं सकते और बिना एक दूसरे के रह भी नहीं सकते।"

एक दिन जब वे दोनों आपस में लड़ रहे थे तो राजा भोज ने उनसे कहा कि तुम लोग दोनों काश्मीर जाओ। वहॉ भारती रहती

[36] Although the name of this commentator's name is not given, it is very probable that he lived in the beginning of the 15th century because he gives the name of Sritilak Suri, predecessor of reigning Pattdhari Gunachandra in the Vanshavali in the end of the book. Sritilak of the Abhayadev Vansh was the teacher of Rajshekhar who wrote the Prabandh Kosh in 1317.

है। वह जिसे ज़्यादा अच्छा कवि कह देंगी वही ज़्यादा अच्छा कवि होगा।[37]

सो उन दोनों ने रास्ते के लिये अपना अपना खाना लिया और काश्मीर चल दिये। जब वे माधुमतस यानी काश्मीर देश को जाने की सड़क पर आये तो वहॉ उन्होंने **500** बैल देखे जो अपने ऊपर बोझा उठाये जा रहे थे।

उनको देख कर उन्होंने अपने गाड़ी चलाने वालों से पूछा — "तुम्हें वहॉ क्या दिखायी दे रहा है।"

गाड़ी चलाने वाला बोला — "ओम" शब्द पर टीका।"

उन्होंने फिर से उस तरफ देखा तो देखा कि वहॉ तो **500** नहीं बल्कि **2000** बैल थे। यह पता चलने के बाद कि वे ओम शब्द के बारे में कोई नयी टीका ले कर जा रहे हैं उनका घमंड टूट गया।

रात हो गयी थी सो वे दोनों एक साथ कहीं सो गये।

रात को सरस्वती जी ने मयूर को जगाया और उसे एक कविता के विषय की यह लाइन दी "आकाश सौ चन्द्रमाओं से भर गया।"

वह खुद ही आधा उठा और उसने इसका यह हल दिया – "चाणूरमल्ल दामोदर के हाथ से एक थप्पड़ खा कर इतना आश्चर्यचकित रह गया कि उसने देखा कि आकाश सौ चन्द्रमाओं से भर गया है।"

[37] A journey to Kashmir and a presentation of books to Bharati (Devi Saraswati – goddess of Knowledge) is frequently mentioned as a test for poets by the Jain authors.

यही सवाल बाण से पूछा गया तो वह कुछ गुर्राया और उसने इसका यह जवाब दिया – "उस रात बहुत सारे कमल से चेहरे छत पर घूमने की वजह से ऐसा लग रहा था जैसे आकाश सौ चन्द्रमाओं से भर गया हो।"

सरस्वती देवी ने कहा — "तुम दोनों बड़े कवि हो और शास्त्र अच्छी तरह जानते हो पर बाण निम्न स्तर का कवि है क्योंकि वह गुर्रा कर बोला। मैंने तुम लोगों को ओम शब्द पर लिखी हुई वे टीकाऐं इसलिये दिखायीं कि ऐसा कौन है जिसे विद्या की देवी के ज्ञान कोष का पूरा ज्ञान हो।

यह भी कहा गया है कि किसी को यह कह कर घमंड नहीं करना चाहिये कि "इस समय का केवल मैं ही एक पंडित हूँ। दूसरे तो अज्ञानी हैं। यह अहं है। बुद्धिमत्ता की महानता तो तुलना करने से ही पता चलती है।"

इस तरह सरस्वती जी ने दोनों में सुलह करवायी। जब वे लोग उज्जयिनी के बाहरी परकोटे के पास लौट कर आये तो वे दोनों अपने अपने घर चले गये। अगले दिन वे राजा के दरबार में गये।

यह भी कहा गया है कि हिरनों का हिरन से गायों का गाय से घोड़ों का घोड़े से बेवकूफों का बेवकूफ से अक्लमन्दों का अक्लमन्द से – यानी लोगों की दोस्ती उनके गुण या दोष के एकसेपन पर ही आधारित होती है।

एक बार की बात है कि बाण की अपनी पत्नी से आपस में कुछ प्यार की खटपट हो गयी। पत्नी को थोड़ा घमंड था वह अपने घमंड को हटा नहीं पा रही थी। इस तरह काफी रात निकल गयी।

उधर उस रात मयूर ने अपनी एक नयी कविता लिखी थी वह उसे बाण को सुनाने के लिये बहुत बेचैन था। सो जैसे ही सुबह हुई वह उसे बाण को सुनाने के लिये चल दिया।

क्योंकि अभी सुबह भी पूरी तरह से नहीं हुई थी तो वह बाण के सोने वाले कमरे की खिड़की के पास खड़ा हो कर थोड़ा और समय गुजर जाने का इन्तजार करने लगा कि जब पूरी तरह सुबह हो जायेगी मैं तब घर के अन्दर जाऊँगा।

तभी उसे पति पत्नी के लड़ने झगड़ने की आवाज आयी। बाण अपनी पत्नी के पैरों पर गिरा हुआ था और उससे कह रहा था — "ओ मेरी वफादार पत्नी। मेरी उस एक गलती को माफ कर दो। अब मैं तुम्हारे ऊपर कभी गुस्सा नहीं करूँगा।"

पत्नी ने अपने पैर से उसे एक ठोकर मारी। ठोकर मारने से उसके पैर में पड़ी पायल बज उठी। मयूर जो उनकी खिड़की के नीचे खड़ा था उसके पैर की पायल की आवाज सुन कर बहुत दुखी हुआ क्योंकि उसकी बेटी ने अपने पति का अपमान किया था।

पर बाण चुप नहीं रह सका उसने तभी एक नया पद पढ़ा — "ओ पतली कमर वाली। अब रात करीब करीब बीत गयी है

खरगोश की तरह से बच कर निकल गयी है। यह दिया भी अपनी लौ झुका कर उनींदा लग रहा है।

ओ सुन्दर भौंहों वाली। तुम्हारा तो दिल भी तुम्हारे स्तनों के साथ रहते रहते पत्थर हो गया है इसलिये मुझे दुख है कि तुम मेरे अपने पैरों में गिरने के बावजूद अपने घमंड को भूल नहीं पा रहीं।"

यह सुन कर मयूर से रहा नहीं गया वह वहीं से बोला — "तुम उसे सुन्दर भौहों वाली मत कहो वह तो चन्डी है चन्डी क्योंकि इस समय वह बहुत गुस्सा है।"

अपने पिता की यह कठोर वाणी सुन कर बेटी ने अपने पिता को जिसने उसका चरित्र उजागर कर दिया था शाप दिया — "भगवान करे आप उस पान के रस के छूने से कोढ़ी हो जायें जो मेरे मुँह में है।"

कह कर उसने अपने मुँह में रखा पान बाहर थूक दिया। उसी पल से मयूर के शरीर पर कोढ़ के निशान प्रगट होने शुरू हो गये।

सुबह होने पर बाण राज दरबार पहुँचा और मयूर के बारे में पूछा पर तभी मयूर भी वहाँ आ गया उसने आते ही एक व्यंग्य पढ़ा — "वरकोढ़ी आ गया।"

राजा उसका व्यंग्य समझ गया और मयूर के शरीर पर कोढ़ के निशान देख कर उसे वापस भेज दिया कि "तुम्हें ऐसे यहाँ नहीं आना चाहिये। तुम्हें यहाँ से जाना चाहिये।"

मयूर वहॉ से चला गया और एक सूर्य देव के मन्दिर में जा कर बैठ गया और अपने इष्टदेव में अपना ध्यान लगा लिया। वहॉ बैठ कर उसने सूर्य शतक लिखा। कहते हैं कि जब उसने अपने शतक का छठा पद लिखा तभी उसके भगवान सूर्य उसके सामने प्रगट हो गये थे। मयूर ने उन्हें सिर झुकाया और कहा कि "हे भगवान मुझे इस कोढ़ से ठीक कर दो।

सूर्य भगवान बोले — "दोस्त। मैं भी अभी तक अपने पैरों के ऊपर कोढ़ का प्रभाव सह रहा हूँ जो मुझे एक शाप के कारण मिला है। मैंने रन्नादेवी[38] को जो एक घोड़ी के रूप में थी उसकी बिना इच्छा के उससे प्यार किया। पर कोई बात नहीं मैं एक पतिव्रता पत्नी के शाप द्वारा दिया गया तुम्हारा यह कोढ़ अपनी एक किरन से ठीक कर दूँगा।"

ऐसा कह कर आकाश के रत्न वहॉ से चले गये। सूर्य देव की एक किरन ने जिसने मयूर को अपने घेरे में ले लिया था मयूर का कोढ़ ठीक कर दिया। यह देख कर लोग बहुत खुश हुए। राजा ने भी उसे सम्मान दिया।

बाण तो यह देख कर बिल्कुल ही जल भुन गया। उसने अपने दोनों हाथ और पैर काट डाले। अपने दिमाग में यह पक्का वायदा कर के कि वह भी कुछ ऐसा ही कर के दिखायेगा। उसने **100** पद

[38] This Ranna Devi may be Soorya's own wife Sangyaa who left her husband because his excessive brightness to perform Tap to be able to tolerate it. In th meantime she kept her shadow named "Chhaayaa" to serve her husband. Later Sangyaa transformed herself in a mare and with the help of Soorya Dev gave birth a twins – Ashwani Kumar.

लिख कर चन्डिका की प्रशंसा की। जैसे ही उसने अपने पहले पद का छठा अक्षर बोला कि चंडिका जी उसके सामने प्रगट हुईं और उसके चारों हाथ पैर ठीक कर दिये।"

शेष बची हुई कथा के अनुसार जैन लोग जो यह दिखाना चाहते थे कि उनके महावीर जी भी ऐसा चमत्कार कर सकते हैं अपना नाम ऊँचा करने के लिये मानतुन्गा सूरी को राज सभा में ले कर आये। इस योग्य आदमी ने अपने आपको बयालीस लोहे की जंजीरों में बॅधवा कर अपने आपको एक घर में बन्द करवा लिया।

इसके बाद उसने "भक्तिमार स्तोत्र" के चौवालीस पद लिखे और अपने आपको उन जंजीरों से मुक्त किया। कहते हैं कि उसके हर पद पर उसकी एक जंजीर टूटती जाती थी। यह चमत्कार दिखा कर उसने राजा भोज को जैन धर्म स्वीकार करने पर मजबूर कर लिया था।

यहॉ एक और बात जोड़ी जा सकती है कि कुछ जैनियों के अनुसार मानतुन्गा सूरी तीसरी शताब्दी के आरम्भ में था। और यह हमें मालूम है कि मयूरभट्ट और बाणभट्ट दोनों चार शताब्दी बाद हुए।

मध्यकालीन शैली की लोक कथाओं की पुस्तकें

अभी तक हमने तुम्हें कुछ ऐसी पुस्तकों के आरम्भ की कहानियॉ बतायीं जिसमें एक ही कहानी थी और ये पुस्तकें लोक कथाओं की पुस्तकें भी नहीं थीं।

ये लोक कथाऐं पहले बिखरे हुए रूप में थीं और फिर बाद में इन्हें एकत्र कर के संगठित रूप में लिखा गया – यानी **2500** वर्ष पूर्व से।

इनमें से पहला संग्रह जो बिखरे हुए रूप में मिला था वह है यूनान का "ईसप की कहानियॉ"। ये कहानियॉ नीति सिखाने के लिये सुनायी गयी थीं। दूसरा संग्रह भी बिखरे हुए रूप में मिलता है वह है भारत की "जातक कहानियॉ" का जो तीसरी शताब्दी बीसी का बुद्ध जी की कहानियों का है। इन दोनों की कोई मूल कहानी नहीं है।

तीसरा संग्रह भारत की पंचतन्त्र की कहानियों का है जिसे विष्णु शर्मा एक राजा के पुत्रों को होशियार बनाने के लिये सुनाता है। इस समय में पाया जाने वाला संग्रह **200** बीसी का मिलता है। इस संग्रह की एक विशेषता है और इसकी वह विशेषता है इसके लिखने की शैली। ऐसी शैली में लिखी जाने वाली यह पहली पुस्तक है।

इस शैली में एक आधारभूत कहानी होती है और फिर उसी से उस पुस्तक की सारी कहानियॉ निकलती हैं। यह शैली भारत देश

की इस पुस्तक से आरम्भ हो कर और देशों में भी फैल गयी क्योंकि इसके बाद फिर कई पुस्तकें इस शैली में लिखी हुई मिलती हैं।

लोक कथाओं की इस शैली में लिखी हुई कुछ पुस्तकें 17वीं शताब्दी तक पायी जाती हैं। मध्यकालीन समय में इटली से इस शैली में तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं। एक पुस्तक "इल डैकामिरोन" थी दूसरी पुस्तक "फ़ेसशस नाइट्स औफ स्ट्रापरोला" थी और तीसरी पुस्तक "इल पैन्टामिरोन" थी। हम यहाँ तुम्हें तीनों पुस्तकों की मूल कथा के बारे में बतायेंगे।

ऐसी पुस्तकों में से अब हम कुछ उन्हीं प्रकार की पुस्तकों की चर्चा करेंगे जिनमें यह शैली अपनायी गयी थी। ऐसी कई पुस्तकें हैं तो लो पढ़ो उन पुस्तकों की आधारभूत कहानियाँ क्योंकि वही आधारभूत कहानियाँ उस पुस्तक के आरम्भ का कारण बनी —

8 पंचतन्त्र[39]

लोक कथाओं का पहला संग्रह यूनान के ईसप की कहानियों का[40] और दूसरा संग्रह बुद्ध जी की जातक कथाओं का[41], और तीसरा विशद संग्रह भारत की पंचतन्त्र की कहानियों का हैं जो पंडित विष्णु शर्मा ने मूल रूप से संस्कृत में लिखी थीं। बौद्ध लोगों ने इनको पाली भाषा में भी लिखा है।

इस संग्रह का लेखन काल ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी, **300–200** बीसी, के लगभग का बताया जाता है। ये सब कथाऐं पशु पक्षियों की हैं और पुरानी लोक कथाओं पर आधारित हैं।

और क्योंकि यह भारत का सबसे अधिक अनुवादित लोक कथा संग्रह है इसलिये इसकी कथाऐं कई दूसरे देशों की लोक कथाओं में भी मिल जाती हैं।

पंचतन्त्र की ये कथाऐं पंडित विष्णु शर्मा ने क्यों लिखी थीं। अब तुम कहोगे कि कहानियॉ क्यों लिखी जाती हैं पढ़ने के लिये सुनाने के लिये न। सो उसने भी ये कहानियॉ ऐसे ही लिखी होंगी।

पर ऐसा नहीं है। ये कहानियॉ एक खास उद्देश्य से लिखी गयी थीं। और वह उद्देश्य क्या था? वही तो देखना है।

---

[39] Panchtantra stories.

[40] Of 5th century BC. Scattered 584 tales. They were collected three centuries later. Now they are available at : http://mythfolklore.net/aesopica/perry/index.htm

[41] Jatak Stories – 547 Buddha's stories available. Dated 300 BC – 400 AD

लोगों का विश्वास है कि ये कहानियॉ विश्व भर में **50** भाषाओं में **200** रूपों में पायी जाती हैं। इसके **25** रूपान्तर तो अकेले भारत में ही पाये जाते हैं। ये कहानियॉ भारत में बहुत मशहूर हैं।

भारत का अधिकतर हर बच्चा इसकी कम से कम एक कहानी तो सुन कर बड़ा होता ही है। हालॅकि यह जरूरी नहीं है कि वह यह भी जानता हो कि वह कहानी जो वह सुन रहा है वह पंचतन्त्र की कहानियों से ली गयी है या नहीं।

हितोपदेश[42], भारत की लोक कथाओं का एक और संकलन, की कहानियॉ भी इसी से प्रेरित हो कर लिखी गयी हैं।

11वीं शताब्दी तक इस संग्रह की कई कहानियॉ फारस, अरब, यूनान देश होते हुए यूरोप के कई देशों की कहानियों में जा कर मिल गयीं और फिर **16**वीं शताब्दी तक तो ये कहानियॉ यूरोप की कई भाषाओं में मिलने लगी थीं। ये कहानियॉ इस्लाम आने से पहले छठी शताब्दी में ईरान में पहलवी भाषा में भी पायी जाती हैं। **18**वीं शताब्दी से पहले पहले इसके कम से कम **20** अंग्रेजी अनुवाद हो चुके थे।

इसकी कहानियॉ बहुत सारे विषयों पर हैं। इन कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें एक कहानी में से दूसरी कहानी

[42] Hitopadesh Tales were written by Narayan. Durgasingh translated in Kannad language in 1031 AD, Poornbhadra has translated them in 1199 AD.

निकलती जाती है जैसे फारस की अरेबियन नाइट्स[43] की कहानियों में एक कहानी में से दूसरी कहानी निकलती है।

हालॉकि अरेबियन नाइट्स की सारी कहानियॉ एक में से दूसरी नहीं निकलती हैं उनमें से कुछ अलग से भी आरम्भ होती हैं और अकेली ही समाप्त हो जाती है पर फिर भी ऐसी उसमें बहुत सी कहानियॉ हैं।

इसके थोड़े से परिचय के बाद ही ये कहानियॉ पॉच हिस्सों में बॅटी हुई हैं इसी लिये इसका नाम पंचतन्त्र है। इसके हर हिस्से की पहली एक कहानी एक मुख्य कहानी है जिसमें से कभी कभी **4–5** स्तर नीचे तक ये कहानियॉ चलती चली जाती हैं।

एक राजा था जिसके तीन बेटे थे। वह उन्हें छह महीने के अन्दर अन्दर ज्ञान और अक्लमन्दी सिखवाना चाहता था। विष्णु शर्मा ने यह बीड़ा उठाया और उनको रोचक कहानियों के द्वारा ज्ञान और अक्लमन्दी सिखायी। पर वे कहानियॉ केवल उन्हीं तीन छोटे राजकुमारों को पढ़ाने के काम नहीं आयीं बल्कि वे बच्चे बूढ़े सबको ज्ञान दे पायीं।

सो उन बच्चों को पढ़ाने के बहाने विष्णु शर्मा ने इन कहानियों को लिखा था। इनको उन्होंने संस्कृत में लिखा था पर फिर बाद में ये कहानियॉ कई भाषाओं में अनुवादित हो कर बहुत सारे देशों में

[43] "Arabian Nights" or "One Thousand and One Nights" from Persian Empire. At one time Persian Empire was very large – from far Western part of India to Iran, Iraq, Arab and even up to a part of Ethiopia in Eastern Africa, so no wonder if these stories were told and heard in these countries too.

पहुँच गयीं। तो यह थी पंचतन्त्र की कहानियों की आरम्भ की वजह। इसलिये लिखी गयीं थीं वे।

9 कथा सरित् सागर

11वीं शताब्दी एडी में एक कहानी संग्रह लिखा गया। वह था कथा सरित् सागर[44]। यह संग्रह पंडित सोमदेव भट्ट[45] ने संस्कृत में लिखा था।

इस पूर्ण पुस्तक का अंग्रेजी में केवल एक ही अनुवाद मिलता है जो **1880–1884** में प्रकाशित किया गया था।[46] इसमें **18** किताबें हैं, **124** अध्याय हैं और **22** हजार श्लोक हैं।

इससे पिछली कहानी "बृहत् कथा" में तुमने पढ़ा कि गुणाढ्य ने सात कहानियॉ कणभूति पिशाच से सुन कर पैशाची भाषा में लिखीं।

फिर उनको जानवरों को सुनाने के बाद जब वह उनको जला रहा था कि तभी प्रतिष्ठान पुरी का राजा सातवाहन वहॉ आ गया और उसने उसकी आखिरी सातवीं कहानी, **700** हजार श्लोक की

---

[44] Kathaa Sarit Saagar – written in Sanskrit by a Kashmeeri Shaalv Braahman Pandit Somdev Bhatt during 11th century. This work was written to entertain Queen Suryamati, the wife of King Anantdev of Kashmeer. It consists of 18 books of 124 chapters and approximately 22,000 Shlok along with some prose. This is part of a larger collection titled "Brihatkatha" which is the largest collection of the stories in the world. It includes Panchtantra stories (in its Chapter 10), and Betaal Pachcheesee (in its Chapter 12).

[45] Pandit Somdev Bhatt wrote "Betaal Pachcheesee" also. It is a part of Kathaa Sarit Saagar

[46] By Charles Henry Towney in 2 volumes, 1300 pages. 1880 and 1884. Available at : https://archive.org/details/kathsaritsga01somauoft/page/n5/mode/2up AND https://archive.org/details/kathsaritsga02somauoft
Its another translation by NM Penzer is available in 10 vols - Vol I, Vol II, Vol III, Vol IV, Vol V, Vol VI, Vol VII, Vol VIII, Vol IX, Vol X at the Internet Archive. It is based on Tawnet's translation but greatly expanded

जो 100 हजार पन्नों में लिखे गये थे, जलाने से रोक ली थी पर उससे पहले की छह कहानियॉ तो वह जला ही चुका था।

यह कथा सरित् सागर उसी बृहत् कथा की बची हुई किताब की सातवीं कहानी से ली गयी कहानियों का संग्रह है। इसके तीन संग्रह मिलते हैं – कथा सरित् सागर, बृहत् कथा मंजरी और बृहत् कथा श्लोक संग्रह।

पर इन तीनों में से एक भी संग्रह बृहत् कथा से सीधे नहीं लिया गया।

इस समय संस्कृत में लिखे हुए भी इसके केवल दो रूप[47] मिलते हैं – पंडित सोमदेव भट्ट का लिखा कथा सरित् सागर और क्षेमेन्द्र की लिखी बृहत् कथा मंजरी। दोनों काश्मीरी संस्कृत में लिखे हुए हैं।

इसकी मूल कथा राजा उदयन और वासवदत्ता[48] के बेटे नरवाहनदत्ता की कहानी है। इस किताब की बहुत सारी कहानियॉ इसी कहानी के चारों ओर घूमती रहती हैं और इसे कहानियों का सबसे बड़ा संग्रह बनाती हैं।

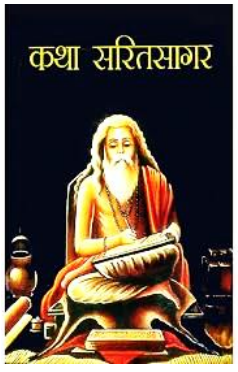

कथा सरित् सागर की 10वीं किताब में पंचतन्त्र की कहानियॉ हैं और इसकी 12वीं किताब में बेताल पच्चीसी की कहानियॉ दी हुई हैं जिसे हम तुम्हें आगे बतायेंगे।

[47] Translated for the word “Versions”

[48] King Udayan was the King of Kaushaambee. Read about him in the Book “Hamare Mahan Log” written by Sushma Gupta in Hindi language.

10 विक्रम बेताल की कथाऐं[49]

बच्चों तुमने सबने विक्रम बेताल की कथाऐं तो पढ़ी ही होंगी। सारी नहीं तो काम से कम कुछ तो पढ़ी ही होंगी। ये कथाऐं सबसे पहले कथा सरित्सागर के 12वें अध्याय में संस्कृत में लिखी गयी थीं जिसे सोमदेव भट्ट ने 11वीं शताब्दी में लिखा था।

आज यह जान लो कि ये कथाऐं क्यों कही गयीं।

राजा भर्तृहरि के जिन्होंने तीन शतक लिखे थे राज्य छोड़ कर जाने के बाद उनके छोटे भाई विक्रमदित्य राजा बन गये। भर्तृहरि ने तो खुद ने ही तीन शतक लिखे पर विक्रमदित्य भी कम प्रतापी राजा नहीं थे। उनकी अपनी और उनके सिंहासन की कोई कम कहानियॉ प्रसिद्ध नहीं हैं।

इन चार धार्मिक पुस्तकों का, यानी रामायण महाभारत गीता और भागवत पुराण क आरम्भ बताने के बाद भी अभी इनमें से एक और पुस्तक के बारे में तुम्हें कुछ बताना बाकी रह गया है। हमने तुम्हें बताया था कि हिन्दू धर्म में 18 महापुराण हैं जो सारे ही महर्षि वेद व्यास जी के लिखे माने जाते हैं।

उनमें से एक महापुराण श्री मद्भागवत पुराण में श्रीकृष्ण के जीवन की पूरी कहानी दी हुई है जिसको सुख सागर भी कहते हैं।

---

[49] Vikram Betal Stories. Read them in English on the Web Site :
http://www.sushmajee.com/shishusansar/stories-vikram-vaitaal/index-vaitaal.htm
Other information is also taken from the same Web Site.

जिसके बारे में हम तुम्हें बता चुके हैं कि वह क्यों लिखा गया था। उन्हीं 18 महापुराणों में से अब हम एक दूसरे महापुराण के बारे में तुम्हें बताना चाहते हैं।

हालॉकि हम यहॉ उस महापुराण के बारे में यह बताने नहीं जा रहे हैं कि वह पुराण क्यों लिखा गया पर उस महापुराण में इन कथाओं का जिक्र आता है इसलिये उसका जिक्र करना यहॉ उचित समझा गया।

तो बच्चों विक्रम बेताल की ये कथाऐं ऐसे ही नहीं कही गयीं। इनके कहने की भी एक वजह थी। क्या तुम वह वजह जानते हो? और अगर नहीं जानते हो तो क्या वह वजह जानना चाहोगे जिसकी वजह से ये सब कहानियॉ कही गयीं? हमें आशा ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि तुम वह वजह जरूर जानना चाहोगे। तो लो पढ़ो वह वजह।

ये कहानियॉ महाराजा विक्रमादित्य और एक बेताल[50] के बीच कही सुनी गयी हैं। पर इन कहानियों के कहने की वजह जानने से पहले अगर तुम राजा विक्रम के बारे में कुछ जान लो तो ज़्यादा अच्छा रहेगा।

राजा विक्रमादित्य[51] या विक्रम का नाम भारत में बहुत मशहूर और लोकप्रिय है। उनके बारे में उनकी बहुत सारी कहानियॉ भी

[50] Betaal or Baitaal or Vetaal or Vaitaal is a kind of Ghost (or vampire in Western literature).
[51] Read about Vikram on the Web Site :
http://www.sushmajee.com/reldictionary/sketches/sketches-n-z/sk-vikram-1.htm

उतनी ही मशहूर ओर लोक प्रिय हैं। ये उज्जैन के राजा थे और ईसा पूर्व पहली शताब्दी में थे।

तुमने बादशाह अकबर के दरबार के नौ रत्नों के नाम तो सुने ही होंगे जिनमें बीरबल और तानसेन का नाम सबसे ज़्यादा मशहूर है। इसी तरह राजा विक्रमादित्य के दरबार में भी नौ रत्न थे।

असल में बादशाह अकबर ने यह परम्परा राजा विक्रम से ही ली थी। राजा विक्रमादित्य और उनके नौ रत्नों के नामों से भी सैकड़ों कहानियॉ जुड़ी हुई हैं।

इसके अलावा हम लोग विक्रम संवत भी इस्तेमाल करते हैं वह भी इन्होंने ही चलाया था पर बस आश्चर्य की बात यह है कि इनसे जुड़ी हुई इन कहानियों और विक्रम संवत के अलावा इनके होने का और कोई सबूत नहीं मिलता।

विक्रम और बेताल की कथाऐं जो तुम लोग आज पढ़ते या सुनते हो वे "बेताल पच्चीसी" नाम की पुस्तक में पायी जाती हैं।

इन कहानियों का जिन्हें हम आज पढ़ते हैं असली स्रोत बृहत् कथा[52] है। पर बृहत् कथा क्योंकि सारी नहीं मिलती उसका केवल एक भाग ही मिलता है "कथा सरित् सागर"[53] के रूप में, तो ये कहानियॉ उसी कथा सरित् सागर की **12**वीं पुस्तक का एक हिस्सा हैं।

[52] Read about Brihat Kathaa given earlier in this book.

[53] Read about Kathaa Sarit Saagar just before this in this book.

अब क्योंकि बृहत् कथा का स्रोत दैवीय है इसलिये इन कहानियों का स्रोत भी दैवीय ही समझना चाहिये।

आश्चर्य की एक और बात यह भी है कि "बेताल पच्चीसी" की इन **25** कहानियों के अलावा विक्रम बेताल की नौ कथाऐं हिन्दू धर्म के **18** महापुराणों में से एक भविष्य पुराण[54] के तीसरे हिस्से में भी पायी जाती हैं। उसकी सारी नौ कथाऐं इन **25** कथाओं से नामों और सन्दर्भ में बिल्कुल अलग हैं।

इस तरह से विक्रम बेताल की कथाओं के दो सैट हो गये – एक तो भविष्य पुराण में पाया जाने वाला नौ कथाओं का सैट और दूसरा कथा सरित सागर में **25** कथाओं का पाया जाना वाला सैट। यहॉ हम तुमको दोनों सैटों की आरम्भ की कहानी बतायेंगे।

बेताल पच्चीसी की 25 कथाऐं

बेताल पच्चीसी करीब **1000** साल पहले महाकवि सोमदेव भट्ट[55] ने संस्कृत में लिखी थी। क्योंकि ये **25** कहानियॉ हैं और एक बेताल ने कही हैं इसी लिये इनको बेताल पच्चीसी का नाम दिया गया है।

---

[54] Read these nine stories of Bhavishya Puraan in English on the Web Site : http://www.sushmajee.com/hindupuraan/9bhavishya/3-prati/7-vikram-1.htm
Read them in Hindi either in Bhavishya Puraan published by Gita Press, Gorakhpur, or in the Book "Vikram Betaal Ki Kahaniyan: Puraan Se", by Sushma Gupta in Hindi language.
Bhavishya Puraan says that "Vikramaaditya's tales are found in Skand Puraan, Brihat Kathaa, Sinhaasan Batteesee, Katha Sarit Saagar, Purush Pareekshaa etc books.

[55] The Great Poet Somdev Bhatt has written another folktales book "Katha Sarit Saagar" in 11th century still based on older materials now lost. Read about it just before this in this book.

ये सब कहानियॉ एक बेताल ने राजा विक्रमादित्य से कही थीं और ये सारी कहानियॉ अपनी अक्लमन्दी के लिये बहुत मशहूर हैं इसी लिये आज भी ये कई भाषाओं में पढ़ी जा सकती हैं। आजकल ये कथाऐं हीं चलन में हैं इसलिये लोग इन्हीं को जानते हैं इन्हीं को पढ़ते और कहते सुनते हैं।

इसकी भी आरम्भ की एक मूल कहानी है जिसके सन्दर्भ में ये सब कहानियॉ कही गयी हैं। यहॉ हम तुम्हारे लिये इन प्रचलित कहानियों के आरम्भकी ही कहानी दे रहे हैं।

राजा विक्रमादित्य कौन थे

क्योंकि ये कहानियॉ राजा विक्रमादित्य की है तो पहले हम यह जान लें कि यह राजा विक्रमादित्य थे कौन। राजा विक्रमादित्य उज्जयिनी[56] के राजा थे।

ये गुप्त साम्राज्य के खत्म होने के बाद आये और अपने राज्य के **14**वें साल में देहली से राज कर रहे राजा शकादित्य को जीत कर वहॉ के राजा बन गये पर उनकी राजधानी उज्जयिनी ही रही।

राजा शकादित्य को हराने के बाद लोग इनको शकारि के नाम से भी पुकारने लगे। शकारि माने शक लोगों के दुश्मन।

इनके राज दरबार के नौ रत्न थे – वैद्य धनवन्तरि, क्षपनक, अमर सिंह, वैताल भट्ट, वराहमिहिर ज्योतिषी जिसने राजा

[56] Ujjayinee or Avantee is present day Ujjain in Madhya Pradesh

विक्रमदित्य के बेटे की मृत्यु की भविष्यवाणी की[57], वररुचि एक साहित्यिक आदमी, शंकु भट्ट, घटकरपर और महाकवि कालीदास।

इनके नाम से विक्रम संवत भी चलता है जिसे हम आज भी इस्तेमाल करते हैं। ये प्रतिष्ठानपुर[58] के राजा शालिवाहन या सातवाहन[59] के साथ लड़ते हुए मारे गये थे।

2000 साल से भी पहले उज्जयिनी में एक गन्धर्वसेन[60] नाम के राजा के घर में एक राजकुमार ने जन्म लिया जिसका नाम विक्रमादित्य या विक्रम रखा गया। राजा गन्धर्वसेन के चार रानियॉ थीं जिनसे उनके छह बेटे थे। उनकी सब रानियॉ एक दूसरी से ज़्यादा ताकतवर और अक्लमन्द थीं।

कुछ समय बाद गन्धर्वसेन की मृत्यु हो गयी और उनका सबसे बड़ा बेटा शंक राजा बन गया पर उनके छोटे बेटे विक्रमदित्य ने उसको तुरन्त ही मार दिया और फिर भर्तृहरि राजा बन गये। इससे लोग विक्रम को "वीर" कहने लगे यानी "वीर विक्रमादित्य"।[61] धीरे धीरे भर्तृहरि का राज्य बहुत बढ़ गया।

---

[57] Read this story in "Jo Hona Tha Ho Ke Raha" book written by Sushma Gupta in Hindi.

[58] Present Paithan in Maharashtra

[59] All Puraan (Matsya, Vaayu, Brahmaand, Bhaagvat, Vishnu) state that Saatvaahan Dynasty started in 1st century BC. And Vikram was killed whle fighting with him. This shows that Vikram was also in those times. And since he was in those times, Kalidas, Vararuchi, Varaahmihir etc (nine gems of his court) must also be in those times. But it is not so. Their dates vary from one source to another.

[60] According to Kathaa Sarit Saagar Vikram's father's name was Mahendraaditya of the Parmaar Dynasty during 1st century BC. However general Indian history does not place any Vikramaaditya during this period.

[61] Ananta's heroic poem *Viracharita* (12th century CE) mentions Shalivahan as a rival of the king Vikramaditya of Ujjain. According to it, Shalivahana defeated and killed Vikramaditya, and then ruled from Pratishthanpur. Shudraka was a close associate of Shalivahan and his son Shakti Kumar.

विक्रम के बाबा यानी देवराज इन्द्र ने अपने दोनों पोतों भर्तृहरि और विक्रम को बुलाया और उनको उनके भविष्य के लिये सब बातों की शिक्षा दी। दोनों भाई आपस में अक्सर राजा के कर्तव्यों पर बात किया करते थे।

राजा भर्तृहरि के राज्य छोड़ कर जाने के बाद जब विक्रम राजा बन गया तो उसने राजा के सारे कर्तव्य निभाये। जब वह **30** साल का था तो उसके कई पत्नियों से कई बेटे थे। वह अपने सबसे बड़े बेटे के अलावा क्योंकि वह उसका वारिस था अपने दूसरे सब बेटों को बहुत प्यार करता था।

एक बार राजा विक्रम ने सोचा कि उसको छिपे रूप से अपने राज्य की कुशलता का पता लगाना चाहिये सो उसने अपने दूसरे बेटे धर्मध्वज को अपने साथ लिया, एक साधु का रूप रखा और अपना राज्य देखने निकल पड़ा।

कुछ समय बाद ही वह अपने इस वेष से तंग आ गया तो वह अपनी राजधानी लौटने के बारे में सोचने लगा।

उधर राजा विक्रम के जाने से राज सिंहासन खाली हो गया तो देवराज इन्द्र ने पृथ्वीपाल नाम का अपना एक बड़े साइज़ का

Later, Shudraka allied with Vikramaditya's successors and defeated Shakti Kumara. This legend is full of mythological stories.

आदमी[62] उज्जयिनी की रक्षा के लिये भेज दिया। वह दिन रात उज्जयिनी की रक्षा करता था।

एक साल के अन्दर अन्दर जब विक्रम आधे कपड़े पहने घूमते घूमते थक गये तो वह अपने बेटे के साथ उज्जयिनी वापस आ गये।

जब वे दोनों उज्जयिनी वापस आये तो आधी रात हो रही थी। जब वे अपने शहर में घुस रहे थे तो वह बड़े साइज़ का आदमी उठा और उसने विक्रम से पूछा — "तुम कौन हो और कहाँ जा रहे हो?"

विक्रम बोले — "मैं राजा विक्रमादित्य हूँ और अपने शहर में जा रहा हूँ। तुम कौन होते हो मुझे रोकने वाले?"

पृथ्वीपाल बोला — "देवताओं ने मुझे इस शहर की रक्षा करने के लिये भेजा है। और अगर तुम वाकई राजा विक्रमादित्य हो तो पहले मुझसे लड़ो तभी तुम इस शहर में अन्दर घुस सकते हो।"

पृथ्वीपाल की तो मुट्ठी भी तरबूज जितनी बड़ी थी और विक्रम तो उसके पेट तक ही आ पा रहा था फिर भी दोनों में लड़ाई शुरू हुई। विक्रम की खुशकिस्मती से पृथ्वीपाल का बाँया पैर फिसल गया और उन्होंने उसका दाँया पैर पकड़ लिया।

[62] Translated for the word "Giant". This story is not mentioned in any Sanskrit version except that Lal writes it in his translation and has a close analog in the "Thity-two Tales of the Throne of Vikramaiditya" ("Sinhaasan Dwaatrinshikaa" in Sanskrit and "Sinhaasan Batteesee" in Hindi). Richard Burton includes it in in his introduction.

विक्रम के बेटे ने अपने पिता की सहायता की और विक्रम ने उसकी दोनों आँखों पर अपने अँगूठे रख कर उसको अन्धा कर देने की धमकी दी।

पृथ्वीपाल बोला — "ठीक है तुमने मुझे हरा दिया तो मैं तुम्हारी ज़िन्दगी बख़्शता हूँ।"

यह सुन कर विक्रम गुस्से से मुस्कुराता हुआ बोला — "तुम पागल तो नहीं हो गये। तुम यह ज़िन्दगी की भीख किसको दे रहे हो? अगर मैं चाहता तो तुम्हें अभी मार भी सकता था।"

पृथ्वीपाल बोला — "ओ उज्जयिनी के राजा, इतना घमंड मत करो। मैं तो तुमको तुम्हारी मौत से ही बचाने आया हूँ। मैं तुमको एक कहानी सुनाता हूँ सुनो और फिर उसको सुन कर ही कुछ निश्चय करो। इससे तुम बिना किसी रोक टोक के पूरी धरती पर राज कर पाओगे और फिर शान्ति से मर सकोगे।"

और तब पृथ्वीपाल ने विक्रम को यह कहानी सुनायी।

"तीन आदमी एक ही राशि के एक ही चन्द्र नक्षत्र[63] में और एक ही समय में पैदा हुए।

तुम पहले आदमी थे जो एक राजघराने में पैदा हुए। दूसरा एक तेली के घर में पैदा हुआ। पर वह तीसरे आदमी के हाथ से मारा

[63] Translated for the word "Sign". As you might be knowing that the Earth goes around the Sun and its path is divided into 12 Signs – Aries, Taurus, Gemimi etc…. Chandra Nakshatra means Lunar House or Constellation – they are 27 in number. This means that three people were born in the same Sign, same Chandra Nakshatra and at the same time.

गया। वह तीसरा आदमी एक योगी है जो दुर्गा देवी को खुश करने के लिये सबको मार देता है।

उस योगी ने उस तेली के बेटे को मार कर मिमोसा के एक पेड़ से उलटा लटका दिया है और अब वह तुमको मारने का प्लान बना रहा है। उसने अपने बच्चे को भी मार दिया है।"

विक्रम ने आश्चर्य से पूछा — "पर वह तो योगी है उसके बच्चा कहॉ से आया?"

पृध्वीपाल बोला — "वही तो मैं तुमको अब बताने जा रहा हूॅ। जब तुम्हारे पिता गन्धर्वसेन ज़िन्दा थे तो उनके राज में एक बार उनके दरबारी लोग एक जंगल में आनन्द मना रहे थे कि उन्होंने जमीन में से एक सिर बाहर निकलता हुआ देखा।

उसके सारे शरीर पर सफेद चीटियॉ चिपकी हुई थीं और बहुत तरह के कीड़े मकोड़े उसके चेहरे पर रेंग रहे थे। उसके उलझे हुए बालों में बिच्छू घूम रहे थे। पर उस साधु के ऊपर उन सबका कोई असर नहीं था। वह केवल एक कॉटे वाली झाड़ी का धुॅआ सूॅघ रहा था।

तुम्हारे पिता उस साधु को देख कर उससे बहुत प्रभावित हुए और बार बार उसकी तारीफ करने लगे।

वह उससे इतने ज़्यादा प्रभावित थे कि उन्होंने अपने दरबार में आ कर यह घोषणा की कि जो कोई भी उस साधु को उनके दरबार में लायेगा उसके **100** सोने के सिक्के इनाम में मिलेंगे।

उस शहर की वसन्तसेना नाम की एक वेश्या ने भी यह घोषणा सुनी। वह अपनी सुन्दरता और बोलने की होशियारी के लिये बहुत मशहूर थी। वह दरबार में आयी और उसने हाथ के एक कड़े के लिये उस साधु को और उसके बच्चे को उसी के कन्धे पर लाने का वायदा किया।

वसन्तसेना सीधी जंगल गयी तो उसने उस साधु को वहाँ प्यास गर्मी और ठंड से बेहोश पाया। उसने आग जला कर उसके लिये कुछ मीठा बनाया। उसने उसको उसके होठों से छुआया तो उसने उसको बड़े स्वाद से खाया।

उसने ऑखें खोल कर देखा तो उसके सामने तो एक स्त्री खड़ी थी। उसने उससे पूछा — "तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रही हो?"

वसन्तसेना तुरन्त बोली — "मैं एक देवता की बेटी हूँ और अब इस जंगल में रहने आयी हूँ।"

योगी ने उसकी झोंपड़ी के बारे में पूछा और फिर उसके साथ रहने चला गया। वह उसको अपना घर दिखा कर बोली कि उसको यह सब उसकी तपस्या की वजह से मिला है। योगी उसके घर में एक मामूली आदमी की तरह से रहने लगा।

बाद में वसन्तसेना ने उससे गन्धर्व रीति[64] से शादी कर ली। समय आने पर उनके एक बच्चा भी हो गया।

एक दिन वसन्तसेना ने उससे तीर्थ यात्रा पर चलने के लिये कहा ताकि वह अपने किये पापों का प्रायश्चित कर सके। वह तैयार हो गया और वसन्तसेना के पीछे पीछे चल दिया। उस यात्रा में वे तुम्हारे पिता राजा गन्धर्वसेन के दरबार में भी आये।

वह बच्चा उस योगी के कन्धे पर बैठा था। लोगों ने वसन्तसेना को तुरन्त ही पहचान लिया और उससे बहुत सारे सवाल पूछे।

योगी उनकी सब बातें सुन रहा था। उसको पता चल गया कि उन लोगों ने उसके साथ यह सब उसके तप का फल नष्ट करने के लिये किया था। उसने उन सबको कोसते हुए अपने बच्चे को लिया और इसका बदला लेने के लिये फिर से तप करना शुरू कर दिया।

उसकी प्रार्थना सुन ली गयी तो सबसे पहले तो उसने तुम्हारे पिता को मारा। उसके बाद उसने तुम्हारे और तुम्हारे भाई के बीच दुश्मनी पैदा की और अब वह तुमको मारने का प्लान बना रहा है।

अब उसका प्लान यह है कि वह एक राजा और उसके बेटे को दुर्गा देवी को भेंट चढ़ायेगा। यह कर के वह फिर सारी दुनियॉ के ऊपर राज कर पायेगा।

---

[64] There are eight types of marriage ceremonies in Hindu religion. Gandharv system is one of them. Whatever marriage is performed with the free will of bride and groom, that is called Gandharv Vivaah. It is like the modern-day love marriage. Here the bride and the bridegroom may marry even secretly without the knowledge of their parents. It is not regarded to be a right kind of marriage as it is against the will of the parents so it is regarded an inferior kind of marriage. See the Web Site : http://www.sushmajee.com/reldictionary/dictionary/page-V-X/vivaah.htm

पर क्योंकि मैंने तुमको बचाने की कसम खायी है इसलिये अब तुम मेरी बात ध्यान से सुनो। जो जंगल में रह रहा हो उस पर कभी विश्वास मत करना और जो भी तुमको मारने की कोशिश करे उसको तुम मार देना।"

अचानक पृथ्वीपाल चुप हो गया और वहॉ से गायब हो गया। और विक्रम और उसका बेटा अपने शहर में चले गये।

विक्रम की बेताल से मुलाकात

जब विक्रम अपनी जासूसी से लौट कर आया था तो वसन्त का मौसम चल रहा था। आने के बाद उसने अपने राज्य को बढ़ाने पर ध्यान दिया।

एक दिन ऐसा हुआ कि विक्रम अपने दरबार में बैठा हुआ था कि एक नौजवान व्यापारी मालदेव जो उज्जयिनी में नया नया आया था उसके दरबार में आया।

उसने राजा के हाथ में एक फल दिया। फिर उसने एक छोटा सा कालीन बिछाया उस पर बैठ कर **15** मिनट पूजा की और फिर वहॉ से चला गया।

जब वह वहॉ से चला गया तो विक्रम ने सोचा "हो सकता है कि यही वह आदमी हो जिसके बारे में वह बड़े साइज़ का आदमी बात कर रहा था।" यही सोच कर उसने वह फल नहीं खाया और

उसको अपने घर की देखभाल करने वाले को सॅभाल कर रखने के लिये दे दिया।

वह नौजवान व्यापारी रोज उसके दरबार में आता था और उसको वैसा ही एक फल रोज दे कर चला जाता था और राजा भी उस फल को अपने घर की देखभाल करने वाले को सॅभाल कर रखने के लिये दे देता था।

एक दिन राजा अपनी घुड़साल देखने के लिये गया हुआ था कि उसी समय वह नौजवान व्यापारी उसके दरबार में आया पर विक्रम के लोगों ने कहा कि राजा साहब अपनी घुड़साल में हैं तो वह उससे मिलने के लिये वहीं चला आया और फिर उसको वैसा ही फल दिया। विक्रम खेल खेल में उसको उछालने लगा।

उछालते उछालते इत्तफाक से वह फल नीचे गिर पड़ा। एक बन्दर उसको उठा कर ले गया और उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले। उस फल में से एक लाल निकल पड़ा।

विक्रम उस लाल को देख कर आश्चर्य में पड़ गया और उससे पूछा — "तुमने मुझे इतना धन क्यों दिया?"

मालदेव बोला — "राजन यह हमारे धर्म ग्रन्थों में लिखा है कि राजा, आध्यात्मिक गुरू, जज, नौजवान लड़कियॉ और वे बड़ी स्त्रियॉ जिनकी बेटी से हम शादी कर सकते हैं, इन सभी लोगों से मिलने खाली हाथ नहीं जाना चाहिये।

पर आप केवल एक ही लाल की बात क्यों कर रहे हैं। मैंने तो आपको बहुत सारे फल दिये हैं और उन सबमें एक एक लाल है।"

यह सुन कर विक्रम ने घर के रखवाले को पुराने सारे फल लाने के लिये कहा। जब वह सारे फल ले आया तो विक्रम ने सारे फल तोड़े तो उन सबमें एक एक लाल निकला। इतना सारा खजाना देख कर वह बहुत खुश हुआ।

उसने तुरन्त ही एक जौहरी[65] को बुलाया और उससे उनकी हर लाल की कीमत ऑकने के लिये कहा। उसने कहा कि हर लाल की कीमत दस ट्रिलियन[66] सोने के टुकड़े थी।

यह सुन कर वह उस व्यापारी को अपने दरबार में ले गया और बोला — "मेरा तो सारा राज्य भी एक लाल के बराबर की कीमत का नहीं है। ठीक ठीक बताओ कि तुम ये क्यों खरीदते बेचते हो?"

मालदेव बोला — "मैं ये सारी बातें सबके सामने नहीं कर सकता। प्रार्थनाऐं, जादू, दवा, अच्छे गुण, घर के मामले, किसी मना किये गये फल को खाना, पड़ोसी की बुराई, ये सब मैं आपसे केवल अकेले में ही कह सुन सकता हूँ।"

[65] Translated for the word "Jeweler"

[66] Ten Trillion means 10,000,000,000,000 – means 1 with 13 zeros, or 10 to the power 12

सो विक्रम उसको अपनी एक निजी जगह ले गया और उससे पूछा — "तुमने मुझे इतने सारे लाल दिये और तुमने मेरे साथ एक दिन भी खाना नहीं खाया। बताओ तुमको क्या चाहिये।"

इस पर वह नौजवान बोला — "राजन मैं मालदेव नहीं हूँ। मैं शान्ता–शिल हूँ – एक भक्त। मुझे गोदावरी नदी के किनारे एक बड़े शमशान में कुछ जादू और जादुई संस्कार करने हैं। उसके बाद मुझे आठों सिद्धियाँ मिल जायेंगी।

मैं आपसे इस दान की भीख माँगता हूँ कि आप और आपका बेटा धर्मध्वज एक रात मेरे साथ वहाँ रहें। इससे मेरी पूजा पूरी हो जायेगी।"

विक्रम शमशान का नाम सुन कर चौंक गया पर फिर अपने आपको सँभाल कर उसने पूछा कि उसको वहाँ उसके साथ कब रहना है।

वह भक्त बोला — "आपको वहाँ अपने हथियार सहित आना है पर कोई और दूसरा आपके पीछे न आये। आप दोनों वहाँ अकेले ही आयें। सोमवार की शाम को भादों की काली चौदस की रात को।"

राजा ने कहा "ठीक है।" और वह भक्त वहाँ से चला गया।

सोमवार आ पहुँचा और विक्रम अपनी चमकती हुई तलवार और अपने बेटे धर्मध्वज को साथ ले कर शमशान में जा पहुँचा। वहाँ पहुँचने पर उसको कई अपशकुन होने लगे।

जंगली जानवर चीख रहे थे और अपने अपने शिकारों पर लड़ रहे थे। भूत इधर से उधर घूम रहे थे। हड्डी के ढाँचे इधर उधर बिखरे पड़े थे। चुड़ैलें जमीन पर रेंग रही थीं। और इन सबके बीच शान्ता-शिल आग के पास बैठा हुआ था।

जब विक्रम उस भक्त के पास तक आया तो उसने देखा कि वह तो एक खोपड़ी और दो हड्डियों से कुछ कर रहा था।

हालाँकि उसको इस सबसे बहुत डर लग रहा था पर वह अपने परिवार पर पड़ा यह शाप हमेशा के लिये हटा देना चाहता था।

वह उस भक्त आदमी को किसी भी समय मार सकता था पर वह अपना वायदा भी पूरा करना चाहता था। इसके अलावा उसके काम का समय तो अभी आने वाला था।

विक्रम ने पूछा — "बोलो मैं तुम्हारे लिये क्या करूँ।"

भक्त बोला — "बस तुम्हें वह लाश लानी है जो मिमोसा के पेड़ से लटक रही है। वह पेड़ दक्षिण दिशा में यहाँ से दो कोस दूर है।"

विक्रम अपने बेटे को वहाँ उस आदमी के साथ अकेला छोड़ना नहीं चाहता था सो उसने अपने बेटे का हाथ पकड़ा और दक्षिण दिशा की तरफ चल दिया। अब उसको पक्का विश्वास हो गया था कि यही वह आदमी था जो उसको मारना चाहता था।

बारिश शुरू हो गयी थी और अँधेरा बढ़ रहा था। जैसे जैसे समय आगे बढ़ रहा था जंगल में से गुजरना मुश्किल होता जा रहा था। आखिर वह उस जगह आ ही पहुँचा जहाँ मिमोसा का वह पेड़

था जिससे वह लाश लटक रही थी। उसने देखा कि उस पेड़ की हर शाख और पत्ती में आग लगी हुई थी।

जैसे ही वह उस पेड़ के पास पहुँचा उसको कई आवाजें सुनायी दीं "पकड़ लो इनको। मार दो इनको। जाने मत देना।" उसको लगा कि वह आग उनको जला रही थी।

वह सुस्ताने के लिये वहीं पेड़ के नीचे बैठ गया। उसने देखा कि उस पेड़ से एक लाश टँगी हुई थी। लाश की ऑखें बिल्कुल खुली हुई थीं और वे अपनी पलक भी नहीं झपका रही थीं। उसने उस लाश को छुआ तो वह तो बर्फ की तरह बिल्कुल ठंडी पड़ी थी।

इसी से उसको पता चल गया कि यही वह बेताल था जिसको उसे उस भक्त के पास ले कर जाना था।। उसको यह भी लगा कि वह उस तेली का बेटा ही होगा जैसा कि उस बड़े साइज़ के आदमी ने उसे बताया था।

राजा निडर हो कर पेड़ पर चढ़ गया और एक ही झटके में उसने उस शरीर को नीचे गिरा दिया। आश्चर्य, शरीर दर्द से चिल्लाया तो विक्रम को उसकी आवाज सुन कर बड़ी खुशी हुई। उसने सोचा कि चलो यह शैतान कम से कम ज़िन्दा तो है।

उसने उसको अपने हाथ में पकड़ा और पूछा — "तुम कौन हो?"

वह शरीर उसके हाथ से फिसल गया और फिसल कर बहुत ज़ोर से हॅसा और पेड़ की एक और शाख से जा कर लटक गया। विक्रम फिर पेड़ पर चढ़ गया और उसको फिर से गिरा दिया और अपने बेटे को उसे तुरन्त ही पकड़ने को कहा। उसके बेटे ने तुरन्त ही उसे पकड़ लिया।

पर जैसे ही राजा पेड़ से नीचे उतरा और उसे पकड़ा वह फिर उसके हाथ से फिसल कर पेड़ की दूसरी शाख से लटक गया। दोबारा उसके हाथ से फिसल कर पेड़ पर लटक जाने पर विक्रम बहुत गुस्सा हुआ।

बेताल ने ज़ोर से हॅसते हुए पूछा — "तुम हो कौन?"

विक्रम ने ऐसा पॉच बार किया पर सातवीं बार बेताल उसके हाथ से छूट कर नहीं भागा। उसने अपने आपको विक्रम के हाथ में पकड़े जाने दिया।

उसने ज़ोर से हॅसते हुए विक्रम से फिर पूछा — "तुम हो कौन?"

विक्रम बोला — "मैं विक्रम हूॅ उज्जयिनी का राजा। और मैं तुमको एक ऐसे आदमी के पास ले जा रहा हूॅ जो एक खोपड़ी और दो हड्डियों से कुछ कर रहा है।"

बेताल बोला — "मैं तुम्हारे साथ जाने के लिये तैयार हूॅ। पर जहॉ तुम मुझको ले जाना चाह रहे हो वह जगह यहॉ से एक घंटा दूर है। मैं चाहूॅगा कि मैं अपना ध्यान बॅटाने के लिये तुमको कहानी

सुनाऊँ। साधु और विद्वान लोग अपना समय कहानी सुना कर ही बिताया करते हैं जबकि बेवकूफ लोग अपना समय सोने और आलस में रह कर गुजारते हैं।

कहानी सुना कर मैं तुमसे उस कहानी के ऊपर कई सवाल पूछूँगा जो भी मुझे अच्छे लगेंगे। अगर तुमने जानबूझ कर उन सवालों के जवाब नहीं दिये तो तुम्हारे सिर के हजारों टुकड़े हो जायेंगे और अगर तुम रास्ते में बोले तो मैं तुमको रास्ते में ही छोड़ कर अपनी जगह वापस भाग जाऊँगा।

और अगर तुम किसी वजह से जवाब न दे पाने की वजह से या फिर नम्रता की वजह से या फिर जवाब न मालूम होने की वजह से चुप रहे तभी मैं अपनी मर्जी से तुमको अपने आपको उस योगी के पास ले जाने दूँगा।"

अब विक्रम तो राजा था वह तो ऐसे शब्द सुनने का आदी नहीं था सो उसने इधर उधर देखा और यह देख कर खुश हुआ कि उसका बेटा वहाँ पास में नहीं था और उसने यह सब नहीं सुना था वरना वह पता नहीं उसके बारे में जाने क्या सोचता।

तब विक्रम ने उसको आसानी से ले जाने के लिये अपने कमर के कपड़े से उठा कर अपने कन्धे पर रखा और शमशान चल दिया।

बारिश रुक गयी थी मौसम साफ हो गया था। जैसा कि बेताल ने कहा था तो पहले तो उसने हवा बारिश कीचड़ आदि के बारे में

बात करना शुरू कर दिया। पर विक्रम ने उसकी किसी भी बात का कोई जवाब नहीं दिया।

इससे बेताल को बहुत परेशानी हुई। सो वह बोला — "विक्रम अब मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ। इसको ध्यान दे कर सुनना।"[67]

और इसके बाद उसकी कहानियाँ शुरू हो जाती हैं। वह कुल **25** कहानी सुनाता है और हर कहानी के बाद उससे इस शर्त पर सवाल पूछता है कि अगर जानते बूझते उसने उसके सवाल का जवाब नहीं दिया तो उसका सिर हजारों टुकड़ों में टूट जायेगा।

और विक्रम को यह भी मालूम था कि वह अगर बोला तो वह बेताल उसके हाथ से छूट कर फिर वापस चला जायेगा और अपनी जगह जा कर उलटा लटक जायेगा इसलिये उसको उसे फिर से लाने के लिये वहाँ फिर से जाना पड़ेगा।

अब क्योंकि वह सवालों के जवाब जानता था सो वह चुप रह कर तो अपना सिर नहीं तुड़वा सकता था इसलिये उसको उसके सवालों के जवाब देने ही पड़ते थे और फिर उसे पेड़ से लाने के लिये वापस जाना ही पड़ता था।

इस तरह से वह **24** बार उस बेताल को लाने के लिये उस पेड़ तक गया। पर **25**वीं कहानी का जवाब वह नहीं जानता था और

---

[67] Up to here this story has been taken from Captain Sir Richard Burton's book "Vikram and the Vampire: classic Hindu tales of adventure, magic and romance". It is available at the Web Site : https://www.gutenberg.org/files/2400/2400-h/2400-h.htm / edited by his wife Isabel Burton. This book gives only 11 stories including the last one and cotains 450 pages. This book was published in 1870,

उसने यह बेताल से कह दिया तो बेताल ने उसको अपने आपको उस योगी के पास ले जाने दिया।

इसी समय बेताल ने उसको यह भी बताया कि वह योगी उसको मारना चाहता था और वह उस योगी के चंगुल से कैसे छूट सकता था। **25**वीं कहानी सुनाने के बाद बेताल ने विक्रम से कहा कि जब तुम्हारी बलि दी जाये तो एक लकड़ी पर बैठ कर थोड़ा आराम करना तभी तुम उस योगी से छुटकारा पा सकते हो।

विक्रम ने वैसा ही किया जैसा कि बेताल ने उससे करने को कहा था और वह उस योगी के चंगुल से छूट गया। बेताल ने फिर विक्रम को वर दिया और विक्रम उसको ले कर उस योगी के पास चला गया।

कहते हैं कि जहॉ ये कहानियॉ कही सुनी जाती है वहॉ भूत चुड़ैलें नहीं आते इसी लिये भी इनका नाम विक्रम बेताल की कहानियॉ हैं, और इसी लिये ये बहुत लोकप्रिय भी हैं और लोग इनको कहते सुनते हैं।

तो यह थी विक्रम बेताल की कहानियों के आरम्भ की कहानी बृहत् कथा के अनुसार।

विक्रम बेताल की कथाऐं भविष्य पुराण में

भीविष्य पुराण में विक्रम बेताल की नौ कथाऐं दी हुई हैं। उनका सुनाने वाला भी अलग है। उनका माहौल भी अलग है। उनको

सुनाते समय कोई शर्त भी नहीं है। पर हॉ सारी कथाऐं वैसी ही पहेली भरी हैं जैसी इस बृहत् कथा में दी हुई हैं पर उसकी कोई भी कथा बृहत् कथा की बैताल पच्चीसी की कथा से नहीं मिलती। साथ में सुनाने वाला उनके ऊपर एक सवाल भी पूछता है।

वह सब कथाऐं कैसी हैं इसको जानने के लिये तुम्हें यह पुस्तक पढ़नी पढ़ेगी।[68] भविष्य पुराण के अनुसार कहा जाता है कि राजा विक्रम का सिंहासन भगवान शिव ने खुद बना कर भेजा था। जब राजा विक्रम उस सिंहासन पर बैठे तो भगवान शिव ने अपने एक देवता बेताल को उनके पास भेजा।

वह उनके दरबार में आया और बोला — "आपकी जय हो। अगर आपकी इजाज़त हो तो मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ.."

और फिर उसने राजा विक्रमदित्य को एक के बाद एक नौ कथाऐं सुनायीं। हर कथा सुनाने के बाद उस कथा पर एक सवाल पूछा जिसका राजा ने अपनी समझ से ठीक जवाब दिया।

आखीर में बेताल ने कहा "हे राजन। मैं आपके पास भगवान शिव की आज्ञा से आया था। कई तरह के सवाल पूछ कर मैंने आपका काफी इम्तिहान ले लिया है। आपने मेरे सब सवालों का जवाब बड़ी अक्लमन्दी से दिया है।

मैं आपसे बहुत खुश हूँ। मैं आपकी बॉहों में रहूँगा ताकि आप धरती के अपने सारे दुश्मनों को आसानी से जीत सकें। हमारे

[68] "Vikram Aur Betaal Ki Kahaniyan: Puraan Se", by Sushma Gupta in Hindi language.

गुलामों ने धरती की बहुत सारी जगहों को नष्ट कर दिया है तो आप वहॉ शास्त्रों के बताये अनुसार शहर बसायें और न्याय से राज्य करें।" यह कह कर उसने उनसे कहा कि अब वे देवी की पूजा करें और गायब हो गया।

उसके बाद विक्रमदित्य ने अश्वमेध यज्ञ किया और चक्रवर्ती राजा बन गये। तो इसमें देखा जाये तो इन कथाओं के कहने का कोई खास मतलब नहीं है। ऐसा लगता है कि भगवान शिव ने बेताल को विक्रम का केवल इम्तिहान लेने के लिये भेजा था।

पर इन कथाओं का क्योंकि एक संग्रह इस पुराण में दिया हुआ है इसलिये इसका यहॉ जिक्र करना ठीक समझा गया।

11 अरेबियन नाइट्स[69]

बच्चों अब तक हमने तुम्हें भारत की कई पुस्तकों के आरम्भ की वजहें बतायीं। अब हम तुम्हें बताते हैं एक और पुस्तक की आरम्भ की मजेदार कहानी।

यह पुस्तक भारत की नहीं है पर यह पुस्तक बहुत पुरानी है और सबसे पुरानी और सबसे ज़्यादा मशहूर लोक कथाओं की पुस्तकों में से एक है। यह पुस्तक ईराक देश की **12**वीं शताब्दी की कहानियों का संग्रह है।

क्या तुमने "बगदाद का चोर" और "बसरे की हूर" जैसे नाम सुने हैं? शायद न सुने हों पर हमें यकीन है कि तुम सब लोगों ने "अलादीन और उसका जादुई चिराग", "सिन्दबाद की सात समुद्री यात्राऐं", "अली बाबा चालीस चोर" की कहानियॉ तो सुनी भी होंगी और शायद पढ़ी भी होंगी।

क्या तुमने कभी यह भी सोचा है कि यह कहानियॉ कितनी हैं या कहॉ से आयीं या क्यों लिखी गयीं या किसने कहीं या किसको सुनायी गयीं। इन कहानियों का आरम्भ ही कैसे हुआ। आओ आज हम तुम्हें बताते हैं इन कहानियों का इतिहास।

---

[69] Arabian Nights – or "The Books of a Thousand Nights and a Night". From Iraq, Asia. Many of these stories have been given in English for children on the Web Site : http://www.sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/index-arabian-nights.htm
Translation by Sir Richard Burton in English : Arabian Nights: (1882-84) **1 2 3 4 5 6 7 8 9 10**

पहली बात, ये सब कहानियॉ एक पुस्तक जिसका नाम है "अरेबियन नाइट्स" से ली गयी हैं।

पर साथ में तुमको यह पढ़ कर और भी ज़्यादा आश्चर्य होगा कि खास कर के दो कहानियॉ "अलीबाबा और चालीस चोर" और "अलादीन और उसका जादुई चिराग" जो उसकी सबसे ज़्यादा प्रसिद्ध कहानियॉ हैं उस "अरेबियन नाइट्स" पुस्तक का हिस्सा नहीं हैं जो मूल रूप से अरबी भाषा में लिखी गयी थी बल्कि जब यूरोप के लेखकों ने इस पुस्तक का अनुवाद किया तब उन्होंने इनको इसमें जोड़ दिया था।

दूसरी बात ये सब कहानियॉ पहले से ही एक पुस्तक के रूप में नहीं मिलती थीं। ये सब कहानियॉ अलग अलग थीं। बाद में इनको इकट्ठा कर के एक साथ रख कर एक पुस्तक का रूप दिया गया। आज भी ये सारी कहानियॉ एक साथ नहीं मिलतीं बल्कि इधर उधर बिखरी हुई मिलती हैं।

तीसरी बात, ये सब कहानियॉ, यानी **1001** कहानियॉ, केवल एक ही आदमी की कही गयी हैं और एक ही आदमी से कही गयी हैं। कैसी अजीब बात है। कोई ऐसा क्यों करेगा और कोई ऐसा कैसे कर सकता है।

ज़रा सोचो तो कि जिसने भी ये कहानियॉ सुनायी होंगी उसका कितना दिमाग और कितना समय लगा होगा इन सब कहानियों को

सोचने में और फिर इनको सुनाने में। और जिसने भी सुनी होंगी उसके पास भी कितना धीरज होगा इनको सुनने का।

चौथी बात, ये कहानियॉ ऐसे ही नहीं कही गयी थीं जैसे मॉ बाप अपने बच्चों को कहानियॉ सुनाते हैं बल्कि इनको कहने का एक उद्देश्य था और वह उद्देश्य क्या था यह हम अभी इसकी आरम्भकी मूल कहानी में तुम लोगों को बतायेंगे।

इन कहानियों के लिखे जाने से पहले ही ये कहानियॉ अरब देशों में कही और सुनी जाती रही थीं। इन सबको इकट्ठा करने में भी कई साल लग गये।

और इनको इकट्ठा करना भी किसी एक आदमी का काम नहीं है बल्कि बहुत सारे लोगों ने इनको इकट्ठा कर के लिखा है। हालॉकि इन कहानियों की कोई मूल प्रति नहीं मिलती पर इनके कई रूप[70] **800** और **900** एडी के लिखे हुए पाये जाते हैं।

इन सब रूपों में केवल एक ही कहानी एक सी है और वह है इसकी आरम्भ की मूल कहानी।

अरेबियन नाइट्स में फारस के बादशाह शहरयार की रानी शहरज़ाद हर रात उसको कहानी सुनाती थी। यह अरेबियन नाइट्स उन्हीं कहानियॉ का संग्रह है।[71]

[70] Translated for the word “Version”

[71] Read some of these stories in English at the Web Site :
http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/index-arabian-nights.htm

इसका सर्वप्रथम उल्लेख पहलवी भाषा की पुस्तक "हजार अफसाने" में मिलता है। ये **1001** कहानियॉ हैं और तीन वर्षों से भी अधिक समय तक चलीं।

तो यह है इसकी आरम्भ की मूल कहानी कि आखिर ये **1001** कहानियॉ शुरू ही कैसे हुईं —

फारस में एक राजा था जिसका नाम था शहरयार जिसका राज्य भारत और चीन तक फैला हुआ था। एक बार उसको पता चला कि उसके भाई की पत्नी अपने पति, यानी उसके भाई के प्रति, वफादार नहीं थी। यह जान कर उसको अच्छा नहीं लगा।

फिर बाद में पता चला कि उसकी अपनी पत्नी तो उसके भाई की पत्नी से भी ज़्यादा बेवफा थी सो उसने उसको मरवा दिया। जिसने भी उसके हुक्म को नहीं माना उसने उसको भी मरवा दिया।

इसके बाद उसने यह निश्चय किया कि वह हर शाम एक नयी कुँआरी लड़की से शादी करेगा और इससे पहले कि वह उसको धोखा दे वह अगली सुबह उसको मरवा देगा।

उसके इस हुक्म से उसके राज्य में बहुत ज़्यादा डर और तबाही फैल गयी और खलबली मच गयी। दिनों दिन कुँआरी लड़कियों की कमी होने लगी क्योंकि जिस लड़की की भी राजा शहरयार से शादी होती वह केवल एक रात ही ज़िन्दा रहती। अगले दिन उसे मार दिया जाता और एक दूसरी कुँआरी लड़की उसके पास ले जायी जाती।

आखिर उसका वज़ीर[72] जिसका काम उन लड़कियों को उसके पास लाना था उसको और लड़कियों को लाने में परेशानी होने लगी।

उसके अपनी भी दो बेटियॉ थीं – शहरज़ाद और दीनारज़ाद। शहरज़ाद उसकी बड़ी बेटी थी। वह बहुत सुन्दर समझदार और अक्लमन्द थी। राज्य भर में यह डर और तबाही फैली देख कर एक दिन उसने अपने पिता से कहा — "अब्बा हुजूर, आप मुझे सुलतान को दे आयें।"

वज़ीर यह सुन कर हक्का बक्का रह गया। उसने अपनी बेटी से पूछा — "बेटी तू जानती भी है कि तू क्या कह रही है?"

शहरज़ाद बोली — "जी अब्बू[73] मैं जानती हूॅ कि मैं क्या कह रही हूॅ।"

वज़ीर बोला — "इसका मतलब है अगले दिन तेरी मौत। नहीं बेटी मैं इसके तैयार नहीं हूॅ।"

शहरज़ाद बोली — "आप बिल्कुल फिक्र न करें अब्बू। बस आप मुझे सुलतान के पास ले चलें। मुझे अपने ऊपर पूरा यकीन है कि मैं खुद को ही नहीं बल्कि बची हुई लड़कियों को भी बचाने में सफल हो जाऊॅगी।"

[72] Vazir – Vazeer is the Urdu or Arabic word used for the Prime Minister

[73] Abboo is the word used to address father in Urdu and Arabic

पर वज़ीर इस तरह से अपनी बेटी को खोने के लिये कतई तैयार नहीं था। पर जब उसकी बेटी ने बहुत जिद की तो उसको तैयार होना ही पड़ा। सो वह वज़ीर सुलतान के पास गया और उससे कहा कि अगली शाम वह उसके पास अपनी बेटी को ले कर आयेगा।

सुलतान भी यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गया और बोला — "क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है वज़ीर? तुम ऐसा सोच भी कैसे सके? क्या उसको मेरी शर्त का नहीं पता?"

"मालूम है जहॉपनाह। उसको सब मालूम है।"

"फिर?"

"बस वह ऐसी ही जिद कर रही है।"

"देख लेना अगर वह बाद में मना करेगी तो तुम्हें उसकी जान खुद ही लेनी पड़ेगी वरना मैं तुम्हारी जान ले लूँगा।"

"यकीनन जहॉपनाह।"

इस बीच शहरज़ाद ने अपनी छोटी बहिन से कहा — "बहिन मुझे तेरी सहायता चाहिये। आज मेरी शादी सुलतान से हो जायेगी और कल सुबह सुलतान मुझे मरवा देंगें।

मेरे मरने से पहले तुझे मेरी सहायता करनी है। शादी के बाद मैं उनसे प्रार्थना करूँगी कि वह तुझे मेरे साथ जाने दें जो कि मैं उम्मीद करती हूँ कि वह मान लेंगे।

तेरा काम बस इतना है कि सुबह सूरज निकलने से एक घंटा पहले तू मुझे जगा दे और कहे — "बहिन अगर तुम सो न रही हो तो मुझे अपनी मजेदार कहानियों में से कोई एक कहानी सुना दो।"

मैं उठ जाऊँगी और फिर मैं कहानी कहना शुरू कर दूँगी। मुझे पूरी उम्मीद है कि इस तरह से मैं अपने लोगों को बचाने में कामयाब हो जाऊँगी।"

उसकी बहिन तैयार हो गयी। सो अगले दिन शहरज़ाद के पिता ने बहुत दुखी होते हुए रोते रोते अपनी बेटी की शादी सुलतान से कर दी। शादी की रस्म होने के बाद शहरज़ाद ने रोना शुरू कर दिया।

जब उससे यह पूछा गया कि वह क्यों रो रही थी तो उसने बताया कि वह अपनी छोटी बहिन दीनारज़ाद के लिये रो रही थी। वे केवल दो ही बहिनें थीं और शहरज़ाद अपनी छोटी बहिन को बहुत प्यार करती थी।

सुलतान के नियमों के मुताबिक कल सुबह उसको मरवा दिया जायेगा और फिर वह उसको कभी नहीं मिल पायेगी। सुलतान की बड़ी मेहरबानी होगी अगर वह उसके साथ उसकी छोटी बहिन को भी जाने देगा। कम से कम एक रात तो वे और साथ रह लेंगे।

सुलतान ने इसमें कोई गड़बड़ नहीं समझी और वह इस बात पर राजी हो गया और दीनारज़ाद शहरज़ाद के साथ सुलतान के महल चली गयी।

अपने प्लान के मुताबिक सुबह सूरज निकलने से पहले दीनारज़ाद शहरज़ाद के पास गयी और बोली — "सुबह को तो तुम मर जाओगी बहिन। आज की अपनी ज़िन्दगी की आखिरी रात को तुम मुझे अपनी कोई सबसे अच्छी और मजेदार कहानी सुना दो ताकि यह रात खुशी खुशी कटे।"

शहरज़ाद ने अपनी बहिन को तो कोई जवाब नहीं दिया पर वह सुलतान से बोली — "क्या आप मुझे मेरी छोटी बहिन को एक कहानी सुनाने की इजाज़त देंगे?"

सुलतान बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। जरूर जरूर।"

और उसने अपनी बहिन को कहानी सुनानी शुरू की तो एक कहानी में से दूसरी कहानी निकली पर सुलतान को तो सुबह अपने दरबार में जाना था और सुबह तक उसकी कहानी पूरी नहीं हुई थी सो वह यह कह कर चला गया कि वह रात को उस कहानी का बचा हुआ हिस्सा सुनने के लिये वहॉ जरूर आयेगा।

कहानी सुनने की उत्सुकता में उस समय वह यह भूल गया कि उसे अपनी इस नयी रानी को सुबह होते ही मरवाना है। यह क्रम **1001** रात तक चलता रहा। कैसे?

शहरज़ाद एक बहुत ही होशियार लड़की थी। वह ये कहानियॉ कुछ ऐसे सुनाती थी कि या तो वह उस कहानी को उस रात अधूरा छोड़ देती थी ताकि सुलतान की उत्सुकता बनी रहे और वह फिर अगली रात भी उस कहानी को सुनने आये।

नहीं तो उस कहानी में से एक कहानी और निकालती थी जो सुलतान की उत्सुकता को जगाये रखती थी और वह फिर उस कहानी को सुनने के लिये अगली रात आता था।

इस तरह से समय गुजरता गया और वह वजीर की बेटी शहरज़ाद को अगले दिन सुबह जैसा कि उसका हुक्म था मरवा ही नहीं सका। इसी उत्सुकता की वजह से वह तीन साल तक बची रही। है न कुछ अजीब सी बात।

अब तीन साल तो किसी का दिल जीतने के लिये बहुत होते हैं। इसके अलावा इतने समय में शहरज़ाद के तीन बेटे भी हो गये – एक चलता हुआ, एक घुटनों चलता हुआ और एक गोद में।

इसके बाद सुलतान का वह हुक्म रद्द कर दिया गया और वे दोनों मिल जुल कर बहुत समय तक रहे।

930वीं रात को शहरज़ाद ने कहा — "आज मेरे दिमाग में औरत की धोखाधड़ी की एक कहानी है पर मुझे डर है कि इस कहानी को सुनाने के बाद सुलतान की नजर में मेरी इज़्ज़त कम रह जायेगी। पर मुझे यह भी पूरी उम्मीद है कि ऐसा नहीं होगा क्योंकि यह कहानी और कहानियों से बिलकुल ही अलग है।

औरतें शरारतें तो करती ही हैं पर उनको अपनी उन शरारतों को न किसी को बताना चाहिये और न ही कहना चाहिये।"

इस पर दीनारज़ाद बोली — "बहिन बताओ तो तुम्हारे दिमाग में क्या है। तुम सुलतान से बिल्कुल मत डरो क्योंकि औरतें तो जवाहरात की तरह होती हैं।

अगर वे जौहरी[74] के हाथ पड़ जाती हैं तो वह उनको अपने लिये रख लेता है और बाकी सबको अलग कर देता है। बल्कि वह उनमें से कुछ को ज़्यादा पसन्द भी करता है।

इसी तरह से वह एक कुम्हार की तरह भी होती है जो पकने के लिये भाड़ में अपने सारे बर्तन रख देता है और जब उनको निकालता है तो उसे कुछ तो तोड़ने पड़ते हैं, कुछ को दूसरे लोग इस्तेमाल करते हैं और कुछ जैसे थे वैसे ही वापस निकल आते हैं।"

तब शहरज़ाद बोली — "तब ओ सुलतान सुनो यह कहानी..."

तो बच्चों यह है अरेबियन नाइट्स की **1001** कहानियों की आरम्भकी कहानी। है न मजेदार कहानी।

देखो कितनी अक्लमन्दी से शहरज़ाद ने खुद को और बहुत सारी नौजवान लड़कियों को सुलतान के हाथों मरने से बचाया। और केवल मरने से ही नहीं बचाया बल्कि सुलतान की सुलताना बन कर तीन बेटों की मॉ भी बन गयी।

[74] Translated for the word "Jeweler"

12 शुक सप्तति[75]

हालॉकि शुक सप्तति के लिखने की तारीख निश्चित नहीं हो पायी है फिर भी इसका आधुनिक रूप **12**वीं शताब्दी का लिखा हुआ माना जाता है। हालॉकि यह **12**वीं शताब्दी का ग्रन्थ समझा अवश्य जाता है पर इसकी कुछ कहानियॉ कथा सरित सागर और जातक कथाओं में भी पायी जाती हैं।

इसे मूल रूप से संस्कृत भाषा में लिखा गया है। इस पुस्तक में **72** कहानियॉ है। पहली कहानी तो इसकी मूल कहानी है फिर एक तोता एक स्त्री को **71** दिनों में **71** कहानियॉ सुनाता है ताकि वह स्त्री अपने पति की अनुपस्थिति में अपने प्रेमी से मिलने न जा सके और वह इसमें सफल हो जाता है।

इसके कई भाषाओं में अनुवाद भी हुए हैं – फारसी भाषा में **14**वीं शताब्दी में, मलय भाषा में **1371** में, जर्मन भाषा में **1896** में तेलगू भाषा में **1935** और **1951** में और **1979** में, अंग्रेजी भाषा में **2000** में और अन्त में हिन्दी भाषा में **2022** में।

तो यह सब कैसे शुरू हुआ इसकी एक बड़ी अजीबो गरीब कहानी है जो हम तुम्हें यहॉ बताने जा रहे हैं —

---

[75] Shuk Saptati. Author unknown. Written in 11th century.
First Translated by B Wortham Hale in English under the title “The Enchanted Parrot”. London : Luzac. 1911. 136 pages.
It was translated in Hindi by Sushma Gupta in 2022.

एक नगर है जिसका नाम है चन्द्रपुर। वहॉ का एक राजा था जिसका नाम था विक्रम सेन। वहीं एक कुलीन परिवार का एक आदमी हरिदत्त भी रहता था। उसकी एक पत्नी थी जिसका नाम था श्रंगारसुन्दरी और उसका एक बेटा था जिसका नाम था मदन।

मदन का विवाह हो चुका था और उसकी पत्नी का नाम था प्रभावती। प्रभावती नगर के एक बहुत बड़े आदमी की बेटी थी।

मदन एक अच्छा बेटा नहीं था। वह केवल भोग विलास में ही लगा रहता था। वह केवल जुआ शराब और स्त्रियों में ही लगा रहता था और किसी और की उसे कोई चिन्ता ही नहीं थी। अपने बेटे को बुरे रास्ते पर जाते देख कर माता पिता को बहुत चिन्ता लगी हुई थी।

एक दिन त्रिविक्रम नाम के एक ब्राह्मण ने हरिदत्त के दुख को समझा तो वह उसके घर गया और साथ में तोते के रूप में अपना एक व्यक्तिगत दोस्त ले गया।

ब्राह्मण हरिदत्त के घर जा कर बोला — "प्यारे हरिदत्त। इस तोते की देखभाल करना और इसे अपने बेटे की तरह समझना। मुझे विश्वास है कि यह अपनी बुद्धिमानी और ज्ञान से तुम्हारा दुख दूर कर पायेगा।"

सो हरिदत्त ने उससे तोता ले लिया और अपने बेटे को दे दिया। बेटे ने उसे एक सोने के पिंजरे में रख कर अपने सोने के कमरे में रख लिया।

एक दिन तोते ने खुश खुश मूड में देवदत्त से कहा — "मेरे बेटे। तुम्हारी नीचता के लिये तुम्हारे पिता बहुत रो रहे थे। तुम्हारे ये गलत रास्ते तुम्हें नष्ट कर देंगे जैसे उन्होंने देवशर्मा के साथ किया था।"

देवदत्त बोला — "और यह देवशर्मा कौन था।"

तोता बोला — "एक नगर है पंचपुर नाम का। वहॉ सत्यशर्मा नाम का एक ब्राह्मण रहता था। उसके धर्मशाला नाम की पत्नी थी और देवशर्मा नाम का एक बेटा था।

देवशर्मा दैवीय ज्ञान प्राप्त करने के लिये इतना उतावला था कि वह अपने माता पिता के प्रति कर्तव्यों तक को भूल गया था। बस वह उस ज्ञान की खोज में दूर देश चल दिया।

वह भागीरथी के तीर पर पहुॅचा और वहॉ पहुॅच कर घोर तप करने लगा। एक दिन वह अपनी तीर्थयात्रा के लिये जा रहा था कि एक बगुला उड़ता हुआ उसके ऊपर से गुजरा और उसके ऊपर बीट कर गया।

साधु ने कोध से ऊपर देखा तो दुर्भाग्य से वह चिड़िया उसकी दृष्टि पड़ते ही तुरन्त ही मर कर नीचे गिर पड़ी और राख हो गयी।

देवशर्मा अपनी यात्रा पर आगे चला गया और एक ब्राह्मण के घर पहुॅचा। वहॉ उसने भोजन और ठहरने की जगह मॉगी तो ब्राह्मण ने अपनी पत्नी को पुकारा और उसकी आज्ञा से उसकी पत्नी ने ब्राह्मण को इतनी अच्छी चिड़िया जैसे कि वगुला को नष्ट करने

के लिये बुरा भला कहा। अन्त में उसने उससे यह कह दिया कि उसके लिये वहॉ कोई जगह नहीं है वह किसी और जगह जा कर शरण खोजे।

देवशर्मा इस बात कुछ क्रोधित हुआ पर फिर आगे चला गया। अपने क्रोध को देख कर उसे कुछ अच्छा नहीं लग रहा था।

अन्त में वह वाराणसी पहुॅच गया। वह वहॉ धर्म व्याध के घर ठहरने के लिये गया। धर्म व्याध एक बहुत ही ज्ञानी ब्राह्मण था जिसको एक शाप ने कसाई बना दिया था।

देवशर्मा को धर्म व्याध घर पर ही मिल गया। वह एक जंगली की तरह दिखायी देता था। उसके दोनों हाथों से खून टपक रहा था। उसकी इस शक्ल से ऐसा लग रहा था जैसे उसके सामने कोई राक्षस खड़ा हो।

देवशर्मा तो यह दृश्य देख कर बहुत ही डरा डरा सा खड़ा रह गया पर कसाई ने उसे नमस्ते की और उसे घर के अन्दर बुलाया। उसे भोजन खिलाया और उसे रहने की जगह दी।

जब देवशर्मा ने आराम कर लिया तो उसने कसाई से कहा — "आप मुझे बताइये कि आपने और आपकी पत्नी ने इतनी अच्छी बुद्धि कहॉ से सीखी। आपने यह दैवीय ज्ञान भी कब सीखा।"

कसाई बोला — "जब जिस आदमी के जिन परिस्थितियों में जो कर्तव्य होते हैं। जो आदमी बाहरी सुखों की ओर आकर्षित नहीं होता चाहे वे छोटे हों या बड़े। वह जो अपने पिता का आज्ञा पालन

करता है और जो सब दशाओं में समान रहता है वही सच्चा भक्त है उसी के पास सच्ची बुद्धि होती है और वही गुणवान होता है।

मैं और मेरी पत्नी ऐसे ही हैं। पर तुम? तुमने तो अपने पिता को ही छोड़ दिया है। तुम तो घर से निकल कर बाहर घूम रहे हो। तुम तो मेरी एक भी स्थिति के बारे में बोलने योग्य भी नहीं हो।

मैं अतिथि के स्वागत के कर्तव्यों का आदर करता हूँ इसी लिये मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे सका।"

देवशर्मा ने पूछा — "और अनुशासनहीनता कहाँ रहती है?"

कसाई बोला — "जो उन लोगों का आदर नहीं करते जिनका आदर करना चाहिये और जो दूसरों से घृणा करते हैं। ऐसे लोग कभी स्वर्ग नहीं जाते।"

कसाई की यह सलाह सुन कर देवशर्मा वापस लौट गया और फिर अपने घर जा पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने अपने कर्तव्य करने प्रारम्भ किये और फिर इतना प्रसिद्ध हो गया कि इस संसार में भी प्रसन्न रहा और दूसरे संसार में भी प्रसन्न रहा।"

तोता आगे बोला — "यही तुमको भी करना चाहिये। तुम्हें इस संसार में रह कर जिन परिस्थितियों में भी तुम रह रहे हो अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिये और तुम्हें अपने माता पिता की इच्छाओं को पूरा करना चाहिये।"

यह सुन कर मदन को बहुत पश्चाताप हुआ। वह भी घर वापस चला गया और अपने माता पिता की सेवा करने लगा। इसके

शीघ्र पश्चात ही उसने अपने माता पिता की आज्ञा से उन्हें छोड़ दिया अपनी प्रभावती से भी विदा ली और एक दूर देश चला गया।

उसकी पत्नी उसकी अनुपस्थिति में कुछ दिन तो दुखी रही पर बाद में उसकी सहेलियों ने उसे सलाह दी कि वह अब अपना यह दुख त्याग दे और किसी दूसरे को खोजे जो उसे उसके इस अकेलेपन में सान्त्वना दे सके।

उन्होंने उसे समझाया कि पिता और पति सब बहुत अच्छे हैं पर वे तभी तक अच्छे हैं जब तक वे जीवित हैं। उनकी मृत्यु के पश्चात या फिर अगर वे मृत जैसे भी हों तो अपना जीवन खराब करना बहुत बड़ी मूर्खता है। इसलिये यद्यपि तुम्हारा पति घर छोड़ कर चला गया है पर तुम तो अभी नौजवान हो तुम्हें इस तरह रोना शोभा नहीं देता।

प्रभावती ने देखा कि उसकी सहेलियों की सलाह में कुछ दम है सो वह तुरन्त ही उनकी सलाह पर काम करने चल दी।

उसे एक गणचन्द्र नाम के व्यक्ति से प्रेम हो गया। पर असल में वह वहाँ से कुछ इस तरह से गयी थी कि तोते ने उसको बहुत बुरा भला कहा और कहा — "तुम्हारा यह व्यवहार तो बहुत ही खराब है।"

तोते की यह सलाह सुन कर प्रभावती को इतना क्रोध आया कि वह अपने नौकर से यह कहने वाली थी कि उसके जाने के तुरन्त बाद वह उसकी गर्दन मरोड़ दे। पर जाने से पहले उसने एक क्षण

प्रतीक्षा की और सोचा कि वह अपने कुल देवता को पान चढ़ा कर तब वहॉ से जायेगी।

जब वह इस काम में लगी हुई थी तो तोता बोला — "भगवान तुम्हें सफल करें जहॉ तुम जा रही हो पर तुम जा कहॉ रही हो।"

प्रभावती ने अपने मन में सोचा "उॅह यह तो केवल एक चिड़िया है सो मैं इससे कुछ भी कह सकती हूॅ।"

सो उसने हॅस कर उससे कहा — "मैं अपने प्रेमी से मिलने जा रही हूॅ।"

तोता यह सुन कर आश्चर्य से बोला — "क्या? मैंने तो किसी भी कुलीन स्त्री को ऐसा करते नहीं सुना। खैर अगर तुमने अपना मन बना ही लिया है तो चाहे यह बात सही है या गलत तो मुझे लगता है कि तुम्हें जाना ही चाहिये।

क्योंकि जब ओछे चरित्र वाले दुखी होते हैं तो वे अपना मन किसी और चीज़ में लगाने की सोचते हैं जैसे कि एक ओछे चरित्र वाली स्त्री ने एक व्यापारी के बेटे के बाल पकड़ कर खींच कर किया।"

प्रभावती ने तोते को आदर के साथ सिर झुका कर पूछा — "और फिर उसने क्या किया।"

तोता बोला — "अगर तुम अपने प्रेमी के पास जा रही हो तो अवश्य जाओ पर जाने से पहले मेरी यह कहानी सुनती जाओ। प्रभावती बैठ गयी और तोते ने अपनी कहानी सुनानी प्रारम्भ की —

और यहाँ से तोता प्रभावती को एक के बाद एक कहानियाँ सुनाना शुरू करता है। इस तरह वह उसे **71** दिन तक रोज एक कहानी सुनाता है और उसको अपने प्रेमी से मिलने नहीं जाने देता।

उसके बाद उसका पति आ जाता है और फिर सब ठीक हो जाता है।

13 किस्सये चार दरवेश का परिचय

यह कहानी ऐसे सन्तों और बुद्धिमानों की कही गयी है जिन्होंने दुनियॉ की तरफ से अपनी पीठ फेर रखी है। इस पुस्तक में पॉच कहानियॉ हैं जो अरेबियन नाइट्स की कहानी शैली के आधार पर लिखी गयी हैं।

इनको अमीर खुसरो ने **14**वीं सदी के शुरू में फारसी भाषा में लिखा था। **1325** में तो ये अल्लाह को ही प्यारे हो गये था। इस पुस्तक के लिखने की कोई तारीख नहीं मिलती।

कहते तो यह हैं कि ये कहानियॉ अमीर खुसरो ने अपने गुरू निजामुद्दीन औलिया के लिये कही थी पर ये लिखी गयीं[76] खुसरो की मृत्यु के काफी बाद में।

कहते हैं कि एक बार इनके गुरू निजामुद्दीन औलिया बहुत बीमार पड़ गये थे तो उनको खुश रखने के लिये उन्होंने अरेबियन नाइट्स की शैली में ये सारी कहानियॉ कहीं।

इन कहानियों का केन्द्र एक राजा आज़ाद बख्त है जो अपने मरने के बारे में सोच कर बहुत हताश हो जाता है तो वह अपने महल से कुछ विद्वानों की खोज में निकलता है और एक कब्रगाह में

[76] The word writing here not mean “as author” but here it means “pen down”. It means that “these stories were pen down after some time of his death.

आ निकलता है जहॉ वह चार दरवेशों से मिलता है। वहॉ वह उनसे उनकी कहानियॉ सुनता है।

जैसे ही चौथा दरवेश अपनी कहानी खत्म करता है तो राजा को पता चलता है कि उसकी एक पत्नी ने उसके एक बेटे को जन्म दिया है। वह खुशी से पागल हो जाता है और एक बड़ी दावत का हुक्म देता है।

जिन्नों के महान राजा मलिक स्यापल की सहायता से आज़ाद बख्त सब बिछड़े हुओं प्रेमियों की शादी करवा देता है। यमन के सौदागर के बेटे की डैमसिक की राजकुमारी से, फार्स के राजकुमार की बसरा की राजकुमारी से, अजाम की फ़रॉग की राजकुमारी से, निमरोज़ के राजकुमार की शादी जिन्नों के राजा की बेटी से और चीन के राजकुमार की शादी एक दरबारी की बेटी से जिसको मलिक सादिक उठा कर ले गया था। हर दरवेश खुश था।

यह कहानियॉ अमीर खुसरो ने **1325** से पहले फारसी भाषा में लिखी थीं। उनके मरने के यानी **1325** के काफी बाद में इनका प्रकाशन हुआ। पहली बार इसका अनुवाद मीर हुसैन अता तहसीन ने उर्दू में **1770** के आस पास किया था जिसका नाम था नौ तरज़े मुरसा।[77]

[77] It was first translated by Mir Husain Ata in Urdu in 1770s. Its title was “Nau Tarz-e-Murassa – means “New Style of Adornment”.

पर उनकी भाषा क्योंकि थोड़ी साहित्यिक थी तो सामान्य जनता उसको समझ नहीं पायी। पर मीर हुसैन का यह अनुवाद आज भी उर्दू साहित्य का एक बहुत बढ़िया नमूना है।

1801 में मीर अमान ने इसका बोलचाल की उर्दू में अनुवाद किया और उसका नाम दिया "बागो बहार"।[78] बाद में **1857** में डन्कन फोर्ब्स[79] ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया।

यह पुस्तक उसी पुस्तक की कहानियों का हिन्दी में अनुवाद है।

इस पुस्तक की कुछ खासियतें हैं —

1. इसकी पहली खासियत तो यह है कि ये कहानियॉ अमीर खुसरो ने अपनी बीमार गुरू निजामुद्दीन औलिया को सुनायी थीं और उनका इनको सुनाने का उद्देश्य था उनकी तन्दुरुस्ती में सुधार लाना। ये कहानियॉ सुन कर उन्होंने इस पुस्तक को यह वरदान दिया था कि "जो कोई भी इस कहानी को सुनेगा वह दैवीय ताकत से तन्दुरुस्ती पायेगा।"

2. इसकी दूसरी खासियत हे कि इसमें हर कहानी में एक दरवेश मजबूर और बिल्कुल बिना पैसे के हो जाता है, घर से दूर हो जाता है और अजनबियों की दया पर निर्भर करता है।

3. इसकी तीसरी खासियत यह है कि हर दरवेश अपने में एक राजा है।

---

[78] Bag-O-Bahar

[79] Bagh-o-Bahar or Tales of Four Darweshes. Translated in English by Duncan Forbes from the Hindustani of Mir Amman of Dihli, in 1857.

4. इसकी चौथी खासियत यह है कि हर दरवेश को पहले नहलाने धुलाने खाना खिलाने कपड़े पहनाने और रहने के लिये जगह देने के बाद ही उससे उसके आने की वजह पूछी जाती है।

किस्सये चार दरवेश में जैसा कि उसके लिखने वाले ने लिखा है कि रम साम्राज्य[80] में एक राजा राज करता था। वह नौशेरवॉ की तरह न्यायशाली था और हातिम[81] की तरह दयालु था। उसका नाम था आज़ाद बख्त।[82] वह कौन्स्टैनटिनोपिल[83] या हिन्दी में कुस्तुन्तुनिया में अपने शाही महल में रहता था।

उसके राज में किसान सुखी थे। उसका खजाना भरा पूरा था। उसकी सेना सन्तुष्ट थी। गरीब लोग भी आराम से रहते थे। वे सब इतनी शान्ति और अमीरी में रहते थे कि उनको हर दिन त्यौहार लगता था और हर रात जैसे बारात की शाम लगती थी।

चोर डाकू जेब काटने वाले धोखा देने वाले जैसे सब बेईमान लोगों के लिये उसके राज में कोई जगह नहीं थी। उसने उन सबको अपने राज्य से निकाल दिया था।

रात भर घरों के दरवाजे खुले रहते थे। बाजार में दूकानें खुली रहती थीं। यात्री और आने जाने वाले सोना खनखनाते चले जाते थे चाहे वे मैदान में जा रहे हों या जंगल से हो कर या पहाड़ों पर।

---

[80] Rum was the kingdom whose Constantinople is the capital, in modern times it is Romania, or Turkey in Asia and Europe.

[81] Like Nausherwan in justice and like Hatim in generousity

[82] Azad Bakht – name of the King

[83] Constantinople is modern Istanbul in Turkey

कोई उनसे यह पूछने वाला नहीं था कि "तुम्हारे मुँह में कितने दाँत हैं?" या "तुम कहाँ जा रहे हो?"

उसके राज्य में हजारों शहर थे जिनके राजकुमार राजा को टैक्स दिया करते थे। हालाँकि वह एक बहुत बड़ा राजा था पर फिर भी एक पल के लिये भी न तो अपने कर्तव्य को भूलता था और न ही अल्लाह की पूजा करना भूलता था।

उसके पास दुनियाँ के ऐशो आराम के सारे साधन थे सिवाय एक बेटे के जो हर किसी की ज़िन्दगी का फल होता है। और उसकी किस्मत के बागीचे में एक यही फल नहीं था। इसलिये वह अक्सर बहुत उदास और दुखी रहता था।

पाँचों बार अल्लाह की पूजा कर के वह अक्सर अपने को बनाने वाले से कहता — "ओ अल्लाह। तूने अपनी अच्छाई से अपने कमजोर प्राणियों को सब आराम दे रखे हैं। पर तूने इस अँधेरे घर को कोई रोशनी नहीं दी।

यह इच्छा अकेली ही मेरी ज़िन्दगी का खालीपन है कि मेरे बुढ़ापे की कोई लाठी नहीं है और मेरे मरने के बाद कोई मेरा नाम बढ़ाने वाला भी नहीं है।

तेरे छिपे हुए खजाने में तो हर चीज़ है मेहरबानी कर के मुझे एक खेलता कूदता बेटा दे दे ताकि मेरा नाम और इस राज्य का नाम दोनों बने रहें।"

इसी आशा में राजा अपने **40**वें साल में पहुँच गया।

एक दिन जब उसने अपने आईने वाले कमरे[84] में अपनी प्रार्थना खत्म की तो अपना जाप करते हुए उसने अपने कमरे के एक शीशे पर नजर डाली तो उसने देखा कि उसकी मूँछों में तो एक सफेद बाल था। वह उनमें एक चाँदी के तार की तरह चमक रहा था।

यह देख कर राजा की आँखों में आँसू आ गये। उसने एक लम्बी साँस ली और अपने आपसे बोला — "अफसोस तूने अपने इतने सारे साल बिना कुछ किये धरे गुजार दिये। केवल दुनियावी चीज़ों के लिये दुनियाँ उलट पुलट कर दी।

तूने इतने सारे देशों को जीता लेकिन उससे तुझे उससे क्या फायदा हुआ। अब कोई और दूसरे लोग यहाँ आयेंगे और इस धन सम्पत्ति को बर्बाद कर देंगे। मौत ने तो पहले ही तुझको सन्देशा भेज रखा है और अगर तू कुछ साल और रह भी गया तो क्या। तेरे शरीर की ताकत तो घटती ही जायेगी।

इसलिये ये सब हालात देखते हुए यह साफ साफ कहा जा सकता है कि मेरी किस्मत में मेरी राजगद्दी और मेरे छत्र का कोई वारिस नहीं है।

एक दिन तो मैं मर ही जाऊँगा और ये सब चीज़ें अपने पीछे छोड़ जाऊँगा इसलिये मेरे लिये ज़्यादा अच्छा तो यही होगा कि यह

[84] Translated for the words "Mirror Room". In Muslim king's palaces a room was assigned as Aaine …; such as Aaine Akbari. In Hindi it is called Shish Mahal, it is a grand apartment in all oriental palaces, the walls of which are generally inlaid with small mirrors, and their borders richly gilded. Those of Dilli and Agra are the finest in Hindustan.

सब मैं अभी ही छोड़ दूँ और अपनी ज़िन्दगी के दिन अल्लाह की पूजा में लगाऊँ।"

अपने दिल में यह तय कर के वह अपने महल के पेन बाग[85] में चला गया। उसने अपने दरबारियों को अपने पास से हटा दिया और अपने नौकरों से भी यह कह दिया कि कोई उसको तंग न करे पर सब लोग दरबारे आम[86] में आयें और अपने अपने काम करते रहें।

यह कहने के बाद राजा अपने एक प्राइवेट महल में चला गया। वहाँ उसने अपना पूजा करने वाला कालीन बिछाया और अपने दिन रात अल्लाह की पूजा में बिताने लगा। सारा समय वह अल्लाह के ही गुण गाता रहता। वह वहाँ कुछ नहीं करता बस रोता रहता और आहें भरता रहता।

इस तरह आज़ाद बख्त ने वहाँ कई दिन गुजार दिये। वह सारा दिन खाना नहीं खाता। शाम को केवल एक खजूर और तीन घूँट पानी पी कर वह अपना उपवास तोड़ता। सारा दिन वह अपने पूजा वाले कालीन पर ही पड़ा रहता।

कुछ समय बाद राजा की यह हालत जनता को पता चली। धीरे धीरे सारे राज्य में इस बात की खबर फैल गयी कि राजा ने अपने शासन से अब अपना हाथ खींच लिया है और बिल्कुल अकेले में रहता है।

---

[85] Pain Bagh – Most Royal Asiatic gardens have a Pain Bagh, means a Lower Terrace adorned with flowers to which Princes descended when they wished to relax with their courtiers.

[86] Translated for the words "Public Hall of Audience"

यह देख कर दुश्मन चारों तरफ से अपना सिर उठाने लगे। जहॉ भी गवर्नर थे वहॉ वहॉ सब अशान्ति हो गयी। चारों तरफ से अशान्ति की खबरें राजा के दरबार में पहुॅचने लगीं। यह देख कर सारे दरबारी लोग और दूसरे कुलीन लोगों ने एक मीटिंग की।

उसमें उन्होंने आपस में सलाह की और फिर इस नतीजे पर पहुॅचे कि "हिज़ हाइनैस का वजीर बहुत अक्लमन्द है और वह राजा के करीब भी बहुत है उस पर राजा विश्वास भी करता है। काम करने वालों में राजा के बाद वही एक काम करने वाला है।

तो हम लोगों को उसके पास जाना चाहिये और उससे सलाह करनी चाहिये कि इस बारे में वह क्या कहता है।

सो सारे लोग वजीर के पास गये और बोले — "राजा की और राज्य की हालत तो आपको मालूम ही है। पर अगर यह सब चलते चलते और ज़्यादा देर हो गयी तो यह राज्य जिसे राजा साहब ने इतनी मुश्किल से इकट्ठा किया है ऐसे ही बेकार में ही हमारे हाथ से निकल जायेगा। और इसको फिर से इकट्ठा करना बहुत मुश्किल हो जायेगा।"

राजा का वजीर एक बहुत ही बूढ़ा अक्लमन्द और वफादार वजीर था। उसका नाम था खिरदमन्द[87]। वह अपने नाम के अनुसार बहुत अक्लमन्द था।

[87] Khiradmand – name of the Vazir of the King Azad Bakht

वह बोला — "हालॉकि राजा साहब ने उनको तंग करने के लिये बिल्कुल मना किया हुआ है फिर भी तुम जाओ। मैं भी उनके पास जाऊँगा अगर अल्लाह की मेहरबानी होगी तो वह मुझको भी बुला लेंगे।"

यह कह कर वह उन सबको ले कर दरबारे आम में चला गया। वहॉ उनको छोड़ कर वह फिर दरबारे खास[88] में गया और वहॉ से एक खास नौकर[89] के हाथों यह खबर भेजी "आपका यह बूढ़ा नौकर बाहर आपका इन्तजार कर रहा है। बहुत दिनों से उसने आपको देखा नहीं है। वह आशा करता है कि वह एक बार आपको देख कर आपके कदमों को चूम कर शान्त हो जायेगा।"

राजा ने वजीर की यह विनती सुनी। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि वजीर ने उसकी कितने सालों तक सेवा की है वह कितना अक्लमन्द है उसके अन्दर कितना उत्साह है वह कितना वफादार है और कितनी बार उसने उनकी सलाह मानी है उसने नौकर से कहा— "जाओ और खिरातमन्द को अन्दर भेज दो।"

जैसे ही इजाज़त मिली वजीर राजा के सामने जा पहुॅचा। झुक कर उनको सलाम किया और छाती पर हाथ बॉध कर खड़ा हो गया। उसने राजा की अजीब सी और बदली हुई शक्ल देखी तो

[88] Translated for the words "Private Hall of Audience". In this hall only private problems are discussed.
[89] I have used this word for the English word "Eunuch" so as to keep some descency in language.

उसने देखा कि रोते रोते और भूख से उसकी आखें गड्ढे में धॅस गयी हैं। उसके शरीर का रंग पीला पड़ गया है।

यह सब देख कर खिरातमन्द अपने आपको रोक न सका और राजा को देखते ही उसके पैरों पर गिर पड़ा। राजा ने वजीर का सिर अपने हाथों से उठाया और बोला — "लो अब तो तुमने मुझे देख लिया है अब तो तुम सन्तुष्ट हो? जाओ और अब मुझे फिर बीच में परेशान न करना। जाओ और राज काज सॅभालो।"

खिरातमन्द ने रोते हुए कहा — "आपका यह गुलाम जिसको आपका इतना प्यार मिला है और आपके हालचाल ठीक रहे तो कभी भी किसी राज्य का राजा बन सकता है। पर आपके इस अकेले में रहने की वजह से यह सारा राज्य नष्ट हुआ जा रहा है। इसका अन्त कोई बहुत खुशहाली नहीं है।

आपके इस शाही दिमाग में क्या घुस गया है? अगर आप इस विरासत में मिले हुए राज्य को ठीक से सॅभालेंगे तभी आपके लिये सबसे अच्छा रहेगा। आप हुक्म करें तो मैं इस राज्य को राज करने में जो आपने अपनी नासमझी बर्ती है मैं वह आपको बताऊॅ।

अगर आपने अपने गुलामों को इज़्ज़त दी है उनके काम किये हैं तो मैं उसी का वास्ता दे कर आपसे कहता हूॅ कि आप आराम से रहें और आपके नौकर लोग काम करते रहेंगे। अगर आप इस तरह की परेशानी सहेंगे तो अल्लाह न करे फिर नौकरों का क्या फायदा।"

राजा बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो। पर जो दुख मेरे दिल पर है उसका कोई इलाज नहीं है खिरदमन्द।"

राजा आगे बोला — "ओ खिरदमन्द सुनो। मेरी सारी उम्र निकल गयी राज्यों को जीतने में और अब मैं इस उम्र तक पहुँच गया हूँ कि अब मुझे अपने सामने केवल मौत ही दिखायी देती है।

मुझे अल्लाह का सन्देश भी मिल गया है। मेरे बाल भी सफेद हो चले हैं। एक कहावत है "हम सारी रात सोये तो क्या हम सुबह को भी नहीं उठेंगे?" अभी तक मेरे कोई बेटा नहीं है कि मेरे दिमाग में शान्ति हो और मैं इसी लिये बहुत दुखी हूँ।

मैंने सब कुछ छोड़ दिया है। जो कोई चाहे वह मेरा राज्य और खजाना ले सकता है। मेरे लिये उनका कोई इस्तेमाल नहीं है। वैसे भी एक न एक दिन तो मुझे इसे छोड़ना ही है और इसे छोड़ कर जंगल में और पहाड़ों पर चले जाना है। फिर तो मुझे अपना चेहरा भी किसी को नहीं दिखाना है।

इस तरीके से मैं अपनी ज़िन्दगी के ये थोड़े से दिन सबसे अच्छे तरीके से गुजार सकूँगा।

अगर कोई जगह मुझे अच्छी लग गयी तो मैं वहीं बैठ जाऊँगा और अपना सारा समय मैं अल्लाह की सेवा में गुजार दूँगा। शायद मेरा भविष्य और ज़्यादा खुशी देने वाला हो। यह दुनियाँ तो मैं बहुत देख चुका। मुझे इसमें कोई खुशी नहीं मिली।"

यह कह कर राजा एक गहरी साँस ले कर चुप हो गया।

खिरदमन्द इस राजा के पिता के समय से ही इस राज्य का वजीर था। और जब यह राजा उनका वारिस था तभी से वह इस राजा को बहुत चाहता था। इसके अलावा वह अक्लमन्द भी था और उसके अन्दर उत्साह भी था।

उसने राजा आज़ाद बख्त से कहा — "नाउम्मीदी तो अल्लाह की शान में हमेशा से ही एक गलती रही है। जिसने एक चुटकी में **18** हजार प्रकार के जीव पैदा किये हैं[90] वह आपको बच्चे तो बिना किसी मुश्किल के दे ही सकता है।

ओ ताकतवर राजा आप ऐस ख्याल अपने दिल से निकाल दीजिये वरना आपकी सब जनता भी परेशान हो जायेगी। और आपका वह राज्य भी जिसको आपने और आपके पुरखों ने कितनी मेहनत और मुश्किलों से बनाया है यह सब एक पल में नष्ट हो जायेगा। अल्लाह करे कि आपकी किसी तरह की कोई बदनामी न हो।

और इसके अलावा फिर आपको "आखिरी दिन"[91] अल्लाह को जवाब भी तो देना है। जब वह आपसे पूछेगा कि "मैंने तुझे बादशाह बना कर भेजा था अपने बहुत सारे जीव तेरी देखभाल में रखे थे पर तूने तो मेरे अन्दर का विश्वास ही खो दिया। तूने तो अपना काम छोड़ कर उन सबको दुखी किया।"

[90] The Asiatics reckon the animal species at 18,000; a number which even the fertile genius of Buffon has not attained. Yet the probability is, that the orientals arc nearer the true mark; and the wonder is, how they acquired such correct ideas on the subject.

[91] The Day of Judgment

आप इस सवाल का क्या जवाब देंगे। उस समय आपकी ये प्रार्थनाऐं और भक्ति आपके काम नहीं आयेंगी। गुलाम की इस बदतमीजी को माफ करें पर घर छोड़ कर जंगल जंगल घूमना तो जोगियों[92] का काम है राजाओं का नहीं। आपको जो काम सौंपा गया है आपके लिये वही काम करना उचित है।

अल्लाह को याद करना और उसकी भक्ति केवल जंगल और पहाड़ों तक ही सीमित नहीं है। मैं समझता हूँ कि योर मैजेस्टी ने यह कविता तो सुनी ही होगी "अल्लाह तो उसके पास है पर वह उसको बाहर ढूँढता है बच्चा तो उसकी बाँहों में है पर उसने शहर में ढिंढोरा पीटा हुआ है।

यह कहावत हिन्दी में कुछ ऐसे कही जाती है "बगल में छोरा शहर में ढिंढोरा" यानी चीज़ तो अपने पास ही है और बाहर सब जगह उसे शोर मचा मचा कर ढूँढ रहे हो।

अगर आप न्यायपूर्वक काम करें तो इस गुलाम की सलाह मानें। ऐसी हालत में योर मैजेस्टी अल्लाह को हमेशा ही अपने दिमाग में रखें और उसकी पूजा प्रार्थना करते रहें। उसकी देहरी से कोई खाली नहीं लौटा। आप दिन में अपना राज काज देखें गरीबों और दुखियों के साथ न्याय करें इससे अल्लाह के बनाये सब जीव आपकी खुशहाली की छाया में आराम से रहेंगे।

[92] Translated for the word "Hermits. Literally, "Fakirs and Jogis" either term denotes "hermit," the former being applied to a Musalman, the latter to a Hindu.

रात को आप प्रार्थना करें और मुहम्मद साहब से दुआ माँगें। साधु फ़कीर दरवेशों आदि से सहायता माँगें। अगर अल्लाह चाहेंगे तो आपकी दिल की इच्छा जरूर पूरी होगी।

जिस दुख से आपका शाही दिल दुखी है उसे जरूर ही शान्ति पहुँचेगी। लावारिसों को बेसहाराओं को बन्दियों को जिन माँ बाप के बहुत सारे बच्चे हों उनको और असहाय विधवाओं को खाना खिलायें।

इन अच्छे कामों की दुआओं से आपके दिल को खुशी मिलेगी। हमेशा अल्लाह से अपने लिये दुआ माँगें क्योंकि जो वह चाहता है एक पल में कर सकता है।"

इस तरह वजीर खिरदमन्द के वश में जो कुछ था वह उसने राजा को समझाया। राजा आज़ाद बख्त ने उसकी बात को समझा और कुछ सोच कर बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो। चलो इसको भी कर के देखते हैं। और फिर अल्लाह की मर्जी तो सबसे ऊपर है ही।"

जब राजा का दिमाग कुछ शान्त हुआ तो उसने अपने वजीर से पूछा कि उसके दूसरे मन्त्री और कुलीन लोग कैसे थे और क्या कर रहे थे। वजीर ने जवाब दिया कि सभी लोग अपनी अपनी तरह से योर मैजेस्टी की ज़िन्दगी खुशहाली सलामती तन्दुरुस्ती और आपको इन दुख भरे हालात से बाहर निकलने के लिये प्रार्थना कर रहे थे।

उनको कुछ पता नहीं कि वे क्या कर रहे हैं और उन्हें क्या करना चाहिये। आप उनको अपने दर्शन दें ताकि उनका दिमाग थोड़ा शान्त हो सके। सो इस फैसले के अनुसार वे सब अब आपका दीवाने आम में इन्तजार कर रहे हैं।"

राजा बोला — "अगर अल्लाह की कृपा हुई तो मैं कल अपना दरबार लगाऊँगा। उनसे कह देना कि वे सब कल उस दरबार में आयें।"

राजा का यह वायदा सुन कर वजीर खिरदमन्द बहुत खुश हुआ। खुशी के मारे उसके दोनों हाथ ऊपर उठ गये। उसने राजा के लिये दुआ की कि जब तक यह धरती और आसमान हैं अल्लाह करे योर मैजेस्टी का ताज और राजगद्दी रहे।"

तब वह राजा से बाहर आ कर उसने यह खुशखबरी बाहर आ कर सब कुलीन आदमियों को सुनायी। सारे कुलीन लोग खुशदिल और सन्तुष्ट हो कर अपने अपने घरों को चले गये। यह खबर सुन कर कि राजा कल अपना दरबार लगायेंगे सारे शहर ने खुशियाँ मनायीं।

अगले दिन सुबह राज्य के सारे नौकर चाकर कुलीन और छोटे सभी दरबार में आये और अपनी अपनी हैसियत के अनुसार राजा को देखने के लिये अपनी अपनी जगह बैठ गये।

जब दिन का एक प्रहर[93] बीत गया तो एकदम से परदा उठा। राजा अपने दरबार में आये और अपनी राजगद्दी पर आ कर बैठ गये। खुशी से नौबतखाने में संगीत के वाद्य बज उठे। नजराने दिये गये। सबका आदर सत्कार किया गया। सबको उनकी हैसियत के अनुसार भेंटें दी गयीं। सब बहुत खुश थे।

दोपहर को हिज़ मैजेस्टी उठे और अपने महल में चले गये। महल में जाने के बाद थोड़ी देर तक वे वहॉ आनन्द करते रहे फिर आराम करने चले गये।

उस दिन से राजा ने अपना यह नियम बना लिया कि वह हर सुबह अपना दरबार लगाते थे और दोपहर के बाद का समय अध्ययन और अल्लाह की भक्ति में लगाते थे। उस समय वह अल्लाह से माफी मॉगते और अपनी इच्छा पूरी करने के लिये प्रार्थना करते।

एक दिन कुछ पढ़ते हुए राजा ने एक जगह पढ़ा कि अगर कोई अपने दुख में इतना ज़्यादा डूबा हुआ है कि उसे कोई आदमी तसल्ली नहीं दे सकता तो उसको अपना दुख भगवान से कहना चाहिये। उसको मरे हुए लोगों के मकबरों कब्रों आदि पर जाना

[93] In India, even today, the day is divided into four equal portions, called Prahars or Pahar or watches, of which the second Prahar is terminated at noon; hence, do-pahar-din, mid-day. In like manner was the night divided; hence, do-pahar-raat, midnight. The first pahar of the day began at sunrise, and of the night at sunset; and since the time from sunrise to noon made exactly two pahars, it follows that in the North of India the Pahar or Prahar must have varied from three and a-half hours about the summer solstice, to two and a-half in winter, the Pahars of the night varying inversely.

चाहिये और उनके ऊपर मुहम्मद के द्वारा अल्लाह की दुआ के लिये प्रार्थना करनी चाहिये।

अपने आपको उसके आगे कुछ नहीं समझना चहिये। किसी भी आदमी की कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिये। उसको एक चेतावनी समझ कर रोना चाहिये।

अल्लाह की ताकत को समझ कर यह कहना चाहिये कि इस धरती और आसमान के बीच में कोई भी अमर नहीं है। कितने ताकतवर राजा आये और चले गये। कितने राज्य और सम्पदा जो धरती पर जन्मे वे आसमान के उनके ऊपर चारों तरफ घूमने से सब मिट्टी में मिल गये।

लेखिका का नोट — इसी सन्दर्भ में कबीर दास जी का एक दोहा याद आता है –
चलती चाकी देख कर दिया कबीरा रोय, दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय

अब अगर तुम उन हीरो को देखो तो सिवाय धूल के एक ढेर के उनका तो एक टुकड़ा भी नहीं बचा। सारे के सारे अपनी सम्पत्ति अपनी जायदाद अपने घर अपने बच्चे अपने दोस्त अपने हाथी अपने घोड़े यहीं छोड़ कर चले गये।

दुनियॉ की ये सब चीज़ें उनके किसी काम की नहीं। यहॉ तक कि आज तक कोई उनको किसी नाम से भी नहीं जानता। लोग यह भी नहीं जानते कि वे कौन थे। कब्र में उनकी क्या हालत है कोई यह भी नहीं जानता क्योंकि उनके शरीरों को चींटियॉ कीड़े मकोड़े

सॉप आदि नष्ट कर गये हैं। और किसी को यह भी क्या पता कि उनका क्या हुआ। या फिर उन्होंने अल्लाह से अपना हिसाब किताब कैसे सिलटाया।

इन शब्दों पर काफी सोचने के बाद उसको इस दुनियॉ के बारे में तो यह सोचना चाहिये कि यह सारी दुनियॉ तो झूठी है तभी उसके दिल का कमल हमेशा खिलता चला जायेगा। किसी भी हालत में कभी मुरझायेगा नहीं।"

जब राजा ने यह सब पढ़ा तो उसको अपने वजीर खिरदमन्द की सलाह याद आयी तो उसको लगा कि उसने भी यही कहा था। बस उसके दिमाग में आया कि उसको भी ऐसा ही करना चाहिये।

पर उसने यह भी सोचा कि अगर वह घोड़े पर सवार हो कर एक राजा की तरह से अपने साथ बहुत सारे आदमी ले कर जायेगा तो यह तो ठीक नहीं होगा। सो इससे पहले तो मुझे अपनी पोशाक बदलनी चाहिये और फिर उसके बाद में रात को अकेले ही कब्रिस्तान में और अल्लाह के घरों में जाना चाहिये।

वहॉ पहुॅच कर मुझे सारी रात जागना चाहिये। हो सकता है कि उन पवित्र लोगों की संगत में बैठ कर मेरी इस दुनियॉ की इच्छाऐं पूरी हो जायें और मुक्ति का कोई रास्ता मिल जाये।

ऐसा सोच कर राजा ने एक रात मोटे और मैले कपड़े पहने, कुछ पैसे अपने साथ लिये और चोरी से अपने किले के बाहर निकल गया। वह मैदानों की तरफ चल दिया।

चलते चलते वह एक कब्रिस्तान में आ पहुँचा। वह अपनी प्रार्थनाऐं बराबर दिल से दोहराता हुआ चला आ रहा था। उसी समय एक बहुत तेज़ हवा का झोंका आया। उसे तूफान भी कहा जा सकता है।

अचानक राजा ने अपने सामने रोशनी देखी जो सुबह के तारे की तरह चमक रही थी। उसने सोचा इस तूफानी मौसम में और इतने अँधेरे में यह रोशनी बिना किसी चमत्कार के ऐसे ही तो नहीं चमक सकती।

या फिर यह कोई तलिस्मान भी हो सकता है क्योंकि अगर नाइट्रो और सल्फर को दिये की बत्ती के चारों तरफ छिड़क दिया जाये तो हवा फिर कितनी भी तूफानी क्यों न हो यह रोशनी कभी बुझ नहीं सकती। और नहीं तो क्या यह दिया किसी पवित्र आदमी ने जला कर रखा है?

चलो जो कुछ भी है यह। मुझे वहाँ जा कर देखना चाहिये कि यह क्या है। क्या पता इस दिये की रोशनी से मेरे घर के दिये की रोशनी भी जल जाये। ऐसा सोच कर राजा उसी दिशा में चल दिया जिस दिशा में उसको वह रोशनी दिखायी दे रही थी।

जब वह उस रोशनी के काफी पास पहुँच गया तो उसने देखा कि वहाँ पर अजीब से दिखायी देने चार फ़कीर[94] बैठे हुए हैं।

[94] Fakirs are holy mendicants, who devote themselves to the expected joys of the next world, and abstract themselves from those of this silly transitory scene; they are generally fanatics and

उनके शरीर पर गेरुआ या नारंगी रंग के कपड़े हैं। उनके सिर उनके घुटनों पर झुके हुए हैं। सब बिल्कुल चुपचाप बैठे हुए हैं। उनकी सब इन्द्रियॉ उनके वश में हैं।

उनकी हालत ऐसी है जैसी कि किसी ऐसे यात्री की होती है जो अपने देश से दूर हो अपने समाज से दूर हो अपने दोस्तों से दूर अकेले हो। जैसे वे बहुत दुखी हों या जैसे उनका कुछ खो गया हो।

इस तरह से वे चारों फ़कीर वहॉ पत्थर की मूर्तियों की तरह बैठे हुए थे। उनके सामने ही रखे एक पत्थर पर उनका दिया जल रहा था। हवा उसको छू भी नहीं पा रही थी जैसे आसमान उसके लिये छतरी का काम कर रहा हो ताकि बिना किसी खतरे के वह आराम से जल सके।

यह दृश्य देख कर राजा अजाद बख्त को विश्वास हो गया कि इसकी इच्छा यहॉ जरूर पूरी होगी। उसने अपने मन में अपने आप से कहा "यहॉ अल्लाह के भेजे हुए लोगों के पैरों के निशानों की दुआ से तेरे मन की इच्छा जरूर ही पूरी होगी। तेरी आशाओं का पेड़ तो केवल उनकी एक नजर से ही हरा भरा हो जायेगा और उसमें फल आ जायेंगे।

---

enthusiasts-- sometimes mad, and often hypocrites. They are much venerated by the superstitious Asiatics, and are allowed uncommon privileges, which they naturally often abuse.

जा तू उनके पास जा और उनको अपनी कहानी सुना। उनके पास बैठ। हो सकता है कि उनको तेरे ऊपर दया आ जाये और वे तुझे कोई ऐसी प्रार्थना बता दें जिसको अल्लाह स्वीकार कर ले।

अपने दिल में इस तरह का पक्का इरादा कर के वह आगे बढ़ने ही वाला था कि उसके अपने इस फैसले को रोक लिया — "अरे पगले इतनी जल्दी मत कर। पहले ज़रा भॉप तो ले। तू उनके बारे में अभी जानता ही क्या है कि वे कौन हैं कहॉ से आये हैं और कहॉ जा रहे हैं।

तुझे यह क्या पता हो सकता है कि वे कौन हैं। क्या हो अगर वे देव[95] हों या फिर गुल[96] हों जो आदमी का रूप ले कर यहॉ बैठे हों।

फिर भी हर हाल में जल्दी में उनके पास जाना और उनको इस तरह से तंग करना ठीक नहीं है। इस समय तू ऐसा कर कि कहीं छिप जा और इन दरवेशों के बारे में जानने की कोशिश कर।"

सो राजा ने ऐसा ही किया। वह इतनी शान्ति से एक कोने में छिप गया कि उनमें किसी एक ने भी उसके पैरों की आवाज भी नहीं

[95] The Dev is a malignant spirit, one of the classes called jinn by the Arabs, vide Lane's "Arabian Nights," vol. i. p. 30. The jinn or genii, however, occasionally behave very handsomely towards the human race, more especially towards those of the Muhammadan faith. Dev is different from Hindu's Devta.

[96] The Ghul is a foul and intensely wicked spirit, of an order inferior to the jinn. It is said to appear in the form of any living animal it chooses, as well as in any other monstrous and terrific shape. It haunts desert places, especially burying grounds, and is said to feed on dead human bodies.

सुनी। फिर उसने ध्यान लगा कर सुनना शुरू किया कि वे आपस में क्या बातें कर रहे थे।

इत्तफाक से उनमें से एक फकीर को छींक आ गयी तो वह बोला — "अल्लाह की जय हो।"

उसकी छींक की आवाज से दूसरे तीन कलन्दरों[97] का ध्यान बॅट गया। उन्होंने दिये की लौ कुछ बढ़ायी तो रोशनी कुछ और बढ़ गयी। सब अपने अपने कालीन पर बैठे हुए थे सबने अपने अपने हुक्के जलाये और हुक्के पीने शुरू कर दिये।

इन आज़ादों[98] में से एक आज़ाद ने कहा — "दोस्तों। एक दूसरे के दर्द में साथ देने वाले, वफादारी से खानाबदोशों की तरह से सारी दुनियॉ में घूमने वाले। हम चार लोग आसमान के चारों तरफ घूमने की वजह से दिन और रात होने से अपने सिर पर हमेशा धूल लिये हुए दरवाजे दरवाजे काफी समय से घूम रहे हैं।

अल्लाह का लाख लाख शुक्र है कि अपनी अच्छी किस्मत होने की वजह से हम आज इस जगह पर मिले हैं। कल क्या होना है किसी को कुछ पता नहीं और न हमें यह पता है कि कल क्या होगा। हम लोग इकट्ठे रहेंगे या फिर अकेले ही रह जायेंगे।

---

[97] Kalandars are a more fanatic set of Fakirs. Their vow is to desert wife, children, and all worldly connexions and human sympathies, and to wander about with shaven heads.

[98] The term Azad, "free, or independent," is applied to a class of Darweshes who shave the beard, eyelashes and eyebrows. They vow chastity and a holy life, but consider themselves exempt from all ceremonial observances of the Muhammadan religion.

रात हमारे ऊपर बहुत भारी है। और इतनी जल्दी सोने जाना भी ठीक नहीं है। तो हमें अपने अपने बारे में एक दूसरे को वह सब सच सच सुनाना चाहिये जो कुछ इस दुनियॉ में हमारे साथ घटा हो।

इस तरह से हमारा यह समय बीत जायेगा। और अगर थोड़ा बहुत समय बचा तो फिर हम लोग लेट जायेंगे।"

तो दूसरे तीनों बोले — "हॉ सरदार। यह तो आप ठीक कहते हैं। जैसा आप कहें। पहले आप हमें अपने साथ हुई घटना बताइये। उसके बाद फिर हम बतायेंगे।"

इस तरह उन्होंने एक दूसरे को अपनी अपनी कहानी बतायी। दो दरवेशों की कहानियॉ सुनने का बाद बादशाह आज़ाद बख्त ने उन्हें अपने महल में बुलवा लिया और वहॉ फिर उसने पहले उनको अपनी कहानी सुनायी और फिर बचे हुए दोनों दरवेशों की कहानियॉ सुनी।

इस तरह से इसमें पॉच कहानियॉ हैं।

14 इल डैकामिरोन[99]

[99] Il Decamerone. By Giovanni Boccaccio. 1353. 100 tales.

15 स्ट्रापरोला की रातें[100]

आरम्भ में हमने तुम्हें बताया था कि मध्यकालीन समय में इटली से इस शैली में तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं। एक पुस्तक "इल डैकामिरोन" थी दूसरी पुस्तक यह "फ़ेसशस नाइट्स औफ स्ट्रापरोला" है और तीसरी "इल पैन्टामिरोन" है। "इल डैकामिरोन" पुस्तक के आरम्भ की कथा हम तुम्हें बता चुके हैं अब पढ़ो "फ़ेसशस नाइट्स औफ स्ट्रापरोला" के बारे में।

लोम्बार्डी की राजधानी मिलान[101] में जिसके शानदार महलों में बहुत शानदार स्त्रियॉ रहती थीं जो बहुत अमीर थीं और जिनके महलों में ऐसी ऐसी चीज़ें लगी हुई थीं जो किसी भी शहर को शानदार बना सकती थीं। वहॉ एक बिशप[102] रहता था। इसको कानूनी तौर पर मिलान का राज्य विरासत में मिला हुआ था।

पर बुरा समय आने की वजह से नफरत की वजह से और राज्य की कभी न खत्म होने वाली गड़बड़ी की वजह से वह वहॉ से

[100] The Facetious Nights of Straparola. By Giovanni Francesco Straparola. 1550 and 1553. 2 vols. First Translation in English by HG Waters. London: Lawrence and Bullen. 1894. 75 tales.
This is one of the earliest books published in the history of folktales. It passed through 16 editions from 1550 to 1570 – in just 20 years.

[101] In the city of Milan, the capital of Lombardy

[102] Bishop is an high official of the church. His name was Ottaviano Maria Sforza.

छिप कर अपनी विधवा बेटी लुकेशिया[103] को साथ ले कर लोदी[104] चला गया जहॉ वे कुछ महीने रहे।

अभी उनको वहॉ रहते हुए कोई ज़्यादा समय नहीं हुआ था कि उनके रिश्तेदारों ने उनका पता पा लिया और उनको वहॉ भी तंग करने लगे। सो नाखुश राजकुमार ने जब देखा कि वह अभी भी उनकी बुरी नीयतों का शिकार है तो उसने अपना पैसा और जवाहरात जो कुछ भी उसके पास था उसे और अपनी बेटी को साथ ले कर दूर वेनिस[105] चला गया।

वहॉ वह एक बहुत ही भले आदमी बैलट्रामो[106] के घर जा कर ठहर गया। वहॉ उसने उनका बहुत अच्छे से स्वागत किया और ज़िद की कि वे उसके पास उसी के घर में रहें। सो वे उसी के साथ रहने लगे।

पर किसी दूसरे के घर में रहने में थोड़े बन्धन तो होते ही हैं सो इयूक ने बहुत सोच विचार कर यह निश्चय किया कि वह वहॉ से अलग कोई अपनी जगह ले लेगा और फिर वहीं रहेगा। सो वह अपनी बेटी के साथ एक जहाज़ ले कर मोरानो चला गया।

वहॉ उसको एक बहुत सुन्दर सा महल दिखायी दे गया जो उस समय खाली पड़ा था। उसने उसको अन्दर से देखा तो उसकी सुन्दर स्थिति उसके बड़े बड़े कमरे बड़ी बड़ी गैलरी खुशबूदार फूलों और

[103] Lucretia – name of the daughter of the Bishop. She was the wife of Giovanni Francesco Gonzaga.
[104] Lodi – name of a place
[105] Venice is a very important city of Italy and is called “City of Canals” too.
[106] Ferier Beltramo – the good man in Venice where the Bishop went to stay.

फलों के पेड़ों से भरे हुए बागीचे देख कर उसका दिल खुश हो गया।

वहॉ वह उसकी संगमरमर की सीढ़ियों से ऊपर चढ़ा और उसके बड़े बड़े कमरे देखे छज्जा देखा जो पानी की तरफ खुलता था और भी चारों तरफ का दृश्य देखा जो उसको बहुत अच्छा लगा।

राजकुमारी भी उस दृश्य को देख कर ठगी सी खड़ी रह गयी। उसने अपने पिता से बहुत ही मुलायमियत से कहा कि वह जगह उसको बहुत सुन्दर लगी इसलिये वह उसे उसके लिये किराये पर ले लें। उसने उसे ले लिया और उसी में रहने लगा।

इससे वह बहुत खुश हुई और अब वह सुबह शाम छज्जे पर बैठ कर मछलियॉ देखा करती जो वहॉ के साफ नमकीन पानी में तैरती रहतीं। कभी कभी वह उनको छोटे छोटे पत्थर मारा करती। ऐसा करने में उसको बड़ा आनन्द आता।

और अब क्योंकि वह उन स्त्रियों से दूर हो गयी जो पहले उसके दरबार में आया करती थीं सो उसने उनकी जगह दस और अच्छी स्त्रियॉ चुन ली थीं जो जितनी अच्छी थीं उतनी ही सुन्दर भी थीं। उनकी अच्छाइयों और सुन्दरता को बखानने में समय कम पड़ जायेगा इसलिये हम अभी उसे यहॉ रोक देते हैं।

इनमें से एक थी लोडोविचा[107] जिसकी सितारों जैसी चमकती ऑखें थीं। जो भी उसको देखता वह उसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता था।

दूसरी थी विसैन्ज़ा[108] जो ऊपर से ले कर नीचे तक बहुत सुन्दर थी। वह बड़ी शान से चलती थी और उसके तौर तरीके भी बड़े लोगों वाले थे। उसका चेहरा बड़ा कोमल था जिसे जो देखता वह ताजा हो जाता।

तीसरी थी लियोनोरा[109]। वह अपनी प्राकृतिक सुन्दरता की वजह से बहुत सुन्दर लगती थी। वह इतनी दयालु और इतनी तमीज़दार थी कि दुनियॉ में उसके जैसा मिलना मुश्किल था।

चौथी का नाम अल्टीरिया[110] था जिसके बहुत सुन्दर सफेद बाल थे और वह हमेशा लुकेशिया की सेवा में लगी रहती थी। पॉचवीं का नाम लौरैटा[111] था जो देखने और बर्तने में सुन्दर और अच्छी थी पर कभी कभी थोड़ी सी बेइज़्ज़ती करने वाली थी। पर जो उससे प्यार करना चाहते उसकी एक नजर के लिये लालायित रहते।

छठी ऐरिट्रीया[112] थी। हालॉकि कद में वह थोड़ी छोटी थी पर सुन्दरता और शान में वह किसी से कम नहीं थी। उसकी ऑखें सूरज की किरनों से भी ज़्यादा चमकदार थीं। उसका मुँह छोटा था

[107] Lodovica – one of the ten women friends of Lucretia.
[108] Vicenza – other woman of the ten women friends of Lucretia.
[109] Leonora – third woman friend of Lucretia
[110] Alteria - fourth woman friend of Lucretia
[111] Lauretta – fifth woman friend of Lucretia
[112] Eritrea – sixth woman friend of Lucretia

और उसके अन्दर कुछ भी ऐसा नहीं था जिसकी प्रशंसा न की जा सके।

सातवीं का नाम था कैटेरूज़ा ब्रूनैटा[113]। वह खुद बड़ी शान वाली थी और बहुत ही मीठा और प्यारा बोलती थी। उसकी मीठी बातें न केवल आदमियों को ही अपने जाल में फॉस लेती थीं बल्कि स्वर्ग से कामदेव को भी नीचे धरती पर बुलाने की ताकत रखती थीं।

आठवीं थी अरियाना[114]। यह उम्र में तो छोटी थी पर दिखने में गम्भीर और सुलाने वाली थी। वह फर्राटे से बोलती थी और उसमें दैवीय गुण थे जिनको लोग बहुत कीमती समझते थे और उनको आदर देते थे। वे उसके व्यक्तित्व में आसमान के सितारों की तरह चमकते थे।

नवीं इसाबेला थी जो बहुत ही गुणों वाली लड़की थी जो अपनी हाजिरजवाबी और भाषा की चतुरायी की वजह से अपनी सब साथिनों में प्रशंसा की पात्र थी।

लुक्रेशिया की आखिरी यानी दसवीं साथिन थी फ़िओरडायना[115]। इसका दिमाग दुनियॉ की किसी भी स्त्री के मुकाबले में हमेशा ही बहुत अच्छे विचारों से भरा रहता था और हाथ हमेशा अच्छे कामों में लगे रहते थे।

---

[113] Cateruzza Brunetta – seventh woman friend of Lucretia

[114] Arianna – eighth woman friend of Lucretia

[115] Fiordiana - tenth woman friend of Lucretia

ये दसों सुन्दर स्त्रियॉ लुक्रेशिया की सेवा में लगी रहतीं – सामूहिक रूप से भी और अकेली भी।

लुक्रेशिया ने इन दस स्त्रियों के अलावा दो स्त्रियॉ और चुन रखी थीं जो आदरणीय थीं कुलीन परिवार की थीं मूल्यवान थीं जो उसे समय समय पर सलाह देती रहती थीं। उनमें से एक उसके दॉये रहती और दूसरी बॉये। इनमें से एक का नाम था लेडी चिआरा और दूसरी का नाम था वरोनिका[116]।

इन कुलीन लोगों के साथ के लिये और भी बहुत सारे लोग थे – एक बिशप था, एक इंगलैंड के राजा का एम्बैसेडर था, एक रोड्स का नाइट और मिलान के लोगों को उपदेश देने वाला विद्वान पैट्रो बैम्बो[117] था। और भी कई लोग उनके साथ थे।

ये सब अक्सर रोज शाम को लुक्रेशिया के महल में मिलते थे और आपस में आनन्द करते थे नाचते थे गाते थे आपस में एक दूसरे से बातें करते थे पहेलियॉ बूझते थे जिनका केवल मैम[118] ही जवाब दे सकती थी।

पर जैसे जैसे कार्निवाल[119] के दिन पास आते जा रहे थे रोज ही झगड़ा बढ़ता जा रहा था। सो मैम ने उनसे दुखी होते हुए कहा कि

---

[116] There were two women more to help Lucretia for counseling her – Lady Chiara and Madam Veronica.

[117] Pietro Bembo the knight of Rhodes and preacher of Milan

[118] Wherever it is used it is used for Lucretia.

[119] Carnival means a kind of fair

वे अगले दिन आयें ताकि वे सब यह निश्चय कर सकें कि उन दिनों में वे लोग किस तरह की दावत का इन्तजाम करें।

अगले दिन शाम को वे सब उसके कहे अनुसार उसके महल में जमा हुए और अपने अपने ओहदे के अनुसार बैठ गये। तब मैम ने कहा — "आदरणीय सज्जनों और कुलीन स्त्रियों। आज हम लोग यहॉ अपनी एक बात पर बात करने के लिये इकट्ठा हुए हैं।

मुझे यह ठीक लगता है कि हम अपना यह रोज का कार्यक्रम कार्निवाल के दिनों के लिये बदल लें ताकि हम लोग यह समय हॅसी खुशी से गुजार सकें। आप सब लोग कोई सलाह दें जो सबको अच्छी लगे और सब उसको मानने के लिये तैयार हों।

और यह बदलाव जितने ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को अच्छा लगेगा उतना ही अच्छा है। अगर सब उसको मान लेंगे तो फिर हम उसे ही अपना लेंगे।"

वहॉ बैठे हुए सभी सज्जनों और कुलीन स्त्रियों ने एक आवाज में कहा कि वे लोग वही करेंगे जो मैम को अच्छा लगेगा। मैम ने जब उनकी मर्जी सुनी तो उसने उनसे कहा — "तो आप लोग यह चाहते हैं कि मैं यह निश्चय करूॅ कि इन दिनों में हम लोग क्या करे।

मैं अपनी तरफ से यह प्रस्ताव रखती हूॅ कि हम अपनी हर शाम जब तक कार्निवाल चलता है एक नाच से शुरू करें। पॉच स्त्रियॉ अपनी अपनी पसन्द के गाने गायें। और जब यह खत्म हो जाये तो

पॉच स्त्रियॉ लौटरी डाल कर जिसके हिस्से में जो आये कहानी सुनायें। ये कहानियॉ किसी पहेली पर खत्म हों जिन्हें दूसरे लोग सुलझायें अगर उनके पास अक्ल हो तो।

कहानी खत्म होने पर हम सब अपने अपने घर चले जायेंगे। अगर आप सबको मेरा यह प्रस्ताव मंजूर न हो तो मैं दूसरों से प्रार्थ ना करती हूॅ कि वे अपनी अपनी राय दें। अब मैं आप सबको अपनी अपनी राय देने के लिये बुलाती हूॅ।"

मैम का यह प्रोग्राम सबने पसन्द किया। फिर उसने सोने का एक कटोरा लाने के लिये कहा जिसमें वहॉ मौजूद पॉच स्त्रियों के नाम लिख कर पर्ची डाली गयी।

पहली पर्ची सुन्दर लौरेटा के नाम की निकली। वह बहुत शर्मीली थी सो वह शर्म से गुलाबी हो गयी। अगली पर्ची अल्टीरिया के नाम की निकली। और फिर कैटेरूज़ा फिर ऐरिट्रीया और आखीर में अरियाना के नाम की पर्ची निकली।

जब परचियॉ निकालने का काम खत्म हो गया तो मैम ने संगीत के साज़ मॅगवाये और लौरेटा के सिर पर एक रिथ[120] रखवा दिया जो इस बात का सूचक था कि अगली शाम का यह कार्यक्रम लौरेटा शुरू करेगी।

[120] Wreath – a ring made of flowers and leaves. See its picture above. Whe it is of big size it is kept on the grave, but when it is small it is kept on the head like crown.

मैम को यह जान कर बहुत खुशी हुई कि उसके साथियों को अब नाचना चाहिये और जैसे ही वह अपनी इस इच्छा को ऐन्टोनियो बैम्बो से कहने ही वाली थी कि उसने फ़िओरडाना का हाथ पकड़ा जिसको वह चाहता था और नाचने के लिये खड़ा हो गया। उसके पीछे पीछे दूसरे लोग भी खड़े हो गये और खुशी खुशी नाचने लगे।

इतने आनन्द को छोड़ना आसान नहीं था पर फिर भी अनमनेपन से उसको छोड़ कर कुछ ने कुछ भाषण दिये। फिर नौजवान लोग और स्त्रियॉ वहॉ से एक दूसरे कमरे में चले गये जहॉ मेजें लगी हुई थीं। उन पर बहुत सारा मीठा रखा हुआ था और कीमती शराब रखी हुई थी।

वहॉ उन्होंने काफी देर तक हॅसी मजाक में अपना समय बिताया। यह सब खत्म होने के बाद उन्होंने मैम से विदा ली और उसने भी उन सबको आदर से विदा किया।

अगले दिन शाम को जब सब मैम के महल में इकट्ठा हुए तो मैम ने सुन्दर लौरैटा की तरफ इशारा किया कि वह अपना गाना शुरू करे।

लौरैटा को दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी वह उठी और मैम के सामने सिर झुका कर एक ऊॅचे से चबूतरे पर गयी जहॉ एक कुर्सी पड़ी हुई थी जिस पर कीमती सिल्क का कपड़ा मढ़ा हुआ था। वहॉ पहुॅच कर उसने अपनी साथिनों को वहॉ बुलाया और सबने मिल कर मैम की प्रशंसा में एक गीत गाया।

जब पॉचों स्त्रियों का गाना खत्म हो गया तो बाजा बजा और कहानी सुनाने के लिये लौरैटा ने जिसकी बारी सबसे पहले निकली थी बिना किसी को इन्तजार कराये अपनी पहली कहानी शुरू की।

इस तरह से इसमें **13** रातों में **75** कहानियॉ सुनायी गयीं।

16 इल पैन्टामिरोन[121]

भारत से दूसरे देश इटली की एक और पुस्तक। यह पुस्तक बहुत पुरानी है और सबसे पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों में से एक है। यह पहली बार इटली के नैपिल्स शहर में प्रकाशित की गयी थी और इसे इटली के एक मशहूर कवि जियामबतिस्ता बासिल ने **1634** और **1636** में प्रकाशित किया था।

इस पुस्तक ने लोक कथा लिखने वाले बाद के कई लेखकों को प्रभावित किया और उन्होंने इस पुस्तक की कहानियों को आधार बना कर उन पर कहानियॉ लिखीं। इसका नाम है "इल पैन्टामिरोन"।[122]

यह एक परियों की कहानियों की कहानी की पुस्तक है। इसमें "सोती हुई सुन्दरी" और "सिन्डरैला"[123] जैसी कहानियॉ भी हैं। इसमें भी अरेबियन नाइट्स की कहानियों वाली शैली इस्तेमाल की गयी है जिसमें एक मुख्य कहानी है और उसमें से फिर और कहानियॉ निकलती हैं।

इस पुस्तक में राजकुमारी ज़ोज़ा एक नीच रानी का मन बहलाने के लिये उसको पॉच दिन तक कहानियॉ सुनाती है। क्यों? क्योंकि

---

[121] How the Tales Came to be Told. Taken from "Stories From Pentamerone" by Giambattista Basile. Naples. 2 vols. 1634 and 1636.

[122] Pentamerone – its meaning is 50 stories. In Italian its title means – The Tale of Tales or Entertainment for Little Ones. Its Hindi translation is available free from Sushma Gupta as an e-book.

[123] "Sleeping Beauty" and "Cinderella"

उसने ज़ोज़ा के पति को चुरा लिया है और वह उससे उसे वापस लेना चाहती है। इसकी पहली कहानी इसकी आगे की कहानियों का परिचय है "ये कहानियॉ कैसे कही गयीं"।

पैन्टामिरोन में पैन्टा शब्द यूनानी भाषा का है जिसका मतलब होता है पॉच। इस संग्रह में दस कहानियॉ कहने वालियों ने पॉच दिनों में **50** कहानियॉ सुनायी हैं यानी दस कहानियॉ रोज। तो लो पढ़ो अब सबसे पुरानी परियों की कहानियों के इस संग्रह की आरम्भकी कहानी जिसने आगे की कहानियों को जन्म दिया।

यह एक पुरानी कहावत है कि कोई आदमी वही खोजता है जो उसे नहीं खोजना चाहिये और वही पाता है जो उसको नहीं पाना चाहिये। हर एक ने उस बन्दर की कहानी सुनी होगी जो अपने जूते पहनते हुए अपने ही पैरों से पकड़ा गया था।

और यही इसी ढंग से एक नीच दासी के साथ हुआ जिसने कभी जूते तो नहीं पहने पर वह अपने सिर पर एक ताज पहनना चाहती थी। पर सीधी सड़क हमेशा ही अच्छी होती है और एक समय आता है, जल्दी से या देर से, जब सारी समस्याऐं सुलझ जाती हैं सारा हिसाब बराबर हो जाता है।

आखीर में नीचता का इस्तेमाल कर के जो किसी दूसरे के हिस्से का था उसको उसने नीचे गिरा तो लिया पर जितनी तेज़ी से वह ऊॅचा चढ़ी थी उतनी ही ज़ोर से वह नीचे भी गिर गयी। यह तुम अभी देखोगे।

एक समय की बात है कि वुडी घाटी[124] के राजा के एक बेटी थी जिसका नाम था ज़ोज़ा जो कभी हॅसती हुई नहीं देखी गयी। उसके दुखी पिता ने जिसकी ज़िन्दगी की खुशी केवल उसकी बेटी थी कोई उपाय ऐसा नहीं छोड़ा जिससे उसका दुख दूर हो सके।

उसने बहुत सारे ऐसे लोगों को बुला भेजा जो लम्बे लम्बे डंडों पर चल सकते थे या फिर जो गोले के अन्दर से कूद सकते थे या फिर जो बौक्सिंग कर सकते थे या फिर उन लोगों को बुला भेजा था जो आत्माओं से बात कर सकते थे जादू दिखा सकते थे।

उसने ऐसे गेंद उछाल कर करतब दिखाने वालों को भी बुला रखा था जो कई तरह से अपने हाथों को नचा सकते थे।

उसने किस किस को नहीं बुलाया – ताकतवर आदमी, नाचते हुए कुत्ते, उछलते कूदते हॅसोड़िये, ऐसे गधे जो गिलास से पानी पीते थे। थोड़े में कहो तो उसने जो कुछ भी उससे उसको हॅसाने के लिये हो सकता था वह सब उसने आजमा कर देख लिया था। पर सारा समय बेकार गया क्योंकि कोई भी उसके होठों पर हॅसी नहीं ला सका।

सो आखीर में जब बेचारे पिता ने अपनी सारी कोशिशें कर लीं तो उसने एक और कोशिश करने का विचार किया। उसने अपने महल के दरवाजे के सामने तेल का एक बहुत बड़ा फव्वारा लगाने का हुक्म दिया।

[124] Woody Valley – a name of a place

उसने सोचा कि जब तेल सड़क पर बहेगा तब लोग उसके किनारे किनारे चींटियों के झुंड की तरह से चलेंगे, असल में उनको उस तरह से चलना ही पड़ेगा ताकि उनके कपड़े गन्दे न हों या उनको टिड्डों की तरह से उछल उछल कर चलना पड़ेगा।

या फिर बकरों की तरह से कूदना पड़ेगा, बड़े खरगोशों[125] की तरह से भागना पड़ेगा। कुछ लोगों को सँभाल सँभाल कर कदम रखने होंगे जबकि दूसरे लोग दीवार के सहारे सहारे बच बच कर चलेंगे।

इस तरह से कुछ ऐसा भी हो सकता है कि मेरी बेटी हँस जाये। सो इस प्लान के अनुसार तेल का एक बहुत बड़ा फव्वारा बनवाया गया।

एक दिन ज़ोज़ा अपनी खिड़की के सहारे खड़ी थी गम्भीर, दुखी, सिरके जैसी खट्टी कि इत्तफाक से वहाँ एक बुढ़िया आयी। उसने एक स्पंज का टुकड़ा तेल में डुबोया और उसको एक छोटे से लोटे में निचोड़ कर अपना लोटा भरने लगी जो वह अपने साथ लायी थी।

उसको तेल से अपना लोटा भरने में बहुत मेहनत करनी पड़ रही थी। पास में खड़े दरबार के एक नौकर ने उसकी तरफ एक

[125] Translated for the word “Hare”. See its picture above. It is a kind of rabbit, but wild and bigger in size.

पत्थर इतना निशाना लगा कर फेंका कि उसका वह छोटा सा घड़ा टूट गया।

इस पर वह बुढ़िया जिसकी जबान पर बाल नहीं थे[126] उस नौकर की तरफ घूमी और गुस्से में भर कर बहुत ज़ोर से बोली —

"ओ नीच छोटे कुत्ते, खच्चर, फॉसी की रस्सी, तकली[127] जैसी टॉग वाले। तेरी किस्मत खराब हो। भगवान करे तुझे भाला छेद जाये। तेरे ऊपर हजारों मुसीबतें आ पड़ें। और भी जो कुछ तेरे लिये बुरा होना है वह सब तेरे साथ हो ओ चोर।"

इस लड़के ने जिसके अभी न तो कोई दाढ़ी थी और न कुछ सोचने की अक्ल थी वह तो अभी बच्चा ही था गालियों की यह बौछार सुन कर उसको भी उसी तरह की गालियॉ दीं — "ओ जादूगरनियों की नानी। ओ बुढ़िया। ओ बच्चों को खाने वाली। तुझे जो कुछ कहना था कह चुकी?"

बुढ़िया ने जब अपनी इतनी सारी बड़ाई सुनी तो वह तो फिर से गुस्से में भर गयी। उसके हाथों से धीरज की लगाम छूट गयी वह तो पागलों जैसी दिखायी देने लगी और बन्दर की तरह से दॉत दिखाने लगी।

---

[126] It means that she had no control on her speech. She could speak anything to anybody.

[127] Translated for the word "Spindle". See its picture above.

यह दृश्य देख कर तो ज़ोज़ा की हॅसी छूट पड़ी कि वह तो खुद ही हॅसते हॅसते बेहोश सी होने लगी। पर जब बुढ़िया ने देखा कि उसकी चाल तो काम कर गयी तो वह और उत्साह में भर गयी।

उसने ज़ोज़ा की तरफ एक डरावनी नजर से देखा और बोली — "तुम्हें कभी पति न मिले जब तक तुम गोल मैदान वाले राजकुमार[128] को न पा लो।"

यह सुन कर ज़ोज़ा ने उस बुढ़िया को अपने पास बुलाया और उससे यह पूछा कि ये शब्द कह कर उसको उसने शाप दिया है या बेइज़्ज़ती की है।

बुढ़िया बोली — "तुम्हें पता होना चाहिये कि यह राजकुमार दुनियॉ का सबसे सुन्दर राजकुमार है और इसका नाम टैडियो[129] है। इसको एक परी के शाप ने इसको आखिरी बार छू कर एक शहर की दीवार के बाहर एक कब्र में रख दिया है।

उसके कब्र के पत्थर पर लिखा है कि जो कोई भी स्त्री तीन दिन के अन्दर उसके ऊपर के हुक पर टॅगे हुए घड़े को अपने ऑसुओं से भर देगी वही उसको ज़िन्दा कर सकेगी और वही उससे शादी करेगी।

[128] Translated for the words "Prince of Round-Field"

[129] Taddeo – name of the Prince of Round-Field

लेकिन किसी भी आदमी की दो ऑखों में इतनी ताकत नहीं है कि वे तीन दिन रो कर उस घड़े को अपने ऑसुओं से भर सकें। उस घड़े में आधा बैरल[130] पानी आता है।

तुम मेरी बातों पर हॅसीं इसी लिये मैंने तुम्हारे लिये यह इच्छा की है। मैं भगवान से प्रार्थना करूॅगी कि तुम इस काम को कर सको। यह मैंने तुमसे उसका बदला लेने के लिये कहा है जो तुमने मेरे साथ गलत किया है।"

ऐसा कह कर वह सीढ़ियों से तुरन्त ही नीचे चली गयी ताकि कहीं कोई उसकी पिटायी न कर दे।

ज़ोज़ा उस बुढ़िया के कहे शब्दों पर सोचती रही सोचती रही। उसके दिमाग में सैकड़ों तरह के विचार घूमने लगे और इतने घूमे कि जैसे उनकी उसमें चक्की चल रही हो।

फिर उसके दिमाग में उत्साह का एक ऐसा तीर लगा जिसने उसकी सोचने की ताकत बिल्कुल खत्म कर दी और उस पर जादू डाल दिया हो। उसने अपने पिता की तिजोरी से थोड़े से पैसे लिये और महल छोड़ कर चल दी।

[130] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above.

वह चलती गयी चलती गयी जब तक वह एक परी के किले तक पहुँची। वहाँ जा कर उसने अपने दिल का सारा बोझ उस परी पर हलका कर दिया। उसको अपना सब हाल बता दिया।

परी को इतनी सुन्दर नौजवान लड़की पर दया आ गयी जिसको किसी अनजान चीज़ के लिये इतना प्यार था और उसको पाने की उसके पास कोई सहायता नहीं थी।

उसने उसको अपनी बहिन के नाम एक चिट्ठी दी और उसको उसके पास भेजा कि वह उसकी इस काम में सहायता करेगी। उसकी वह बहिन भी एक परी थी।

यह बहिन भी बहुत ही दयालु थी और उसने भी इसका बहुत प्यार से स्वागत किया। अगली सुबह जब रात ने चिड़ियों से कहा "जिसने भी चिड़ियों के झुंड के काले साये को इधर उधर जाते देखा तो उसको इनाम दिया जायेगा।"

उस परी बहिन ने उसको एक अखरोट[131] दिया और कहा — "यह ले मेरी बच्ची। तू यह अखरोट ले जा और देख इसे सँभाल कर रखना कभी इसे तोड़ना नहीं जब तक कि तुझे इसकी बहुत जरूरत न पड़ जाये।"

[131] Translated for the word "Walnut". See its picture above.

उसके बाद उसने अपनी एक और बहिन के नाम एक चिट्ठी दी कि वह उस चिट्ठी को ले जा कर उसकी दूसरी बहिन को दे दे। उसने वह चिट्ठी उससे ली और आगे चल दी।

काफी दूर चलने के बाद ज़ोज़ा उन परियों की एक और बहिन के पास आयी तो उसने भी उसका बड़े प्यार से स्वागत किया।

अगले दिन उसने भी अपने एक और बहिन के पास भेजा। चलते समय उसने उसको एक चेस्टनट[132] दिया और उससे कहा कि वह उसको तब तक न तोड़े जब तक कि उसको बहुत जरूरत न हो। वह उस चेस्टनट को ले कर तीसरी बहिन के पास चली।

वहॉ भी उस परी की तीसरी बहिन ने ज़ोज़ा का बहुत प्यार से स्वागत किया। अगली सुबह उसने उसको एक हैज़लनट[133] दिया और कहा कि वह उसको तभी तोड़े जब वह बहुत ज़्यादा मुसीबत में हो।

तब ज़ोज़ा तीनों नट ले कर आगे रास्ते पर बढ़ी। उसने बहुत सारे जंगल और नदियॉ पार कीं। ठीक सात साल बीत जाने के बाद

जब सूरज मुर्गों के आने से जागा और अपने रास्ते पर चलने के लिये अपने घोड़े पर जीन[134] कस रहा था तभी वह गिरती पड़ती लॅगड़ाती सी गोल मैदान में पहुॅची।

---

[132] Chestnut is a kind of nut, people eat it after roasting it. See its picture above.

[133] Hazelnut is also kinf od nut like almond and walnut. See its picture above.

[134] Translated for the word “Saddle”. See its picture above.

वहॉ उसको शहर के बाहर एक फव्वारे के पास ही संगमरमर की एक कब्र दिखायी दी जो क्रिस्टल के ऑसू रो रही थी। उसने उसके ऊपर लटका हुआ एक घड़ा उठाया और उसमें उसने रोना शुरू कर दिया। वह बिना सिर उठाये ही उसमें रोती रही रोती रही रोती रही।

दो दिन बाद उसने देखा कि वह बस अब केवल दो इंच ही खाली रह गया था। पर वह रोते रोते अब तक थक गयी थी सो उसकी ऑख लग गयी और वह एक घंटे तक सोती रही।

इस बीच एक दासी जिसकी टिड्डे जैसी टॉगें थीं वहॉ आयी। उसको उस फव्वारे से पानी भरना था।

वह उस फव्वारे का मतलब जानती थी क्योंकि उस फव्वारे के बारे में तो सभी जानते थे। जब उसने ज़ोज़ा को वहॉ इतनी ज़ोर ज़ोर से रोते देखा कि उसकी ऑखों से पानी की दो धाराऐं बहती देखीं तो वह उसको देखती रही और उस पर नजर रखती रही कि वह घड़ा पूरा न भर जाये ताकि वह उस लड़की को धोखा दे सके।

सो अब जबकि ज़ोज़ा सो रही थी तो उसने मौका पा कर उसके नीचे से घड़ा हटा लिया और उसके ऊपर अपनी ऑखें रख दीं। वह घड़ा चार सेकंड में भर गया।

और जैसे ही वह घड़ा भरा वैसे ही राजकुमार अपनी संगमरमर की कब्र से ज़िन्दा हो कर उठ खड़ा हो गया और उस काली लड़की

को अपने गले से लगा लिया। वह उसे सीधा अपने महल ले गया। महल में बहुत रोशनी की गयी और दावतों का इन्तजाम हुआ। उसने उससे शादी कर ली।

जब ज़ोज़ा की ऑख खुली तो उसने देखा कि उसके ऑसुओं का घड़ा तो वहॉ से गायब है। घड़े के साथ साथ में उसकी आशाऐं भी चली गयी थीं। इसके लिये वह अपनी ऑखों को ही दोष देने लगी।

इस पर वह इतना दुखी हुई कि वह उस मौत के घर से जाने का सोचने लगी। आखिर में उसको लगने लगा कि अब उसको कोई सहायता नहीं मिलेगी सो वह उठी और वहॉ से धीरे धीरे शहर की तरफ चलने लगी।

शहर जा कर जब उसने सुना कि महल में तो दावतें हो रही हैं और राजकुमार किस लड़की से शादी कर रहा है तो उसको अपने साथ किया गया धोखा समझ में आ गया।

उसके मुॅह से निकला "इन दो काली चीज़ों ने मुझे बरबाद कर दिया – एक तो काली नींद और दूसरी यह काली दासी।"

फिर उसने राजकुमार के महल के सामने एक घर लिया जहॉ से वह अपने दिल के भगवान को तो नहीं देख सकती थी पर वह कम से कम उन दीवारों को देख सकती थी जिनके अन्दर जिसके लिये वह तड़प रही थी वह बन्द था।

पर टैडियो ने जो हमेशा उस काली लड़की के चारों तरफ चिमगादड़ की तरह उड़ता रहता था एक बार ज़ोज़ा को देख लिया तो वह उसकी सुन्दरता से बहुत प्रभावित हो गया।

जब दासी को इस बात का पता चला तो वह तो गुस्से भर गयी और कसम खायी कि अगर टैडियो ने खिड़की नहीं छोड़ी तो वह उसके बच्चे को मार देगी जब वह पैदा होगा।

टैडियो जिसको एक वारिस चाहिये था और उसके आने की वह बड़ी उत्सुकता से इन्तजार कर रहा था उसको नाराज नहीं करना चाहता था सो वह ज़ोज़ा की नजरों से दूर हट गया।

अपने इस दर्द की दवा को दूर जाता देख कर ज़ोज़ा की आशाओं पर पानी फिर गया। अब उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे।

और कोई चारा न देख कर उसने परियों की दी हुई भेंटों का इस्तेमाल करने का सोचा। उसने पहली परी का दिया हुआ अखरोट तोड़ दिया। उसमें से एक बौने जैसा गुड्डा निकल पड़ा। वह दुनियॉ भर में सबसे सुन्दर खिलौना था।

जब वह अपनी खिड़की पर बैठी तो उस गुड्डे ने गाना शुरू कर दिया। उसने ऐसी आवाज में गाया कि ऐसा लगता था जैसे कोई चिड़ियों का राजा गा रहा हो।

दासी ने जब यह देखा और सुना तो उसको इतना मोह लिया कि उसने टैडियो को बुलाया और उससे कहा — "मुझे वह छोटा

आदमी ला दो जो उधर सामने गा रहा है नहीं तो मैं जैसे ही तुम्हारा बच्चा जन्मेगा मैं उसे मार दूँगी।"

बेचारे राजकुमार को उसको कहा मानना पड़ा उसने तुरन्त ही ज़ोज़ा से पुछवाया कि क्या वह अपना वह बौना उसको बेचेगी। ज़ोज़ा ने कहा कि वह कोई सामान बेचने वाली नहीं थी पर हॉ वह उसको उसे भेंट में दे सकती थी।

टैडियो ने उसकी बात मान ली क्योंकि वह अपनी पत्नी को खुश रखना चाहता था।

चार दिन बाद ज़ोज़ा ने चेस्टनट तोड़ दिया तो उसमें से एक बहुत सुन्दर मुर्गी अपने **12** चूज़ों के साथ निकल पड़ी। सब सोने के बने थे। उसने उनको खिड़की पर रख दिया। जब दासी ने देखा तो वे उसको बहुत अच्छे लगे। उसने उनको टैडियो को भी दिखाया। उसने टैडियो से उनको लाने के लिये कहा। कहा कि वह उसको वे मुर्गी और उसके चूज़े ला दे।

टैडियो फिर उसके जाल में फॅस गया। उसने उसको खुश करने के फिर से ज़ोज़ा से उनको बेचने के लिये कहा पर ज़ोज़ा ने फिर वही जवाब दिया कि वह कोई सामान बेचने वाली नहीं थी बल्कि अगर वह चाहे तो वह उनको उसे भेंट में दे सकती थी।

अब टैडियो और तो कुछ कर नहीं सकता था सो उसने उनको भेंट की तरह स्वीकार कर लिया।

फिर चार दिन बीत गये। अबकी बार ज़ोज़ा ने हैज़लनट तोड़ दिया तो उसमें से तो एक गुड़िया निकल पड़ी। वह सोना कातती थी। यह तो एक बहुत ही अद्भुत श्य था। उसने उसको भी खिड़की पर रख दिया।

जैसे ही उसने उसे खिड़की पर रखा तो दासी की नजर उस पर गयी। तुरन्त ही उसने टैडियो को बुलाया और उससे कहा कि उसे वह गुड़िया चाहिये। अगर उसने उसे ला कर उसे नहीं दिया तो वह उसके बच्चे को जन्मते ही मार देगी।

टैडियो जो अब तक अपनी घमंडी पत्नी के हाथों शटल की तरह से इधर उधर कूद रहा था हिम्मत नहीं कर पा रहा था कि वह उस गुड़िया के लिये ज़ोज़ा को बुलवा भेजे।

पर फिर अपने बच्चे का ख्याल कर के उसने यह तय किया कि उसका वहॉ खुद का जाना ही अच्छा रहेगा। और फिर ये कहावतें याद कर के कि "अपने आपसे अच्छा कोई और दूत नहीं है।" और "जिस आदमी को अगर मछली खानी है तो उसको उसे उसकी पूँछ से पकड़ना चाहिये।" वह खुद ज़ोज़ा के पास गया और अपनी पत्नी की बेचैनी के लिये उससे माफी मॉगी।

ज़ोज़ा ने जब अपने दुख की वजह को देखा तो उसने अपने आपको रोक लिया और बहुत देर तक उसका माफी मॉगना सुनती रही ताकि उसका प्यार उसकी ऑखों के सामने ज़्यादा देर तक रहे जिसको उस काली दासी ने चुरा लिया था।

आखिर उसने वह गुड़िया उसको दे दी जैसा कि उसने अपनी दूसरी चीज़ों के साथ किया था। पर उसको देने से पहले उसने अपने मन में एक इच्छा की कि जैसे ही वह दासी अपने हाथ में इस गुड़िया को ले तो उसके मन में उससे कहानी सुनने की इच्छा जाग जाये।

जब टैडियो ने गुड़िया हाथ में ली तो उसके दिल में एक ऐसी भावना पैदा हो गयी कि उसने उन सबका बिना एक पैसा दिये हुए ही अपना राज्य और ज़िन्दगी दोनों ही उसको दे दीं।

गुड़िया ले कर वह घर लौट आया और आ कर वह गुड़िया अपनी पत्नी के हाथों में रख दी। तुरन्त ही उसके मन में भी यह इच्छा हुई कि वह उससे कहानियॉ सुने।

उसने फिर अपने पति को बुलाया और कहा कि मुझे कुछ ऐसे कहानी कहने वाले बुलाओ जो मुझे कहानी सुनायें। नहीं तो मैं अपनी बात की पक्की हूँ मैं तुम्हारे बच्चे को मार दूँगी।

उसके इस पागलपन को दूर करने के लिये टैडियो ने तुरन्त ही एक फरमान जारी कर दिया कि बताये गये दिन पर राज्य की सारी स्त्रियॉ महल में इकट्ठी हों।

और उस दिन जब शुक्र तारा सुबह को जगाने के लिये निकलता है और उस रास्ते पर रोशनी बिखेरने के लिये कहता है जिस पर सूरज को जाना होता है राज्य की बहुत सारी स्त्रियॉ महल में इकट्ठी हुईं।

पर टैडियो को लगा कि वह इतनी सारी स्त्रियों को केवल अपनी पत्नी के आनन्द के लिये महल में इकट्ठी नहीं कर सकता सो उसने सोचा कि दस सबसे अच्छी कहानी कहने वालियों और तरीके वाली स्त्रियों को चुना।

ये थीं झाड़ी जैसे बालों वाली ज़ीज़ा, मुड़ी हुई टॉगों वाली सीका, फूली हुई गर्दन वाली मेनेका, लम्बी नाक वाली टौला, कुबड़ी पोपा, दाढ़ी वाली एन्टोनैला, ठिगनी चूला, धुँधला देखने वाली पाओला, गंजी शिवोनमिटैला और चौकोर कन्धों वाली जकोवा।[135]

सबके नाम एक कागज पर लिख लिये गये। दूसरों को वापस भेज दिया गया। वह दासी के साथ अपने सिंहासन की छतरी के नीचे से उठा और दोनों अपने महल के बागीचे में चले गये जहॉ पत्तों वाली शाखाऐं आपस में इतनी गुँथी हुई थीं कि उनमें से हो कर सूरज की रोशनी भी नहीं आ पा रही थी।

वे वहॉ आ कर घनी बेलों से बने हुए एक कमरे में बैठ गये। उसके बीच में एक फव्वारा चल रहा था।

वहॉ टैडियो अपनी हल्की आवाज में बोला — "दुनियॉ में दूसरों के कामों के बारे में जानने से अच्छी बात तो कोई है ही नहीं ओ मेरी प्यारी पत्नी। और बड़े बड़े विचारकों ने कहानियॉ सुनने को सबसे ज़्यादा खुशी पाने वाला साधन माना है।

[135] Bushy-haired Zeza, Bandy-legged Cecca, Wen-necked Meneca, Long-nosed Tolla, Hump-backed Popa, Bearded Antonella, Dumpy Ciulla, Blear-eyed Paola, Bald-headed Civonmetella, and Square-shouldered Jacova.

जब कोई आदमी कोई अच्छी अच्छी बातें सुनता है तो उसके दुख दर्द अपने आप ही दूर हो जाते हैं। परेशान करने वाले विचार उड़न छू हो जाते हैं और आदमी की उम्र बढ़ जाती है।

इसी वजह से तुम देखती हो कि कलाकार अपना काम छोड़ देते हैं, सौदागर लोग अपने घर छोड़ देते हैं, वकील अपने मुकदमे छोड़ देते हैं। दूकान वाले अपनी दूकान बढ़ा देते हैं, लोग नाइयों की दूकान से उनकी कहानियॉ सुनने के लिये बात करने वालों के पास चले जाते है।

इसलिये मैं अपनी पत्नी की इस जिद को केवल माफ करता हूॅ कि उसको वह गुड़िया इतनी अच्छी लगी कि उसने उस गुड़िया को जिद कर के मुझसे मॅगवाया जिसने उसके मन में कहानी सुनने की इच्छा जगायी।

इसलिये मेहरबानी कर के आप लोग यहॉ आयें मेरी इच्छा और राजकुमारी की जिद को पूरा करें। अगले चार पॉच दिनों तक आप में से हर एक यहॉ एक ऐसी कहानी रोज सुनायेगा जो बुढ़ियें अपने बहुत छोटे छोटे बच्चों को सुनाना पसन्द करती हैं।

आप लोग नियमित रूप से यहॉ आयेंगी और अच्छा खाना खाने के बाद एक कहानी सुनायेंगी ताकि समय खुशी से गुजरे।"

यह सुन कर उन सबने हॉ में सिर हिलाया। इस बीच मेज पर खाना लगाया गया और फिर हर एक स्त्री बारी बारी से अपनी कहानी सुनाने लगी।

और इस तरह यह संग्रह उन्हीं **50** कहानियों का संग्रह है जो उन दसों स्त्रियों ने पॉच दिन के अन्दर उस काली दासी को सुनायीं।

Books in History Series

1. **Lone Country of Thirteen Months. 12 articles. 168 p.**
   तेरह महीनों का अकेला देश

2. **Our Great People. 22 people. 164 p.**
   हमारे महान लोग

3. **Beginnings of the Books. 12 books. 148 p.**
   पुस्तकों के आरम्भ की कहानियॉ

4. **Our Great Scientists. 12 scientists. 64 p**
   हमारे महान वैज्ञानिक

5. **One Event Changed the Life. 9 people. 64 p.**
   जिनके एक घटना ने जीवन बदले

6. **Lobo's Ethiopia of 1625.**
   1625 का लोबो का इथियोपिया

7. **Birth of Proverbs. 23 proverbs. 134 p**
   कहावतों का जन्म

8. **Stories of Birbal. 25 stories. 80 p.**
   बीरबल की कहानियॉ

9. **Raja Rasalu. 21 stories. 368 p.**
   राजा रसालू

शीबा की रानी मकेडा, देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
राजा सोलोमन, देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ

Updated in 2022

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
जून **2022**